दीपावली विशेषांक
नवम्बर 2020
मूल्य - 40/-
वर्ष 11
अंक 2
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
मनोकामनापूर्ति साधना
नवग्रह बाधा निवारण सा.
स्वप्नेश्वरी साधना
स्वर्णाकर्षण भैरव प्रयोग

अहं ब्रह्मास्मि
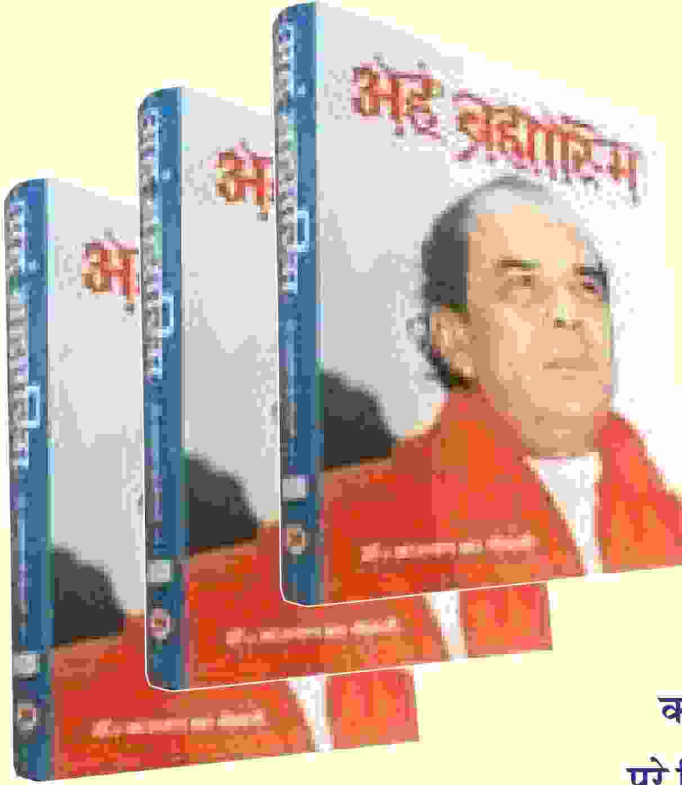
न्यौछावर- 330/-

मनुष्य और पशु में इतना ही अंतर है कि पशु अपने आपको समझने का भाव नहीं रखता, जबकि मनुष्य सद्गुरु की सहायता से पशुत्व से ऊपर उठकर आत्मा की गहराई तक उतर कर, उस विराट सत्ता के दर्शन कर सकता है जिसे ब्रह्म कहा गया है। उस स्थिति तक पहुंच सकता है जिसे 'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं' कहा गया है, उस स्थिति से एकाकार हो सकता है, जिसे 'ब्रह्माण्ड' कहा गया है।

पूरे विश्व में इतनी सहज गति से, इतने जटिल रहस्य को सरल भाषा में स्पष्ट करने वाला यह पहला ग्रंथ है जो संत प्रवर योगीराज तत्ववेत्ता सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की सशक्त लेखनी से उभर कर हमारे सामने प्रस्तुत है 'अहं ब्रह्मास्मि' ग्रन्थ के रूप में।

एक जीवन्त, सशक्त कृति, पशुत्व से ऊपर उठकर मनुष्यत्व तक पहुंचने का सरल सोपान, मल-मूत्र से भरी देह को ब्रह्ममय बना देने की श्रेष्ठ क्रिया, एक अनमोल ग्रन्थ।

यह ग्रन्थ अभी सीमित संख्या में ही प्रिंट हुआ है अत: शीघ्र प्राप्त करने के लिए आप 330 + 70 (डाक खर्च) = 400/- (चार सौ रुपये मात्र) 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' जोधपुर के निम्नलिखित खाते में जमा करा दें और वाट्स अप नं. 8890543002 पर पैसे जमा कराने की रसीद एवं अपना नाम व पूरा पता, पिन कोड नं. के साथ शीघ्र भेजें जिससे आप यह अनमोल ग्रन्थ शीघ्र प्राप्त कर सकें।

खाते का विवरण

- खाते का नाम : नारायण मंत्र साधना विज्ञान
- बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
- खाता संख्या : 31469672061
- IFSC CODE : SBIN0000659

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

मन की प्रत्येक इच्छा पूरी करने हेतु : मनोकामना पूरणी प्र.

बाधा एवं दरिद्रता समाप्ति हेतु : स्वर्णाकर्षण भैरव प्र.

आवासीय बाधाओं से मुक्ति प्राप्ति हेतु : वसुधा लक्ष्मी साधना

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

दीपावली

आयुर्वेद

स्तोत्र

योग
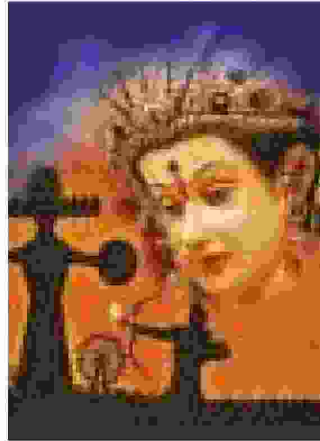
प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता
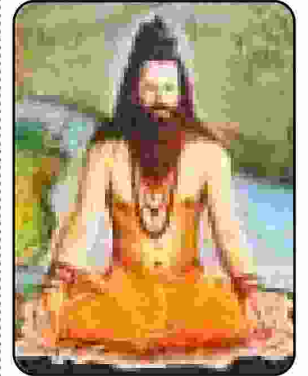
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
दीवान पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड
A-6/1, मायापुरी, फेस-1,
नई दिल्ली-110064
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27354368, 011-27352248

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : **http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org** E-mail : **nmsv@siddhashram.me**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

श्री बीजरूपमपरां जगदैक हेतुं,
ऐश्वर्यभावभरितं निखिलं नमामि।
गं गणपतिं परिमन् सुमुखैकदन्तं,
लाभं शुभं ननु करोतु च दीपमाला।।

'श्री' बीज जिनका मूल स्वरूप है, संसार की एक मात्र जननी, भगवती लक्ष्मी को एवं मंगलमूर्ति एकदन्त 'गं' बीजयुक्त गणपति को तथा समस्त ऐश्वर्य से पूर्ण भगवान निखिल को भावपूर्ण नमन करता हूँ। ये तीनों महाशक्ति इस दीप माला को शुभ तथा लाभ से अविघ्न करें।

परमार्थ ही कीजै

कड़ाके की धूप! उस वर्ष गर्मी कुछ अधिक ही पड़ी थी। बाहर से आया एक यात्री गांव से गुजर रहा था। प्यास से वह व्याकुल था, लेकिन गांव भर में उसे पानी पीने के लिए एक भी कुंआ या तालाब नजर नहीं आया। आगे जाने पर यात्री ने देखा, कि एक पेड़ के नीचे प्याऊ थी। निकट जाने पर यात्री ने देखा, कि एक व्यक्ति वहीं बैठा था, शरीर पर वस्त्र के नाम पर एक धोती भर ही थी। उसने यात्री को जल पिलाया और पेड़ के छाया में दो पल सुस्ता कर तब आगे जाने के लिए कहा।

यात्री ने पूछा–''तुम क्या काम करते हो?''

उसने उत्तर दिया–''हे श्रेष्ठ! मैं तो अनपढ़ घासी हूं, सुबह-शाम घास काटता हूं और उसे बेचकर जो पैसा मिल जाता है, उसी से गुजर-बसर करता हूं। उसी कमाई में थोड़ी-बहुत बचत करके जो जमा पूंजी इकट्ठा की थी, उससे यह प्याऊ बनाई है।'' वह कहता जा रहा था–''मुझे यह देखकर बहुत तकलीफ होती थी, कि गर्मी में लोग प्यास से बेहाल हो पानी ढूंढते थे और पानी पीने के लिए कोई साधन नहीं था। अत: मैंने और मेरे परिवार ने एक समय भोजन कर कुछ धन एकत्र किया और यह प्याऊ बनाई, अब मुझे बहुत शांति महसूस होती है।''

घासी की भोली और नि:स्वार्थ बातें सुनकर यात्री द्रवित हो गया। उसने सोचा, कि जब यह निर्धन घासी जिसके पास सम्पत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं है, वह एक समय भूखे रहकर भी आने-जाने वालों की सुविधा के लिए सोचता है, लोक कल्याण के लिए सोचता है, फिर उसकी अपेक्षा मेरे पास तो काफी सम्पत्ति है, धन है; फिर मैं क्यों नहीं घासी जैसा सोचता हूँ।

यात्री ने एक ठोस निर्णय लिया, कि अब मैं अपना जीवन, धन-सम्पति परमारथ में लगाऊंगा।

यही यात्री आगे चलकर 'भानुभक्त' के नाम से नेपाल देश में बहुत प्रसिद्ध विद्वान हुआ। ज्ञान चेतना जाग्रत होने के लिए एक क्षणांश ही पर्याप्त है, जहां बात सीधे हृदय में बैठ गई, वही जीवन परिवर्तन हो जाता है।
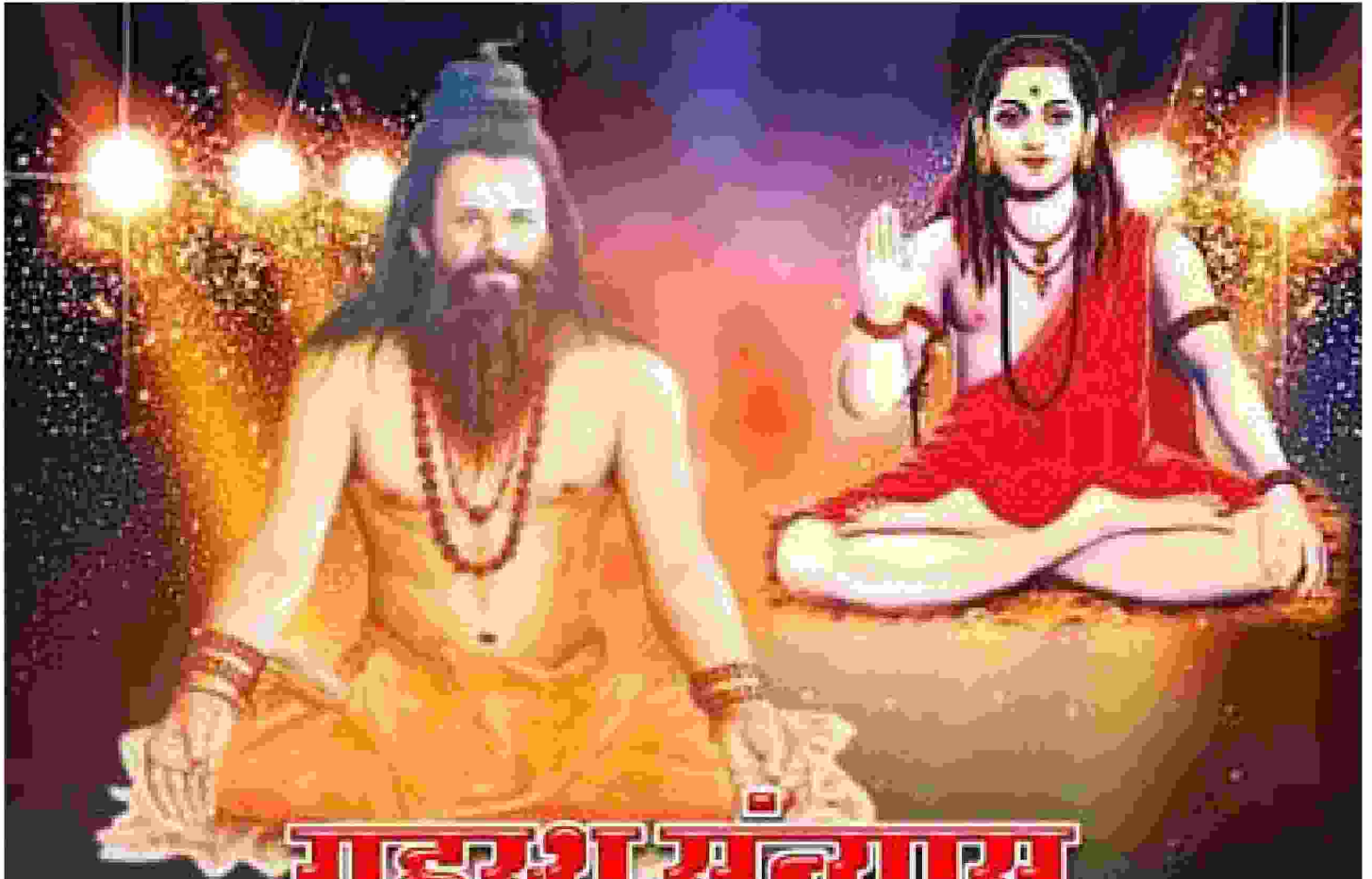
गृहस्थ संन्यास

वैराग्य और संन्यास कोई बाहर की वस्तु नहीं हैं यह तो भीतर से उत्पन्न करने की एक महान क्रिया है जिसे गुरु समझाकर शिष्य को उर्ध्वगति प्रदान करते हैं। संन्यास के संबंध में सद्गुरुदेव के वाणी में ये सरस सारगर्भित अमृत वचन–

ज्ञान च देहं भावतं श्रियं वै अथोदभवा देह
नरं नरांणां मानसं नाहं भवतां श्रियंवै।।

यह भृर्तहरि का श्लोक है, भृर्तहरि के श्लोक मुझे इसलिए प्रिय हैं, क्योंकि उन्होंने जीवन के तीनों अंगों को जी भर कर जीया है, वे तीन अंग हैं–एक राज सम्मान, राज्य वैभव, धन, यश, प्रतिष्ठा और जय-जय जयकार। इन सब को भृर्तहरि ने प्राप्त किया। भृर्तहरि एक राजा था और चक्रवर्ती राजा था। पूरे भू मंडल पर पूरे आर्यावर्त पर उसका शासन था। और उसने जितनी कुशलता के साथ, जितनी श्रेष्ठता के साथ राज्य किया, नीति के साथ, न्याय और धर्म के साथ, वैसा आज तक किसी ने शायद नहीं किया, उससे पहले विक्रमादित्य ने तो किया था मगर उसके बाद कोई शासक ऐसा शासन नहीं कर पाया। उसके शासन में निरंतर उन्नति होती रही, उसने उस राजा के जीवन को भी देखा। उसने उच्चकोटि का वैभव देखा। श्रृंगार देखा और श्रृंगार में भी वह आकंठ डूबा रहा।

जब वह शिकार पर जाता तो किसी भी सुंदर लड़की को देखता तो लाकर अपने रनिवास में डाल देता।

राजा था इसलिए ऐसा कर सकता था और आपको मालूम होना चाहिए कि भृर्तहरि के तीन हजार रानियाँ थीं, तीन हजार से भी अधिक रानियाँ थीं, और प्रत्येक के लिए अलग-अलग महल बनवाए भृर्तहरि ने और उनमें सारी, सुविधाएँ जुटाईं।

फिर ऐसा भी हुआ कि उसकी एक पत्नी थी हेमवती उसके साथ पांच महीने तक महल में ही रहा। बाहर निकला ही नहीं। न राज्य में गया, न दरबार में गया, न मंत्री परिषद को बुलाया न न्याय किया, न लोगों की फरियाद सुनी। महल से बाहर ही नहीं निकला।

फिर ऐसा भी हुआ कि उसकी एक पत्नी थी हेमवती उसके साथ पांच महीने तक महल में ही रहा। बाहर निकला ही नहीं। न राज्य में गया, न दरबार में गया, न मंत्री परिषद को बुलाया न न्याय किया, न लोगों की फरियाद सुनी। महल से बाहर ही नहीं निकला।

जैसे जयपुर का राजा जयसिंह अपनी नई रानी के प्यार में डूब गया और महल से बाहर निकला ही नहीं। बाहर से मंत्री द्वार खटखटाते रहे कि महाराज दो महीने हो गये हैं, अत्याचार हो रहे हैं, लोगों की फरियादें आई हैं, आप बाहर आकर न्याय करें, आखिर न्याय कौन करेगा? तो अंदर से उत्तर आता है मैं कुछ नहीं जानता मैं बाहर नहीं आऊँगा। और कवि बिहारी अकेले में हिम्मत थी कि वह जाकर कुछ कह सके। उसने जाकर दरवाजे पर एक श्लोक पढा-

नहीं पराग, नहीं मधुर मधु
नहीं विकास, यही काल
अलि कलि ही सो बंधयों आगे कौन हवाल।

और जिस जयसिंह ने मंत्रियों की भी बात नहीं सुनी उस बिहारी की बात को सुनकर के एक क्षण में बाहर आया और अपने राज्य कार्य को संभाला।

भर्तहरि तो उससे भी दस गुना ऊँचा निकला कि छः महीने तक अपने महल से नहीं निकला, न सभा बुलाई, बस एक महल से दूसरे महल में चला जाता, दूसरे से तीसरे, तीसरे से पहले–बस तीन महलों में घूमता रहा और उस समय में जो हिंजड़े होते थे तलवार लेकर रानियों के महलों का पहरा देते रहते थे बाकी मर्दों का वहाँ आना निषेध था क्योंकि राजाओं को डर था कि यदि कोई पुरुष पहरा देगा तो शायद कोई रानी बिगड़ जाए, उसके साथ भाग जाए कुछ पता नहीं। इसलिए एक डर रहता था। स्त्रियों में पहरा देने की क्षमता नहीं थी इसलिए हिंजड़े ही पहरा देते थे।

तो भर्तहरि ने राज्य भोग को भी पूर्णता के साथ जिया और उसके बाद उसे एक दिन चोट लगी और चोट भी भयंकर लगी।

स्त्रियाश्च चरित्रं पुरुषं भाग्यं
देवो न जानाति कतो मनुष्यं।

अब तो पुरुष चरित्र भी उससे ज्यादा गिरे हुए होने लगे हैं मगर यह श्लोक निश्चित ही किसी पुरुष ने लिखा है इसलिए स्त्रियों के बारे में ऐसा लिख दिया। अगर कोई स्त्री लिखती तो वह कहती–

पुरुषस्य चरित्रं

मगर चूंकि पुरुषों ने ये सब ग्रंथ लिख दिए हैं इसलिए स्त्रियों के विरुद्ध ऐसी बातें कहीं गई कि–

ढोल, गंवार शुद्र, पशु नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी।

बस ! अब अगर नारी को ठोकने के अधिकारी हैं तो फिर पुरुषों को बेंतें मारने का क्यों नहीं अधिकार है? तुलसीदास को रत्नावली ने इतना दुख दे दिया था, इतनी हालत खराब कर दी थी कि गुस्से में था वह और वह गुस्सा जाकर निकला रामचरित मानस में। और उन्होंने लिख दिया कि ढोल को पीटेंगे तो अधिक आवाज आएगी और पत्नी को पीटें तो वह कंट्रोल में रहेगी। तुलसीदास की यह प्रतिक्रिया थी।

कबीरदास ने कहा कि–

नारी विष की बेलरी
गुरु अमृत की खान।

यह नारी विष की बेल है, जहर की पुड़िया है, कबीरदास ने ऐसा लिखा और इसलिए लिखा क्योंकि उसकी चार बेगमें थीं और चारों की चारों सबसे लड़ाकू स्त्रियाँ थीं। यदि कबीर पानी पीएं तो एक कहती–अच्छा पानी पीकर हमसे लड़ाई करेगा, अच्छा पीले और पीले।

कबीरदास रोटी खाए तो वह कहती हां खाले, ताकत ले ले, जिससे ज्यादा लड़ाई कर सके और नहीं खाए तो कहती–**भूखे मर, बदनाम कर दे मुझे।**

कबीरदासजी दुखी हो गए। इसलिए उन्होंने एक प्रतिक्रिया व्यक्त की दोहे में।

और भर्तहरि को जब ठोकर लगी तो उसने भी प्रतिक्रिया व्यक्त की और उसने वैराग्य ले लिया। वह जिस पत्नी को सबसे ज्यादा प्रेम करता था, जिसके यहाँ छः महीने रहा, राजकार्य भूल गया, उस स्त्री ने उसे इतना अधिक धोखा दिया, इतना विश्वासघात किया जिसकी कोई कल्पना नहीं है। यह लंबी-चौड़ी कहानी है मगर उसका सार यह है कि उसने गुरु के पास जाकर कहा कि मैं वैराग्य चाहता हूँ।

गुरु ने कहा, तुम राजा हो, मैं तुम्हारी प्रजा हूँ, तुम्हारे शासन में

यह नारी विष की बेल है, जहर की पुड़िया है, कबीरदास ने ऐसा लिखा और इसलिए लिखा क्योंकि उसकी चार बेगमे थीं और चारों की चारों सबसे लड़ाकू स्त्रियाँ थीं। यदि कबीर पानी पीएं तो एक कहती–अच्छा पानी पीकर हमसे लड़ाई करेगा, अच्छा पीले और पीले।

मेरा आश्रम है और तुम वैराग्य ले रहे हो तो राज कार्य कौन चलाएगा?

भृर्तहरि ने कहा–मेरे मरने के बाद कौन चलाएगा? और जो मरने के बाद चलाएगा उसे मैं जीवित ही देख लेना चाहता हूँ कि कैसे चलेगा। डूब रहा है, ठीक चल रहा है, नहीं चल रहा है, गतिशील हो रहा है, नहीं हो रहा है, मुझे इसकी चिंता नहीं है, मुझे अपनी चिंता है। क्योंकि मैं भटका हुआ इन्सान हो गया हूँ। मुझे पता नहीं चल रहा कि मैं किस पगडंडी पर चल रहा हूँ मैं मोहग्रस्त हो गया हूँ मैं पत्नी, स्त्री, पुत्र और धन, वैभव, सम्मान, परिवार के बीच ऐसा उलझ गया हूँ कि जिसकी कोई सीमा नहीं है।

ज्यों ज्यों मैं सुलझ कर निकलना चाहता हूँ कि चलो ये चार समस्याएँ निकल गई, अब दो रह गई तब तक छः समस्याएँ और आ जाती हैं। और ज्यों-ज्यों सुलझ कर निकलना चाहता हूँ त्यों-त्यों उलझता ही जाता हूँ। यों तो मैं उलझता ही रहूँगा। ऐसा तो कोई क्षण जीवन में आएगा ही नहीं कि मैं सुलझ कर वैराग्य लूँ क्योंकि वैराग्य लेने के लिए कोई तारीख और तिथि निर्धारित नहीं होती।

और वैराग्य का तात्पर्य यह नहीं कि संन्यासी कपड़े पहनें। वैराग्य का तात्पर्य है कि इस राग-द्वेष से दूर हो जाएं। जो राग-द्वेष से दूर हो जाता है वह वैरागी है। वैराग्य का अर्थ है न किसी से लेना न किसी को देना, कोई कहे तो ठीक जवाब दे देना नहीं तो चुप रह जाना कि कुत्ते भौंकते हैं भौंकने दीजिए। कुत्तों का काम भौंकना है वे तो भौकेंगे। मुझे तो मंथर गति से अपने पथ पर अग्रसर होते रहना है। मुझे अपने लक्ष्य का ध्यान रखना है क्योंकि सब मेरे साथ चलेंगे नहीं। चल ही नहीं सकते संभव ही नहीं है और अगर हम ऐसा समझते हैं तो यह हमारा मोह है और डूबे हुए रहेंगे। मेरे इस प्रवचन के बाद भी क्योंकि इससे पहले पच्चीस हजार गुरु यही बात कह चुके हैं। मैं पहला व्यक्ति नहीं हूँ। इससे पहले पच्चीस हजार गुरु अपने शिष्यों को यह बात कह चुके हैं। इस संसार में कोई तुम्हारा नहीं है, तुम बेकार मोह में ग्रस्त हो, और तुम्हें राग रहित होकर के अपने खुद के रास्ते को चुन कर के उस पर गतिशील होना चाहिए।

मगर उसके बाद भी उनके चित्त पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो मैं समझ रहा हूँ कि मेरे कहने का भी प्रभाव मेरे शिष्यों पर या प्रजा पर नहीं पड़ेगा। फिर भी मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य यह है कि मैं अपनी बात को दृढ़ता के साथ कहता रहूँ।

भृर्तहरि ने तीन शतक संग्रह लिखे–नीति शतक, श्रृंगार शतक और वैराग्य शतक। केवल तीन सौ श्लोक लिखे। यह भी एक अलग कहानी है कि उन्होंने तीन सौ श्लोक क्यों लिखे और इन श्लोकों में क्या विशेषता है।

भृर्तहरि ने एक बहुत अच्छा श्लोक लिखा। उस वैराग्य शतक में उसका नीति शतक भी है जिसमें उसने कहा–

दार्शनियं सृजनै दया परिजनै
राठयं सदा दुर्जनै
प्रीति साधु जनै न्यौं उपजनै।।

यह एक नीति शतक भी लिखा जिसका श्लोक है–

अर्द्ध चन्द्र गतवा सर्वविशेषतायां राशि नस्तामं।
क्रोध भूतो श्रीय तृष्णो मधु मनृत्यों अहं पृष्ठविभते।
संभोग क्लांत क्लातां शिविर्भुज लितां।
तर्जित कर करि तो ज्योत्सनाभिन्नाच।

तुमितय धारम् श्रिलं सार्धम् मंद भाग्य।।

यह श्रृंगार शतक में लिखा है और इससे अच्छा श्रृंगार का कोई श्लोक नहीं है। ऐसा श्लोक फिर लिखा ही नहीं गया, कालीदास भी नहीं लिख सका। अगर उस श्लोक की व्याख्या कर दी जाए तो उसे सुनकर उत्तेजित होकर एकदम से कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाए, चाहे फिर जेल जाना पड़े उसको। यदि उसकी व्याख्या कर दी जाए तो इतना यह सेक्स में डूबा हुआ श्लोक है, भोग में डूबा हुआ श्लोक है, भोगमय श्लोक है। उसी कवि ने, उसी राजा भृर्तहरि ने वैराग्य शतक भी लिखा।

उस वैराग्य शतक में लिखा है कि पुरुष और स्त्री दोनों के प्रति मोह रखना और अपने परिवार के सदस्यों के प्रति मोह रखना सबसे ज्यादा मूर्खता और अज्ञानता है। हम एक नम्बर के मूर्ख हैं इसलिए मोह रखते हैं। भृर्तहरि ने कहा मैं यह अपने अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ, मैंने भोगा है, देखा है, अनुभव किया है, मैंने स्त्री के रूप को भी देखा है, प्रेमिका के रूप को भी देखा है और उसी स्त्री की कुटिलता को भी देखा है जिसके प्रति मैं जान दे रहा था प्राण दे रहा था। मैंने उस परिवार को भी देखा है जिसके लिए दिन-रात दौड़ता था और जब मुझे तकलीफ हुई तो एक भी मेरे पास मंडराया नहीं, आया नहीं। मेरा दु:ख दूर किया नहीं। मुझे सांत्वना दी ही नहीं। वे अपने राग-रंग में डूबे रहे, शराब पीते रहे और घुंघरुओं की आवाज सुनते रहे।

और मैं इस बात का निश्चय कर चुका हूँ, समझ चुका हूँ कि वैराग्य से ऊँची कोई चीज नहीं है क्योंकि–

वैराग्य मेवा भयं।

उसने कहा–

भोगो रोगभयं, कुलेचिदमयं
वित्ते विपालाभयं, मौने विघ्नभयं
बले रिपुभयं, रूपे जरायाभयं
शास्त्रे वादभयं काये, कृतांता भयं
सर्वं वस्तु भयाम् वितं
ध्वनिनां वैराग्य मेवाभयं।।

सब चीजों में भय है, मैं किसी लड़की से बात करूं तो भय है, मैं कोई चीज छिपकर खा लूं तो भय है। वैराग्य में कुछ है ही नहीं, एक कुर्ता है, एक लंगोट है, और क्या है।

और कुर्ता धोती पहन ली तो मेरा कुछ है ही नहीं। पत्नी है तो अपनी जगह है, खुद खाएगी, पीएगी, मौज से रहेगी मान लो, मैं बहुत पीड़ित हूँ भी तो कितनी सेवा करेगी। मैं यहाँ बैठा हूँ, पत्नी वहाँ बैठी है तो फिजीकली कितनी सेवा हो रही है। कल्पना करिए।

मैं खुद का उदाहरण दे रहा हूँ किसी का भी उदाहरण दे सकता हूँ, मगर सत्य यह है कि हम उस मोह में फंसे हैं और फंसे रहेंगे। और वैराग्य की कोई तारीख नहीं होती यह भी सत्य है। यह नहीं है कि पचास साल की उम्र के बाद वैराग्य लेना चाहिए या अस्सी साल की उम्र में वैराग्य लेना चाहिए। बल्कि व्यक्ति जितना विलंब से वैराग्य लेता है, उतना ही वह समय बरबाद करता है। ज्यों ही चेत जाता है त्योंहि वैराग्य ले लेता है। अपना काम करता रहता है, घर में भी रहता है। मगर अपने आप में वह सचेत् रहता है कि जीवन का लक्ष्य यह नहीं है। वह यह जानता है कि मेरे मरने के बाद और मेरे जीवनकाल में भी कोई मुझे याद नहीं करेगा और मैं एक सामान्य

उस वैराग्य शतक में लिखा है कि पुरुष और स्त्री दोनों के प्रति मोह रखना और अपने परिवार के सदस्यों के प्रति मोह रखना सबसे ज्यादा मूर्खता और अज्ञानता है। हम एक नम्बर के मूर्ख हैं इसलिए मोह रखते हैं।

जीवन व्यतीत करके रह जाऊंगा।

क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे सामने वाले मकान में कौन रहता है? तुम इतने सालों से यहाँ रहते हो तुम्हें मालूम है उसका नाम क्या है, उसके बेटे का नाम क्या है, का नाम क्या है?

आप नहीं जानते क्योंकि उस व्यक्ति ने जिंदगी में कुछ किया ही नहीं, कपड़े की एक दुकान खोली चांदनी चौक में और कपड़ा बेचता रहा, एक बेटी, एक बेटा, एक मकान जिसमें आठ कमरे हैं। तीन आदमी उन आठ कमरों में कैसे समाएंगे, बाकी पांच कमरों का क्या होगा। एक ड्राइंग रूप अलग तीन किचन अलग, आठ बाथरूम अलग। यह मकान उसके साथ जाएगा नहीं।

अब उसका नाम क्यों याद नहीं और भृर्तहरि का नाम क्यों याद है? इसलिए कि यह रागयुक्त है और भृर्तहरि वैराग्ययुक्त, भेद बस इतना है। वह राग में पूरी तरह डूबा हुआ है कि अपने बेटे के लिए अपनी पत्नी के लिए कमा लूँ कि मैं यह करूँ, मकान बना दूं, मेरा यश होगा, सम्मान होगा, मेरी प्रतिष्ठा होगी। यह सब कुछ तो होगा मगर जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पाएगा।

राजा भोज एक उच्च कोटि का राजा था, जिसके दरबार में कालीदास जैसे उच्च कोटि के रत्न थे और राजा भोज बहुत बड़ा कवि था, संस्कृत का विद्वान था। उस मय संस्कृत की चलती थी, जैसे आजकल हिन्दी चलती है उस समय संस्कृत थी। महलों में जो झाड़ू लगाती थी उसे भी संस्कृत ही आती थी, भाषा ही उस समय की संस्कृत थी। इसीलिए सारे मंत्र संस्कृत में लिखे गये आज होते तो हिन्दी में लिखे जाते।

एक दिन रात्रि को भोज को नींद नहीं आई, नींद नहीं आए तो अपने कमरे के बाहर दालान था, चांदनी रात थी वहाँ घूम रहा था। उसे नींद आ नहीं रही थी, उसके मन में उलझन थी कि मेरा जीवन क्या है, मैं क्यों जी रहा हूँ? मेरे जीवन का प्रयोजन क्या है, कल का दिन बीता तो मेरी उपलब्धि क्या रही?

कालो यम निर्विदा विपुला च लक्ष्मी

मेरे मरने के बाद भी काल मेरे नाम को खा नहीं सके, मैं ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ। मरने के पाँच हजार साल बाद भी काल मेरे नाम को नहीं खा सके। मुझे तो खा जाए पचास साल बाद, मेरे शरीर की मृत्यु तो हो पर मेरी मृत्यु नहीं हो। इसके लिए क्या करूँ?

उसने सोचा कि मेरे जीवन में क्या नहीं है–धन है, यश है, मान है, पद है, प्रतिष्ठा है, ऐश्वर्य है, पत्नियाँ हैं, राज्य है, असंख्य धन-दौलत है, सुंदर शरीर है, सब-कुछ है। उसने ये सब बात तीन लाइन में लिखी संस्कृत में–

एवं वदै पूर्व सदै तुल्यं
पुत्रान वृति चंद्रमुखि तुल्यं सतैव
यश कीर्ति वदवां वैभव च पूर्तिम।

और चौथी लाइन क्या लिखे उसका मन घूम रहा है, भटक रहा है कि श्लोक तो चार लाइन का होता है। वह बड़ी उलझन में था कि मेरे पास सब कुछ है इतना तो किसी के पास मेरे राज्य में नहीं है। यह उसने तीन लाईनों में लिखा, एक चोर चोरी करने आया था उसी समय और वह वहीं छिपा हुआ था कि राजा नींद ले और मैं चोरी करके भागूं। वहाँ सोने की चीजें थीं तो वह उसको लेकर भागना चाहता था। अब चार बजने को आ गए सुबह चोर ने सोचा कि अब यह नींद लेगा या स्नान करेगा। और मैं पकड़ा गया तो मृत्युदंड! अब

चोर के निकलने का भी कोई रास्ता नहीं क्योंकि सामने राजा भोज भटक रहा था। और वह उस श्लोक को बार-बार बोल रहा था, तीन लाइनें बोल रहा था और अटक रहा था।

चोर से रहा नहीं गया। जब उसने चालीस बार उन तीन लाइनों को दोहराया तो चोर से रहा नहीं गया। अगर कोई नाचने वाला होता है तो ज्योंहि तबले की थाप कोई देता है तो उसके पैर थिरकने लग जाते हैं। वहाँ कोई नहीं नाच रहा होता है लेकिन बैठे-बैठे उसके पैर थिरकने लग जाते हैं।

यदि बहुत अच्छा एक गायन का रसिया होगा या समझने वाला होगा तो गीत चल रहा होगा और उसका सिर झूमते हुए हिलने लग जाएगा। वह बोलेगा नहीं पर मालूम पड़ जाएगा कि गाने वाला अच्छा है या मूर्ख है।

वह चोर भी संस्कृत जानता था उससे रहा नहीं गया। तो राजा ने वापस तीन लाइनें बोलीं मेरे पास धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, पत्नी, पुत्र, वैभव, यौवन, सौंदर्य सब कुछ है तो चोर से रहा नहीं गया और उसने कहा-

सम्मीलने नयनयोवनै किंचित अस्ति।

कि राजा भोज जिस दिन तेरी आँख बंद हो जाएगी उस दिन कुछ नहीं रहेगा, तुम्हारे पास। यह सब कुछ बेकार चला जाएगा और राजा भोज चौंका। उसने कहा कि श्लोक पूरा हो गया मगर यह आवाज कहाँ से आई लाइन तो बिल्कुल सही है कि जिस दिन मेरी मृत्यु हो जाएगी उस दिन ये रानियां, ये धन, ये दौलत कहाँ जायेंगे? कौन संभालेगा? क्या उपयोगिता है उसकी। फिर मरने के बाद कुछ नहीं है उसके पास।

राजा भोज जिस दिन तेरी आँख बंद हो जाएगी उस दिन कुछ नहीं रहेगा, तुम्हारे पास। यह सब कुछ बेकार चला जाएगा और राजा भोज चौंका। उसने कहा कि श्लोक पूरा हो गया मगर यह आवाज कहाँ से आई लाइन तो बिल्कुल सही है कि जिस दिन मेरी मृत्यु हो जाएगी उस दिन ये रानियां, ये धन, ये दौलत कहाँ जायेंगे? कौन संभालेगा? क्या उपयोगिता है उसकी। फिर मरने के बाद कुछ नहीं है उसके पास।

राजा ने कहा तुम कौन हो? बाहर निकलो। चोर बोला मैं चोर हूँ आप क्षमादान करो, तो निकलूं, नहीं तो आपकी खिड़की से कूदता हूँ।

भोज ने कहा मैं क्षमादान देता हूं तू बाहर आ जा।

भोज ने कहा-तुम चोर हो, चोरी करने आए हो और तुमने श्लोक बोला?

चोर ने कहा-मुझसे रहा नहीं गया। आप दो घंटे से परेशान हो रहे थे। तो मैं रह नहीं पाया और जो बात मेरे माइंड में थी वह कह दी। मेरी मजबूरी है कि मैं चोरी करता हूँ मगर आज मेरी आँख खुल गई। आपने जो तीन लाइनें बोली उनसे मेरी आँख खुल गई और मैंने जो एक लाइन बोली उससे आपकी आँख खुल गई। हम दोनों बराबर हो गए अब।

तो राजा ने उसको सम्मान दिया। यह उदाहरण मैंने आपके सामने, भोज का और भृर्तहरि का इसलिए दिया कि **जीवन का एकक्षण चाहे बीस साल की अवस्था में आ जाए, चाहे पांच साल की अवस्था में आ जाए, प्रहलाद को पांच साल की अवस्था में आ गया और पाराशर को अस्सी साल की उम्र में भी नहीं आया। वैराग्य की भावना का कोई निश्चित समय नहीं है कि इसी समय आएगी।** वैराग्य की भावना का अर्थ है अपने कर्तव्य करते हुए राग रहित हो जाना और सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि उस रास्ते पर गतिशील होना जिस रास्ते पर काल मेरे नाम को नहीं खा सके।

मैंने उदाहरण दिया कि सामने इतना बड़ा मकान है और हमें नाम ही मालूम नहीं है कि क्या नाम है। मुझे भी मालूम नहीं। एक बार उस घर की बहू मिलने को आई थी कि मेरी सास बहुत लड़ाई-झगड़ा करती है मैं क्या करूं। तब मैंने उससे नाम पूछा तो नाम बताया। मैंने

पूछा कि घर में कौन है तो उसने कहा मैं हूँ, पति है और सास है। मैंने कहा कि कमरे कितने हैं तो बोली नौ।

मैंने सोचा कि तीन व्यक्ति और नौ कमरे। बाकी छः कमरों को किराये पर चढ़ा दें तो कम से कम काम तो आए लोगों के। मगर एक तृष्णा है।

जिस दिन जीवन का मूल उद्देश्य शिष्य समझ जाएगा उस दिन मेरी वाणी सार्थक हो जाएगी। उस दिन मैं समझ लूंगा कि शायद मैं एक क्षण सफलता की ओर अग्रसर हुआ। हम कार्य करें मगर इस उद्देश्य को सामने रखते हुए करें कि मुझे उस लेवल तक पहुँचना है और दो दिन में नहीं पहुँच सकते आप तुम्हारे पाप तुम्हारे बीच में आएंगे और बीस बार आएंगे और तुम्हें सही रास्ते से हटाएंगे और पाप कई रूपों में आएंगे। पाप कोई व्यक्ति तो है नहीं। जो सामने आकर खड़ा हो जाएगा कि मैं पाप हूँ। ऐसे तो आएगा नहीं। वह तो अंदर की वृत्ति है जो तुम्हें भ्रमित करेगी। तुम्हारे और गुरु के बीच मतभेद पैदा करेंगे। तुम्हें गलत गाइड करेंगे। तुम्हें मोहांध करेंगे। कई रूपों में वह पाप आएंगे। जब ऐसा कोई विचार आए तो मन में समझ लेना चाहिए कि यह पाप है जो तुझे गुमराह कर रहा है। जो मेरे और गुरु के बीच डिफरेंस पैदा कर रहा है। यह पाप मुझे गलत रास्ते की तरफ आकर्षित करने के लिए मुझे मूर्ख बना रहा है। पाप किसी भी रूप में सामने आता है। जरूर आता है और चौबीस घंटे में एक बार जरूर आता है। क्योंकि वह तो परिक्रमा करता रहता है। एक बार आएगा ही। आपके सामने भी आएगा, मेरे सामने भी आएगा। उस समय फिसले तो फिसल गए।
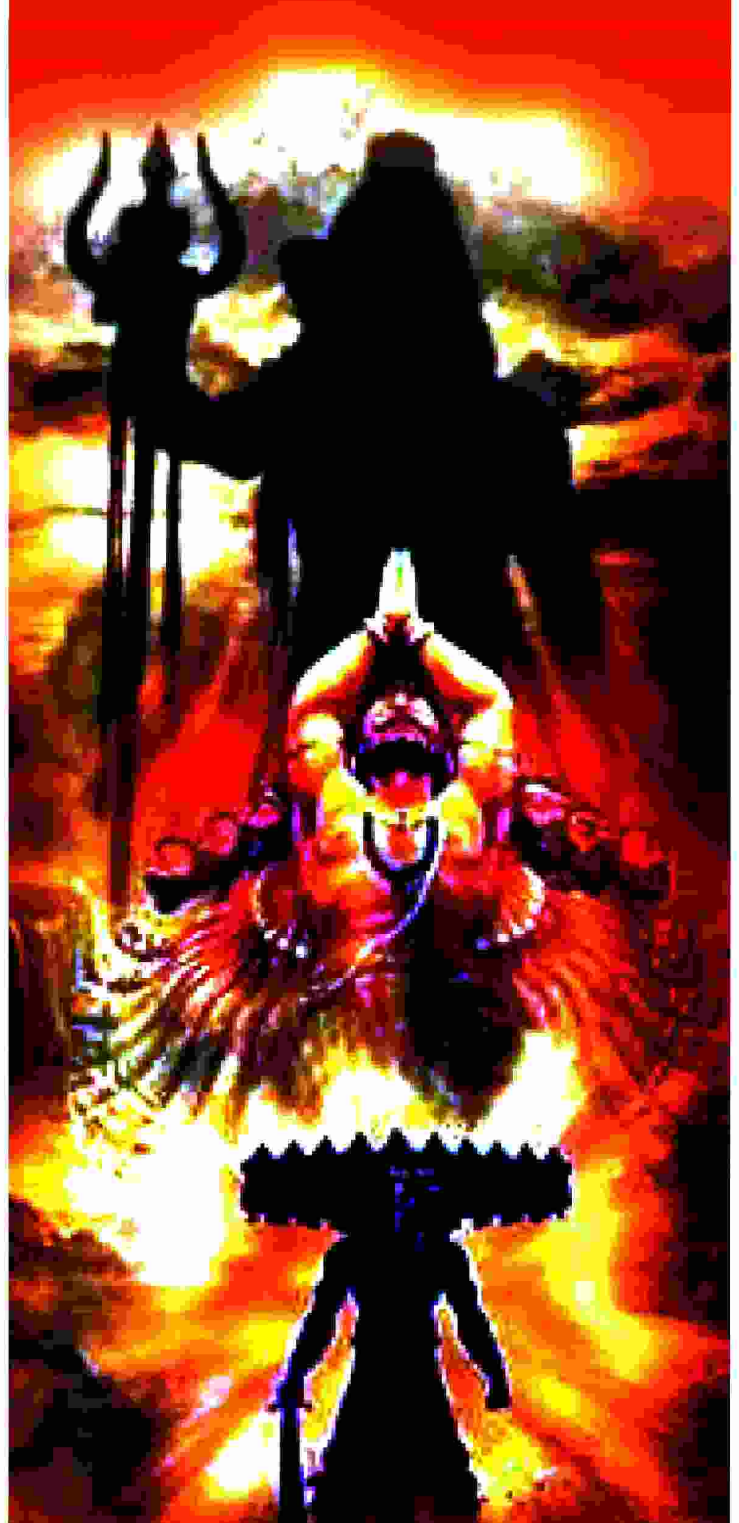
इसलिए त्याग जीवन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जीवन की सर्वोत्तम पूंजी है, उपलब्धि है। इस शरीर से त्याग, परिवार से भी त्याग, संसार से भी त्याग। मगर त्याग का यहाँ अर्थ है संसार से अलग रहते हुए भी संसार में रहना, जैसे कि जल में कमल रहता है। कमल के ऊपर एक पानी की बूंद डाल दो तो ढुलक जाएगी, उस पर रहेगी ही नहीं दस साल भी कमल पानी में रहे तो उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। ठीक उसी प्रकार संसार में रहने की क्रिया और निरंतर कर्मशील रहने की क्रिया त्याग है। निरंतर कर्मशील रहना है, इतना कि शरीर शिथिल हो कर कह दे कि अब मुझे लेट जाना है।

इस बात का निश्चय कर ले कि मुझे अपने जीवन का निर्माण करना है और अगर आपको नहीं मालूम तो गुरु से पूछ ले कि मेरा लक्ष्य क्या है, मैं क्या करूँ? मुझे अपने जीवन का निर्माण करना है, मैं क्या करूं? मुझे आप एक रास्ता बताइए। पांच सौ रास्ते हैं। गुरु आरती में बोलते हैं।

नाना पंथ जगत में निज निज गुण गावें
सब का सार बताकर गुरु मार्ग लावें।

इस जगत में सैकड़ों पंथ हैं, अब मैं कौन से पंथ का आसरा लूं, मैं साधना करूं सेवा करूं, करूं क्या? कौन से पंथ को अपनाऊं और सभी पंथ अपने आप में अच्छे कहलाते हैं। मुझे किस रास्ते को अपनाना है। अगर गुरु सही है तो आपको सही रास्ते पर अग्रसर कर देगा। वही गतिशील करेगा, सही रास्ता बताएगा और वही गुरु सही है जो सही रास्ता बताए। जो अपने स्वार्थ के लिए शिष्य को भ्रमित करता है वह घोर नरक का भागीदार होता है और जो गुरु की निंदा सुनता है या बोलता है वह भी घोर नरक का वासी होता है। मैं दोनों के लिए कह रहा हूँ, मैं गुरु के लिए भी कह रहा हूँ केवल शिष्यों के लिए नहीं कह रहा हूँ। जो अपने शिष्य को गतिशील नहीं करता,

अपने स्वार्थ के लिए उसका प्रयोग करता है वह गुरु नहीं है। वह घोर नरक का वासी होता है। वह गुरु भी मरेगा ही एक दिन तो क्यों उस पाप की गठरी को अपने सिर पर बाँधें? वह शिष्य को गतिशील करे। यह उसका कर्त्तव्य है।

यह सारा एक भ्रम है जिस भ्रम में हम जिंदा है कि मेरी माँ है मेरा बहुत ध्यान रखेगी, मेरा बाप है मेरा बहुत काम करेगा, मेरी पत्नी है बहुत आज्ञाकारी रहेगी, मेरी सेवा करेगी, यह मेरा पति है मेरी रक्षा करेगा, यह पुरुष है यह बहुत सुंदर है, यह स्त्री है बहुत रूपवती है, यह परिवार है यह मेरे काम आएगा, यह धन है मेरे लिए उपयोगी होगा।

जिनके पास धन नहीं है क्या वे भूखे मर रहे हैं? जिनके पास करोड़ रुपये हैं क्या वे अस्सी रोटियाँ एक दिन में खा रहे हैं?

चार रोटी तो कहीं भी मिल जाएगी, सड़क के किनारे बैठे हों तो भी मिल जाएगी। आप वृंदावन चले जाएं तो दो सौ लोग ऐसे हैं जो अरबपति हैं और घरबार छोड़ कर दरवाजे पर बैठे हैं, गोविन्द देव जी के मंदिर के बाहर। वहाँ सबसे बड़ा मंदिर गोविंद देव जी का है और हाथ में कटोरा लिए हुए छोटा सा। उसे मधुकरी वृत्ति कहते हैं कि जो बाहर आता है तो कोई प्रसाद डाल देता है, कोई पूरी डाल देता है, कोई सब्जी डाल देता है। वह खा लेते हैं और गोविन्द जी का भजन करते हैं। बेटे आते हैं कारों में कि पिता जी हमारी बदनामी हो रही है, आप क्या कर रहे हो, यह क्या उचित है, हम आपके लिए यहाँ मकान बनवा देते हैं।

वे कहते हैं तुम अपने घर रहो। वे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। वे जानते हैं कि हमारा नाम करोड़पति होने से नहीं होगा। वह तो इस प्रकार के जीवन से पूर्ण हो पाएगा। वह एहसास करता है कि मेरे जीवन में एक संतोष है, मेरे जीवन में सुख है, मेरे जीवन में पूर्णता है, मैं पूर्णता की ओर अग्रसर हो रहा हूँ क्योंकि गुरु ने मुझे यह सलाह दी है।

मैं भी आपको यही सलाह दे रहा हूँ। शरीर इसलिए है कि हम निरंतर इससे कार्य करते रहें। मन इसलिए कि बराबर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहें। भावना इसलिए है कि हम अपने जीवन को उस ऊँचाई पर पहुँचा दें कि मृत्यु हमें स्पर्श नहीं कर सके।

जीवन का सार आज समझेंगे, पचास साल बाद समझेंगे, मृत्यु के दो मिनट पहले समझेंगे, मगर एक दिन समझेंगे जरूर। कोई बीस परसेंट लोग ही होते हैं जो मुस्कुराते हुए मरते हैं, अस्सी परसेंट लोग होते हैं जो तड़पते हैं, बेचैन होते हैं, चार महीने बीमार रहते हैं और अंत में मुंह बंद हो जाता है, गला रुंध जाता है, आँखों में से आँसू बहते रहते हैं और बोल नहीं पाते ऐसे मरता हुआ व्यक्ति सोचता है कि मैंने जीवन में पाप किए हैं अधर्म किया है, उसको लूटा है, उससे खसोटा है, उसको धोखा दिया है, अब मैं कुछ नहीं कर सकता। ये जो यहाँ बेटे खड़े हैं ये पैसा पाने के लिए खड़े हैं, सेवा के लिए नहीं खड़े हैं। ये सोच रहे हैं कि यह मरे और हम दाह क्रिया करें।

और वह बोल नहीं पाता और बेटे कहते हैं किन-किन से पैसा लेना बाकी है, मुझे बता दीजिए आपको सब याद है, गड़ा हुआ धन कहाँ है, हमें बता दीजिए। डॉक्टर साहब ऐसा इंजेक्शन लगाइए कि एक बार बोल दे कि धन कहाँ-कहाँ गड़ा हुआ। वो डायरी कहाँ है जिसमें पैसों के बारे में लिखा है। बेटे ऐसा बोल रहे हैं और वह रो रहा है कि मैंने कुछ नहीं किया। आँसू उसके इसलिए बह रहे हैं और बेटे

केवल वचन से मुझे गुरु कहें या राम राम कहें उसे कुछ नहीं हो सकता। आप मन, वचन और कर्म से पूर्ण त्यागमय बनेंगे, महल में रहते हुए भी तब कुछ हो पाएगा। परंतु यह बहुत कठिन है। महल में रहते हुए त्यागमय रहना बहुत कठिन है। अपने आप को सही रास्ते पर अग्रसर करना बहुत कठिन है। क्योंकि हर व्यक्ति भ्रमित करेगा आपको। वो पाप बनकर आपके सामने खड़ा होगा। उस समय आप स्थिर रहेंगे, दृढ़तापूर्वक खड़े रहेंगे, निश्चय कर लेंगे कि मुझे यह करना है, इस पार या उस पार हो जाना है तभी आप जीवन में सही रास्ते पर बढ पाएंगे।

सोच रहे हैं कि हमारी याद में रो रहा है। पत्नी सोच रही है कितना प्यार करता है, आँसू बहा रहा है।
अरे, वो खुद इसलिए रो रहा है बेचारा
कि जिंदगी में कुछ नहीं किया।

मनसा वाचा कर्मणा

केवल वचन से मुझे गुरु कहें या राम राम कहें उसे कुछ नहीं हो सकता। आप मन, वचन और कर्म से पूर्ण त्यागमय बनेंगे, महल में रहते हुए भी तब कुछ हो पाएगा। परंतु यह बहुत कठिन है। महल में रहते हुए त्यागमय रहना बहुत कठिन है। अपने आप को सही रास्ते पर अग्रसर करना बहुत कठिन है। क्योंकि हर व्यक्ति भ्रमित करेगा आपको। वो पाप बनकर आपके सामने खड़ा होगा। उस समय आप स्थिर रहेंगे, दृढ़तापूर्वक खड़े रहेंगे, निश्चय कर लेंगे कि मुझे यह करना है, इस पार या उस पार हो जाना है तभी आप जीवन में सही रास्ते पर बढ पाएंगे।

ऐसी भावना कि आवश्यकता है कि मेरा क्या बिगड़ेगा, नुकसान क्या होगा या तो कंगाल हो आऊंगा तो हो जाऊंगा या पूर्णता प्राप्त कर लूंगा। अब मानसरोवर में नाव डाल दी है तो या तो मानसरोवर पार हो जाऊंगा या डूब जाऊंगा। मृत्यु तो एक दिन होनी ही है, हो जाएगी। बीच में होनी होगी तो हो जाएगी। मगर खेवनहार सही है तो सब सही है फिर। इसलिए निर्भय होकर बढ़ना पड़ेगा।

आप जो भी करें निर्भय होकर करिए। कोई आपकी निंदा करता है तो गाली देने की जरूरत नहीं है आप समझ लीजिए पाप है हमारा जो कि मुझे इसने गाली दी है। कोई आपको भ्रमित करता है तो समझ ली जिए कि यह महापाप है जो मेरे सामने खड़े होकर मुझे भ्रमित करने की कोशिश कर रहा है।

भ्रम कहते हैं उस जाल को भ्रम कहते हैं उस तूफान के चक्रवात को, अब उस समय आप कितने सतर्क हैं, कितने सावधान हैं आपके जीवन का क्या लक्ष्य है, क्या आप अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं इस पर निर्भर करता है कि आप दृढ़ रह पाएंगे या नहीं।

बढ़ें आप इस रास्ते पर और गुरु तुम्हारे हाथ में है, कोई मेरा नाम नहीं है गुरु मेरे भी गुरु हैं, मैं भी उनके चरणों में बैठने का इच्छुक रहता हूँ और बैठता हूँ। मेरे लिए वो सबसे ज्यादा सुखदायक क्षण होते हैं चाहे पांच मिनट हो, चाहे पंद्रह मिनट हो।

जीवन की इच्छा नहीं है मेरी। मेरी इच्छा यह है कि मैं कुछ करूं कोई ग्रंथ लिखूं। अपने जीवन के जो अनुभव है, जो साधनाएँ हैं, वो तो अंदर ही रह जाएंगी, लकड़ियों के साथ जल जाएंगी, उनको कैसे कागजों पर उतारूं। जीवन का लक्ष्य क्या है, मैं उसके लिए प्रयत्नशील हूँ, मगर वातावरण मुझे मिले तब ऐसा कर पाऊंगा। ऐसी स्थिति बने तब मेरे जीवन का लक्ष्य पूरा हो पाएगा कि वह ज्ञान कागजों पर उतरे और इस पृथ्वी पर जीवित रहें। रामायण जीवित है, रामचरित मानस जीवित है, भृर्तहरि का नीति शतक जीवित है क्योंकि उनका नाम हमें मालूम है। इसलिए ऐसा है क्योंकि उन्होंने त्याग किया था राजपाट छोड़ दिया। सिद्धार्थ ने छोड़ दिया तो बुद्ध कहलाए। महावीर ने छोड़ दिया, ईसामसीह ने छोड़ दिया, राजा भोज ने छोड़ दिया, राम ने छोड़ दिया, कृष्ण ने छोड़ दिया।

ये सब राजा थे राजपाट छोड़कर संन्यासी बने थे। जिनके पास है वह छोड़ सकता है। अब किसी के पास दो रुपये हैं नहीं और कहें हमने छोड़ दिया बच्चे अब कुछ नहीं रखेंगे, पांच रुपये भी जेब में

नहीं रखेंगे।

अब उसके पास हैं ही नहीं तो छोड़ेगा कहाँ से?

लोग कहते हैं कि आप गंगा किनारे आए तो छोड़िए, तो आप कहते हैं कि अच्छा क्रोंच बीज खाना छोड़ देंगे। अब क्रोंच बीज बनता ही नहीं, बस जम्मू के आसपास बनता है तो क्रोंच बीज छोड़ने से कुछ फायदा नहीं। अब छोड़ना है तो मिठाई छोड़ो, जलेबी छोड़ो। नहीं क्रोंच बीज छोड़ देंगे।

अब वहां भी आप चालाकी बरत रहे हैं। आदमी चालाक है और चालाकी ही बरतता है। अगर मिठाई खाना छोड़ देगा। तो मुश्किल हो जाएगी तो क्रोंच बीज छोड़ देते हैं। अब वह पंडित बेचारा क्या कहे।

यह त्याग नहीं यह छल है अपने आप से जीवन को समझने की जरूरत है, जीवन को सेवा में लगाने की जरूरत है। निरंतर जीवन में क्रियाशील होने की जरूरत है और जो लक्ष्य निश्चित कर लिया उसे प्राप्त करने की जरूरत है। चाहे चौबीस घंटे एक टांग पर खड़ा रहना पड़े, एक बार निश्चय कर लिया तो कर लिया। देखा जाएगा। उसके बाद मां-बाप, भाई-बहन कुछ नहीं कर सकते। समाज आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह मेरा अनुभव है।

मैं एक रास्ते पर चला वो समाज मेरा कुछ बिगाड़ नहीं पाया, मैंने कोई अच्छा काम किया तो समाज ने मुझे कोई यश सम्मान देकर ऊंचा नहीं उठाया, यह मेरा उदाहरण है। कोई समाज किसी को ऊंचा नहीं उठाता है, कोई परिवार किसी को ऊंचा नहीं उठाता है।

मैं आपको एक आसन सिखाता हूँ, आप बेहोश होकर देखिए कि लोग क्या कहते हैं। हाय हाय करेंगे और फिर कहेंगे इसे जल्दी जलाओ, फूर्ति करो, इसको उठाओ। अब तुम्हारा बेटा है उसे रखो, बर्फ की सिल्लियाँ लगाओ। नहीं वे कहते हैं उठाओ इसे, जलाओ जल्दी। आप सोचिए कितना मोह! एक दिन आप ऐसे बेहोश होकर देखिए तो सही। बेहोश ऐसे कि आपकी श्वास और धड़कन बंद हो। शवासन आपको आना चाहिए। आप करके देखिए।

विक्रमादित्य ने ऐसा किया था। उसके महल में सोने का खंबा था और उसे शवासन आता था। एक दिन गुरु ने कहा कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारी नहीं है। उसने कहा—मेरी पत्नी तो मेरे बिना पानी भी नहीं पीती। जब मैं दोपहर को राजकार्य निबटाकर महल में जाता हूँ तो वह रोती है, आँखों से आँसू बहते हैं कि आप इतनी देर से आए, मैं भूखी-प्यासी हूँ, चलो खाना खालें। वह मुझे खाना परोसती है और पंखा झलती है। वह मेरे बिना नहीं रह सकती।

गुरु ने कहा—तुम मूर्ख हो! तुम मोहांध हो।

उसने कहा—मैं मोहांध कहा हूं, मैं तो देख रहा हूँ। आपकी पत्नी है नहीं इसलिए मुझे मोहांध कह रहे हैं। मेरी पत्नी है इसलिए मुझे मालूम है मुझे कितना प्यार करती है।

गुरु ने कहा—मैं तुम्हें शवासन सिखाता हूँ, जिसमें हृदय गति ठहर जाती है, नाड़ी बंद हो जातती है और जिंदा रहता है आदमी। ऐसा नहीं कि आँख बंद कर पड़ा हो। वह शवासन नहीं कहलाता। अगर डॉक्टर से जांच कराओ तो वह कहेगा कि यह मर गया।

और आप मरे नहीं होंगे आप सुन रहे होंगे सब कुछ क्योंकि आप उस प्राणमय, उस ऊर्जामय कोष में चले गए, मगर आप सुन सकेंगे सब और आप वापस आ सकेंगे।

गुरु ने कहा–तुम सही कह रहे हो, पर में भी सही कह रहा हूँ, में उस गुरुओं की लहर से आया हुआ हूँ जो आज से पांच हजार साल पहले से धारा आ रही है वह धारा मेरे अंदर है, वह ज्ञान की धारा मेरे अंदर है खाली गुरु नहीं हूँ। तुम्हारे महल के ठीक बीच में एक सोने को खंबा है जिस पर महल की छत टिकी हुई है। आप उस पर लपेट करके उलटे होकर शवासन में चले जाना।

तो गुरु ने कहा–मैं तुम्हें शवासन सिखाता हूँ और महीनेभर बाद तुम को बता दूँगा कि सत्य क्या है।

विक्रमादित्य ने कहा–महीने भर बाद क्या दस महीने बाद भी कुछ नहीं सिद्ध होगा क्योंकि मैं अपनी पत्नी को जानता हूँ। वह पानी भी नहीं पीती। जब मैं जाता हूं तो पहले मुझे खानाखिलाती है तब पानी पीती है और फिर रोटी का कौर खाती है।

गुरु ने कहा–तुम सही कह रहे हो, पर मैं भी सही कह रहा हूँ, मैं उस गुरुओं की लहर से आया हुआ हूँ जो आज से पांच हजार साल पहले से धारा आ रही है वह धारा मेरे अंदर है, वह ज्ञान की धारा मेरे अंदर है खाली गुरु नहीं हूँ। तुम्हारे महल के ठीक बीच में एक सोने को खंबा है जिस पर महल की छत टिकी हुई है। आप उस पर लपेट करके उलटे होकर शवासन में चले जाना।

विक्रमादित्य ने कहा–उससे क्या होगा?

तुम बस पंद्रह-बीस मिनट शवासन में लेटे रहना।

विक्रमादित्य ने कहा–उससे लाभ।

गुरु ने कहा–लाभ तो बाद में पता पड़ेगा न। तुम बस इतना ही करना।

विक्रमादित्य ने कहा–आप मुझे शवासन सिखा दो, मैं कर लूंगा।

गुरु ने शवासन सिखा दिया तो विक्रमादित्य सोने के खंबे पर पांव की अंकुड़ी देकर के धड़ाम से पड़ गया।

पत्नी चिल्लाई क्या हुआ, क्या हुआ?

वैद्य आया, उसने नाड़ी देखी,

अब नाड़ी तो है ही नहीं। उसने कहा–राजा साहब तो चले गए।

हाहाकार मच गया कि राजा साहब मर गए। रानियाँ चीखने लगीं, रोने लगीं, आधे घंटे तक हल्ला मचा रहा।

और मरते ही आदमी अकड़ जाता है। मरते ही पांच मिनट में अकड़ जाता है। जिस भी स्थिति में हो शरीर, लेटा हुआ या बैठा हुआ वह अकड़ जाता है। जो संन्यासी होते हैं, वे पालती मारकर प्राण त्याग करते हैं। हम तो लेटे-लेटे जाते हैं उनकी पालथी में मृत्यु होती है। कोई मरता है तो कहते हैं इसे नीचे लिटा दो और वैरागी साधु को लिटाते नहीं है। मरने से पहले पालथी लगा लेते हैं और जैसा होता है वैसे ही मर जाता है।

तो मरते ही व्यक्ति अकड़ जाता है, आप उसे खींचे भी अगर जोर से तो उसे खींच नहीं सकते, दस आदमी भी खींचे तो खींच नहीं सकते। मरते वक्त पांव टेढ़ा है तो मरने के कुछ समय बाद आप कितना ही खींचो सीधा कर ही नहीं सकते आप। कुत्ते की पूंछ सीधी कर ही नहीं सकते आप। आप दस साल तक कुत्ते की पूंछ को लकड़ी से बांध कर रखिए और खोलेंगे तो वैसी ही टेढ़ी। दस साल के बाद भी सीधी हो ही नहीं सकती।

तो विक्रमादित्य खंबे पर बांध कर लेट गया और शवासन में चला गया।

अब आधा घंटा हो गया, तो लोगों ने कहा इसके पैर तो खोलो। अब चार आदमी जुटे लेकिन पैर अकड़े हुए बिल्कुल खंबे के चारों तरफ पैर खुले ही नहीं। तो किसी ने सुझाव दिया–जल्दी करो, खंबे को काट दो और पैर निकाल दो।

रानी ने कहा–नहीं-नहीं खंबे को नहीं काटो, दिमाग खराब है क्या? महल गिर जाएगा और सारी छत गिर जाएगी। अब मरे हुए
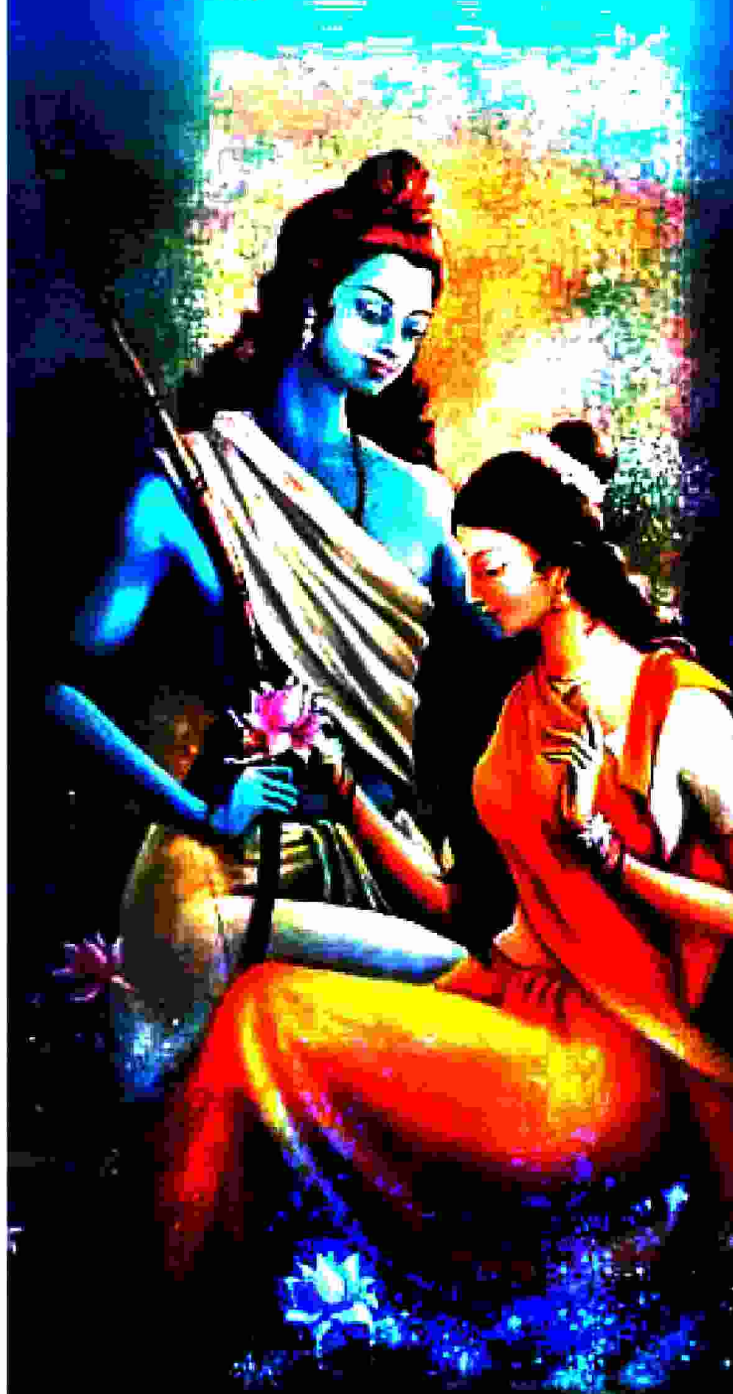
आदमी को क्या फर्क पड़ता है, इनके पैर ही काट दो। खंबे को क्यों काट रहे हो।

वह रानी जो एक मिनट भी उसके बिना जिंदा नहीं रह सकती वह कह रही है इसके पैरों को काट दो और विक्रमादित्य पड़ा-पड़ा सुन रहा है।

लोगों ने कहा–राजा साहब के पैर कैसे काटें ये तो राजा साहब हैं। मरे हुए आदमी के टुकड़ों को कैसे जलाएंगे, लोग क्या कहेंगे और खंबा तो फिर से बना देंगे। अभी टेक लगा देंगे लकड़ी की और फिर वापस दूसरा खंबा सोने का बना देंगे। आपके यहाँ सोने की कमी नहीं है महारानी जी। पैर काटने का क्या मतलब हुआ।

पत्नी ने कहा–नहीं-नहीं खंबे को नहीं काटना है मैं आज्ञा दे रही हूं। राजा मर गया तो अब अधिपति मैं ही हूँ, अब मैं सम्राट हूँ। इसलिए मैं आज्ञा दे रही हूँ कि खंबा नहीं कटेगा, पैर काट लो।

अब रानी की आज्ञा माननी पड़ेगी, तो लाए वे तलवार, राजा ने सोचा अब तो पैर काट ही देंगे, अब मैं अगर नहीं जागा तो गए मेरे पैर।

तो वह उठकर खड़ा हो गया।

अरे राजा साहब जीवित हो गए, राजा साहब जीवित हो गए।

लेकिन राजा उठे, अपना गमछा डाला कंधे पर और सीधा संन्यास की ओर रवाना हो गए।

उसने कहा कि जिस पत्नी को इतना प्यार करता था, उसके लिए दीवाना था जो मेरी दीवानी होने का नाटक कर रही थी, वह केवल नाटक था वह प्यार था कहाँ। एक खंबे के लिए मेरे पैर काटने के लिए तैयार हो गई वह मेरी कहाँ से होगी।

आपका कोई नहीं है, मेरा भी कोई नहीं है। न पत्नी, न पुत्र है, न बंधु है, न बांधव है, न सखा है, न मित्र है यह गारंटी है। अकेला आया हूँ और जब आया था तो पहने हुए कुछ नहीं था, बिल्कुल नंगा था और जब मरूंगा, लेटूंगा चिता पर तब भी नंगा ही होऊंगा। नंगा ही जलाएंगे। एक कुर्ता क्या रुमाल भी पास में नहीं रखेंगे। तो जैसा आया वैसा का वैसा मुझे जाना है फिर बीस कपड़ों का मुझे क्या करना है?

इसलिए जीवन में मन, वचन और कर्म से पवित्र होते हुए गुरु से पूछ करके अपना लक्ष्य निर्धारित करते हुए गतिशील होने की क्रिया को मनुष्यता कहते हैं, देवत्व कहते हैं, पूर्णत्व कहते हैं।

और जब तक वह पूर्णता प्राप्त नहीं होती तब तक जीवन व्यर्थ है, अधूरा है, इस जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है, इस जीवन की कोई सफलता नहीं है, यह जीवन एक पशु के जीवन के समान है और पशु के समान जीवन बिताना मनुष्य जीवन की हीनता है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि जीवन को सभी दृष्टियों से परिपूर्ण होना चाहिए।

अब प्रश्न उठता है परिपूर्णता का तात्पर्य क्या है?

परिपूर्णता का तात्पर्य शास्त्रों में यह बताया गया है कि केवल गुरु के समीप होने, गुरु के अंदर प्रवेश करने और गुरु के अंदर एकाकार होने की क्रिया को ही पूर्णता कहते हैं।

जल में कुंभ कुंभ में जल है
बाहर भीतर पानी फूटा कुंभ जल जल ही समाना
यह तथ्य कहा ज्ञानी।

ज्ञानियों ने यही तथ्य कहा है कि गुरु और शिष्य में अंतर केवल एक माया की दीवार है, माया है तुम्हारी पत्नी, तुम्हारा पति, तुम्हारा पुत्र, बंधु-बांधव, सखा, स्वजन लोभ, मोह, लालच, क्रांध अंहकार और ज्योंहि माया की जो रेखा है इसे गुरु तोड़ता है तो दोनों एककार हो जाते हैं।

मैंने आपको समझया कि ये सब पाप हैं जो तुम्हारे समाने आते हैं और जो गुरु से मिलने नहीं देते और जब तक ये पाप समाप्त नहीं हो जाएंगे तब तक तुम जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकते। जिस दिन यह बीच की दीवार टूट जाएगी तो फूटा कुंभ जल जल ही समाना तो गुरु शिष्य में और शिष्य गुरु में समा जाएगा और अपने आप में वह पूर्णता प्राप्त हो जाएगी जिसे शास्त्रों में पूर्णमद: पूर्णमिदं कहा गया है।

यह परिवार एक ढोंग है, एक ढकोसला है यह स्त्री, यह पति, पत्नी, पुत्र केवल स्वार्थमय संबंध हैं और जितना इन स्वार्थमय संबंधों से आप परे रहेंगे इतना ही आप गुरुतत्व के नजदीक, एक ज्ञान के नजदीक, एक चेतना के नजदीक, एक पूर्णता के नजदीक पहुँचेंगे।

वाल्मीकी अपने आपमें एक बहुत बड़ा डाकू था और रोज हत्याएँ करता या लोगों को लूटता या स्त्रियों के गहने छीन लेता था और घर जाकर पत्नी को गहने देता, धन देता और पत्नी बहुत प्रसन्न होती। माँ को स्वादिष्ट भोजन देता तो मां प्रसन्न होती और उसने समझ रखा था कि यही जीवन का सत्य है। मगर एक दिन घूमते-घामते नारद उधर से गुजरे, दोपहर हो गई थी, कोई राहगीर मिला ही नहीं था, तो डाकू वाल्मीकी ने उस नारद को पकड़ लिया। नारद ने कहा तुम मुझे क्यों पकड़ रहे हो, तुम डाकू हो, तुम मुझे क्यों पकड़ रहे हो, मेरे पास एक वीणा है जिसमें नारायण, नारायण की ध्वनि करता रहता हूँ। न धन है, न दौलत है–मेरे पास कुछ है ही नहीं।

उसने कहा–नहीं आज का दिन खाली जा रहा है, यह वीणा ही दे दे, यह वीणा बेच कर पांच दस रुपये कमा ही लूंगा।

नारद ने कहा–तुम यह सब किस लिए कर रहे हो।

उसने कहा–यह अपने परिवार के लिए कर रहा हूँ।

नारद ने कहा–कौन सा परिवार, कैसा परिवार? क्या वह परिवार तुम्हारे साथ चलेगा।

उसने कहा–निश्चित रूप से चलेगा, पत्नी बिना मेरे एक क्षण भी रह नहीं रह सकती, मैं दस मिनट लेट पहुँचता हूँ तो माँ की आँखों में आँसू बहने लग जाते हैं। बेटे इंतजार करते रहते हैं और ये सभी मुझे प्राणों से प्रिय हैं और मुझे बहुत प्यार करते हैं। इसलिए जो तुम कह रहे हो साधु की यह परिवार क्या है और क्या संबंध है, तुम झूठे हो, यह तुम्हारा मिथ्या कथन है।

नारद ने कहा कि घर जाकर पूछ कर आ जाओ कि वे सब तुम्हारे हैं।

उसने कहा–नहीं मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं। हो सकता है, तुम भाग जाओ।

नारद ने कहा–तुम मेरी वीणा ले लो और मुझे पेड़ से बांध दो। मगर घर जाकर पूछ कर आ जाओ कि तुम जिन के प्रति आसक्त हो क्या वे सब तुम्हारे हैं?

वाल्मीकी ने नारद को पेड़ से बांध दिया और घर गया, माँ से पूछा, पत्नी से पूछा और सबने यह कहा कि तुम्हारे कर्म तुम अपने आप करो। तुम्हारा हमारे प्रति जो कर्तव्य है उसे तो निभाना है।

किस प्रकार से करते हो? इससे हमें कोई तात्पर्य नहीं हैं। आगे की कथा आप जानते हो कि किस प्रकार वाल्मीकी को अपने परिवार से मानसिक आघात प्राप्त हुआ। उसको बड़ा दुख हुआ। वह वापस आया और नारद को पेड़ से खोल लिया। उसने कहा कि आज मेरी आँखें खुल गई कि न पत्नी होती है, न माँ होती है, न बेटा होता है, परिवार का कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ नहीं होता। अगर तुम पापमय, छलमय संपत्ति एकत्रित करते हो तो वह तुम्हारा ही पाप है और उस पाप का फल तुम्हें ही भोगना पड़ेगा, यह ज्ञान मुझे आज हो गया प्रत्यक्ष घर जाकर पूछ करके और मैं तुम्हें अपना गुरु मानता हूँ अब मुझे क्या करना है?

नारद ने कहा–तुम्हें आज से यह छलमय धन एकत्र करने की क्रिया छोड़ देनी चाहिए और केवल राम का नाम उच्चारण करना चाहिए और इसके अलावा कोई शब्द उच्चारण करना ही नहीं है कोई इच्छा से तुम्हें रोटी दे दे तो खा लेनी है क्योंकि वे पत्नी और माँ और पुत्र है ही नहीं, ये केवल माया है, और तुम माया से ग्रस्त थे आज पहली बार माया से बाहर निकले हो।

वाल्मीकी डाकू नारद के चरणों में गिर गया और निरंतर राम-राम कहते रहे और एक दिन वही डाकू वाल्मीकी उच्च कोटि का महाकवि बना जिसने रामायण जैसे ग्रन्थ की रचना की और ऋषि तुल्य कहलाया।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन का सार पत्नी, पति, यश, मान, वैभव, प्रतिष्ठा नहीं। जीवन की श्रेष्ठता तो इसमें है कि आप क्या है और किस प्रकार से आप गतिशील हैं, किस प्रकार से आप कार्य कर रहे हैं, किस प्रकार की आपकी संतोष वृत्ति है, किस प्रकार से आप कम से कम सामग्री में जीवन-यापन करते हो, किस प्रकार से तुम अपने जीवन को गतिशील करते हो और क्या तुम्हारे पास गुरु है, क्या गुरु तुम्हें कुमार्ग से सुमार्ग पर गतिशील करने में सक्षम है, क्या तुम्हें सही रास्ता दिखाने में सफल है?

और यदि है तो कसकर गुरु के चरणों को पकड़ लेना चाहिए और हाथ जोड़कर, आँखों में आँसू भरकर निवेदन करते हुए कहना चाहिए कि प्रभु गुरुदेव मैं सही रास्ते पर हूँ या गलत रास्ते पर हूँ यह आप ज्यादा जानते हैं। आप मुझे बताइए कि मेरे लिए कौन सा रास्ता श्रेयस्कर है। किस रास्ते पर चलूँ? मैं भ्रमित हूँ। मैं परिवार में मोहग्रस्त हो गया हूँ, मैं धन के पीछे दीवाना हो गया हूँ, मैं अंधा हो गया हूँ। मैं चाहते हुए भी इन से हट नहीं पा रहा हूँ। आप मुझे ज्ञान दीजिए रास्ता दीजिए मुझे बताइए कि जीवन में पूर्णता कैसे प्राप्त करूं और गुरु तुम्हें रास्ता बताएगा, एक चेतना देगा, एक प्रज्ञा देगा, एक दीक्षा देगा, तुम्हारे अंत:करण की शुद्धि करेगा, तुम्हें अंदर से पूर्णता देने का प्रयास करेगा और निरंतर तुम्हें गतिशील करता रहेगा। ठीक कबीर के शब्दों मे–

भीतर भीतर सहज के, बाहर बाहर चोट,
गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।

गुरु तो कुम्हार की तरह है और शिष्य मिट्टी का लौंदा है उस कुम्हार को, उस गुरु को मालूम है उस मिट्टी के लौंदे को क्या बनाना है। घड़ा बनाना है। सुराही बनाना है, दीपक बनाना है या क्या बनाना है।

गुरु तुम्हें दीपक बनाएगा तो तुम रोशनी फैलाकर अंधकार को मिटा सकोगे वह तुम्हें सुराही या घड़ा बनाएगा तो तुम लोगों को ठंडा पानी पिला सकोगे, तुम्हें सही ढंग से गतिशील कर सकेगा और वह व्यक्तित्व प्राप्त होने की क्रिया आवश्यक है और गुरु का हाथ अंदर बराबर होता है कि मेरा शिष्य टूटे नहीं, बिखरे नहीं और बाहर बराबर चोट पहुँचाता रहता है इसलिए कि यह निर्मल बने, चैतन्य बने, शुद्ध बने। इसके लिए गुरु उसकी आलोचना करेगा, उसको डांटेगा। उसको फटकारेगा, उसको सन्मार्ग पर लाने की कोशिश करेगा, कोशिश उसकी यही रहेगी कि किसी भी प्रकार से यह सफल हो, वह अपने आपमें पूर्णता प्राप्त करे, वह अपने जीवन में उच्चता प्राप्त करे, श्रेष्ठता प्राप्त करे। गुरु का केवल यही एक कर्तव्य है। और शिष्य का भी एक ही कर्तव्य है कि अपने आप को पूर्णत: गुरु के चरणों में समर्पित कर दे, अपने पास कुछ न रखे।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णाद पूर्णमुद्च्यते।

यह युक्ति तभी सार्थक हो सकेगी जब शिष्य के मन में यह आएगा कि गुरु सही है, जब उसके मन में आएगा कि–त्वदीयं वस्तु गोविंद, तुभ्यमेव समर्पयेत।

जब ऐसी भावना उसके मन में आएगी, तो शिष्य निश्चय ही पूर्णता प्राप्त करेगा और मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ कि आप सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करें और पूर्ण हों।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णाद पूर्णमदुच्यते पूर्णस्य पूर्ण मादाय
पूर्ण मेवा व शिष्यते। हरि ॐ तत्सत्।

सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

हनुमान सिद्धि साधना पैकेट

यह सत्य है, कि जीवन सीधा-सादा नहीं है, जीवन में सैंकड़ों परेशानियां हैं, संकट हैं, सैकड़ों अड़चनें हैं, पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार हैं, वें जो हमें ऊंचा उठता देखकर पीठ पीछे से सैंकड़ों प्रकार के षड्यंत्र तैयार कर लेते हैं और हमारा सारा जीवन विषाद, तनाव, बाधाओं, अड़चनों और परेशानियों से जूझते हुए व्यतीत होने लगता है...और हम जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते, और वह यदि नहीं कर पाते तो जीवन एक साधारण जीवन बन करके रह जाता है। फिर किस प्रकार इस जीवन में तेजस्विता, उत्साह, प्रफुल्लता और जोश आए? कौन सा ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दिखा सकें कि एक सामान्य परिवार में उत्पन्न होकर भी बहुत कुछ कर सकते हैं - यह बहुत कुछ कर देने की क्षमता हनुमान सिद्धि के माध्यम से संभव है।

विधि

साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर 'हनुमान सिद्धि यंत्र' स्थापित करें एवं स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के ही आसन पर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठें। सामने तेल का दीपक जलायें एवं गुड़ का भोग (घी में सान कर) लगायें तथा मूंगे की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें।

ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा

इस प्रकार नित्य प्रति रात्रि में ही (दस बजे के बाद) 11 दिन तक करें। प्रतिदिन जो भोग लगाएं रात में वहीं रहने दें एवं दूसरे दिन प्रात: यह भोग हनुमान के भक्तों में वितरित कर दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। यह अनुष्ठान 11 दिनों का है। बारहवें दिन यंत्र को किसी हनुमान मंदिर में दक्षिणा सहित अर्पित कर दें। साधना काल में साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करें। माला जल में विसर्जित कर दें।

405/-

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

ऐश्वर्य महालक्ष्मी पूजन मुहूर्त एवं आरती

दीपावली का पर्व 'पूर्ण विजय का पर्व' है। इसका तात्पर्य है दरिद्रता, अभावों, कष्टों, परेशानियों और दु:ख-दैन्यता पर विजय। यह एक ऐसा पर्व है, जिसे पूरे देश में पूरे हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है। इसे पूरे विश्व के अनेक देशों में अलग-अलग रूपों में मनाते हैं। धन की देवी महालक्ष्मी को इस विशेष मुहूर्त में प्रसन्न कर अपने घर में स्थापित किया जा सकता है और अपनी दरिद्रता को समाप्त किया जा सकता है, जिसके लिये एक विशेष मांत्रोक्त विधान की आवश्यकता होती है। पूज्य गुरुदेव की कृपा से वह मान्त्रोक्त विधान पूर्ण रूप से अक्टूबर 2020 के अंक में प्रकाशित किया गया है एवं इस पूजन से सम्बन्धित सभी सामग्री एक पैकेट के रूप में तैयार की गई है, जिसे आप हमारे जोधपुर कार्यालय से फोन करके प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में सौभाग्य के क्षण बार-बार नहीं आते। अतः आप सब इस दीपावली पर पत्रिका में प्रकाशित अटूट धन प्रदायक ऐश्वर्य महालक्ष्मी पूजन इस विशिष्ट मुहूर्त पर अवश्य सम्पन्न करें-

आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निस दिन सेवत, हर विष्णु धाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम जग माता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

दुर्गा रूप निरंजनि सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भव निधि की त्राता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

जिस घर में तुम रहती, तहं सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

महालक्षक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द रामाता, पाप उतर जाता।।
ॐ जय लक्ष्मी माता...

दीपावली 14.11.2020

शहर	वृषभ लग्न मुहूर्त	सिंह लग्न मुहूर्त
जोधपुर	शाम 5.49-7.46	रात्रि 12.19-2.33
दिल्ली	शाम 5.28-7.24	रात्रि 11.59-2.16
मुम्बई	शाम 6.01-8.01	रात्रि 11.58-2.35
कोलकत्ता	शाम 4.54-6.52	रात्रि 11.21-1.33
चेन्नई	शाम 5.41-7.43	रात्रि 12.04-2.07
चण्डीगढ़	शाम 5.26-7.21	रात्रि 11.58-2.17
लखनऊ	शाम 5.17-7.13	रात्रि 11.46-2.02
देहरादून	शाम 5.22-7.17	रात्रि 11.53-2.12
पटना	शाम 5.02-6.59	रात्रि 11.31-1.45
जमशेदपुर	शाम 5.02-7.01	रात्रि 11.30-1.41
रांची	शाम 5.05-7.03	रात्रि 11.33-1.45
गंगटोक (सिक्किम)	शाम 4.45-6.41	रात्रि 11.15-1.31
गुवाहटी	शाम 4.35-6.31	रात्रि 11.04-1.18
गोरखपुर	शाम 5.07-7.03	रात्रि 11.37-1.52
वाराणसी	शाम 5.11-7.08	रात्रि 11.40-1.54
भुवनेश्वर	शाम 5.08-7.07	रात्रि 11.34-1.43
रायपुर	शाम 5.24-7.22	रात्रि 11.50-2.00
इन्दौर	शाम 5.44-7.42	रात्रि 12.11-2.23
नागपुर	शाम 5.33-7.32	रात्रि 12.00-2.10
अहमदाबाद	शाम 5.57-7.55	रात्रि 12.24-2.36
हैदराबाद	शाम 5.42-7.42	रात्रि 12.07-2.13
बैंगलोर	शाम 5.52-7.54	रात्रि 12.15-2.18
जम्मू	शाम 5.30-7.23	रात्रि 12.03-2.25
जयपुर	शाम 5.37-7.33	रात्रि 12.07-2.22
काठमाण्डू (नेपाल)	शाम 5.13-7.09	रात्रि 11.43-1.59
पोखरा (नेपाल)	शाम 5.17-7.13	रात्रि 11.47-2.04
विराटनगर (नेपाल)	शाम 5.07-7.04	रात्रि 11.36-1.51

अभिष्ट सिद्धि दिवस • 11.12.2020

यह दिन साधना के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण है,

जब प्रत्येक साधक यथा संभव साधना कर आने वाले वर्ष को अनुकूल बनाता है।

मनोकामना पूरणी प्रयोग

पुराने अंकों से हमें एक अत्यंत गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग प्राप्त हुआ है, जिसे सिद्ध करने पर आश्चर्य जनक सफलता मिली है, इस साधना के सम्पन्न करने पर साधक के मन में जो भी इच्छा होती है, वह निश्चय ही पूरी हो जाती है और उसे यह देख कर आश्चर्य चकित रह जाना पड़ता है कि बहुत थोड़े से समय में ही साधना सिद्ध होते होते उसका काम हो जाता है, मेरी राय में जो उच्चकोटि की साधनाएं नहीं कर सकते हों, उसे यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना सामग्री

इसमें कोई विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं है, महत्वपूर्ण है कि आपके पास सर्वमनोकामना मंत्रों से सिद्ध 'मनोकामनापूर्ति यंत्र' होना चाहिए, यह अत्यंत दुर्लभ है, परंतु हम आपको इस विशिष्ट अवसर पर इस प्रकार का सिद्ध दुर्लभ यंत्र भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं।

साधना प्रयोग

11.12.2020 को प्रातः उठकर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुँह कर बैठ जाए और सामने गुरु चित्र एवं भगवती दुर्गा का चित्र स्थापित कर दें, फिर एक पात्र में 'मनोकामनापूर्ति यंत्र' (धारण) रख कर उसे जल से स्नान करा कर, पोंछकर अलग पात्र में स्थापित कर दें, उस पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प चढ़ावे, घी का दीपक व अगरबत्ती लगा दें और निम्न स्तोत्र मंत्र का 21 बार पाठ करें।

स्तोत्र मंत्र का पाठ करने से पूर्व और पाठ करने के बाद हाथ में जल लेकर इच्छा प्रगट करे कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

इसे 11.12.20 से 17.12.20 तक करें, एक समय भोजन करें, भूमि शयन करें, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, मंत्र जप से पूर्व प्रति दिन सद्गुरुदेव का सामान्य पूजन कर 8 माला गुरु मंत्र जप कर लें।

मंत्र स्तोत्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौ हं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा। नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधु-मर्दिनि! नमः कैटभ-हारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि। नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुर घातिनि। जाग्रतं हिं महादेवि! जप सिद्धिं कुरुष्व मे। ऐंकारी सृष्टि-रूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिके। क्लींकारी काम-रूपिण्यै बीज-रूपे! नमोऽस्तुते। चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वर-दायिनी। विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्र रूपिणि। धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी। क्रां क्रीं क्रूं कालिके देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु। हुं हुङ्कार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे! भवान्यै ते नमो नमः। अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं। धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु-कुरु स्वाहा। पां पीं पूं पार्वति! पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा। सां सीं सूं सप्तशती-देव्या मंत्रसिद्धिं कुरुष्व मे। इदं तु कुंजिका-स्तोत्र मंत्र जागर्ति-हेतवे, अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती! यस्तु कुंजिकया देवि! हीनां सप्तशतीं पठेत्, न तस्य जायते सिद्धिऽरण्ये रोदनं यथा।

17.12.2020 सिद्धेश्वरी दिवस को 21 बार पाठ कर फिर किसी गरीब या ब्राह्मण को घर पर बुलावे उसे भोजन करावे और यथोचित वस्त्र दक्षिणा आदि दें और यह 'मनोकामना पूरणी यंत्र' अपने गले में धारण कर लें या बाँह पर बांध लें अथवा उसे पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

ऐसा करने से साधना सम्पन्न होते होते साधक की मनोकामना पूर्ण होते हुए देखी गयी है। वास्तव में ही यह एक दुर्लभ और अद्वितीय प्रयोग है।

साधना सामग्री- 600/-

गुरु पादूका पूजन दिवस - 16.12.20

शास्त्रों और वेद पुराणों ने सद्गुरु की महिमा ऋषियों की वाणी में जिस रूप में गाई है, वह अपने आप में शाश्वत ही नहीं वरन् हर भूले भटके मानव को सतत दिव्य प्रेरणा देते हुए, पूर्णता और दिव्यता प्रदान करती रही है।

चाहे सतगुरु काल रहा हो अथवा द्वापर, त्रेता अथवा आज का कलियुग, गुरु का अपना एक विशिष्ट स्थान समाज ने हर कार्य में स्वीकारा है, उसे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का वाला एक अजस् स्त्रोत के रूप में प्रतिपादित किया है और यदि दर्शन और चिन्तन के अगाध सागर में डुबकी लगाई जाय तो सत्य रूपी यही मोती प्राप्त होता है।

असतो मा सद्गमय

असत्य से सत्य की ओर शिष्य सदा चलना चाहता है, हर मानव की एक अभिष्ट धारणा रही है कि वह गुरु से प्रार्थना करते हुए उसके चरणों का आशीर्वाद ले कर 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का वरदान प्राप्त करें, निश्चय ही गुरु संसार में अलौकिक व्यक्तित्व है, जो इस दिशा में मानव मात्र का सही मार्गदर्शन कर सकता है मुनि वशिष्ठ तपः पूत विश्वामित्र, कणाद आदि से ले कर अन्य सभी योगी, ऋषि मुनि चाहे वो रामकृष्ण रहे हो अथवा भगवतपाद शंकराचार्य, चाहे गुरु विरजानन्द हो या स्वामी विवेकानन्द सभी ने एक ही अलख जगाई है, मानव अज्ञान की नींद से आंख खोल परमतत्व ब्रह्म से साक्षात्कार करता हुआ जीवन में मुक्ति बोध प्राप्त कर इसी कल्याण मय पथ को गुरु अपनी अमृत वाणी से सदा उजागर करता आया है। खन्दक, खाई, कंटकों, विरोध, आलोचना और मौत की भी गुरु ने कभी परवाह नहीं की है और न ही कभी कहीं कायरता से झुकना जाना। स्पष्ट लक्ष्य उसके सामने होता है। मंजिल को गति देता हुआ वह स्वयं तो मुमुक्ष बनता ही है साथ ही शिष्य का एक कारवां अपने साथ लिये वह जीवन पथ पर मुस्कराता जाता है, इसीलिए शास्त्रों में गुरु के लिए निवेदन है—

ॐ ब्रह्म वे दिवो हः सः दिवो
वे गुरु वै सदा हः

हे गुरुदेव! आप ब्रह्म स्वरूप हैं, सूर्य स्वरूप हैं, विष्णु स्वरूप हैं, आप मुझे आत्मवत् बना लें, यही प्रार्थना है।

आत्मवत् बनने की शिष्य की भावना असत्य से सत्य की खोज के लिए बढ़ते हुए, सार तत्व को प्राप्त करना है, जिसे गुरु ही सरलता से सूर्य हृश्य तेज पुंज बन कर शिष्य के गले उतार सकता है।

गुरु पादाम्बुज कल्प

तमसो मा ज्योतिर्गमय

जैसे ही शिष्य के अन्तर में गुरु उपरोक्त क्रिया सम्पन्न करता है, उसके जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार के बादल स्वत: छटते जाते हैं। एक नयी सिहरन, नयी उमंग, नयी गति, नयी तरंग, जीवन में नाचने लगती है, उसे अहसास होने लगता है, कि यही वह सब कुछ नहीं है, जिसे पाने के लिए उसने अनमोल मानव रत्न, यह देह रूपी मन्दिर प्राप्त किया है। इसमें स्थापित आत्म और ब्रह्म का संयुक्त स्वरूप ही उसका अभीष्ट है, गुरु का 'गु' अक्षर और 'रु' अक्षर निश्चय ही अंधकार, अज्ञान से सत्य एवं आकाश की ओर ले जाने की एक मधुर तांत्रोक्त क्रिया है, इसीलिए कहा गया है-

गुकारस्त्वन्धकारश्च रूकारस्तेज उच्यते।
अज्ञानग्रासक ब्रह्म गुरूरेव न संशय: ।।

गुरु के पावन चरणों में मानव अपने संचित पुण्यों को ले कर जब दीक्षा का सौभाग्य प्राप्त करता है, तो गुरु का मिलन दिव्य वात्सल्य और ममतायुक्त पिता और माता का शिशु से आत्म मिलन जैसा मनोहारी दृश्य पैदा कर देता है जब गुरु शिष्य को सीने से लगा उसे प्यार से दुलारते हुए 'बेटा', का उच्चारण करता है गुरु अपने हाथ के स्पर्श से आँखों के तेज से शिष्य को नया जीवन, नया चिन्तन, नया दर्शन प्रदान करता है। यही तो 'तमसो मां ज्योतिर्गमय' की पादाम्बुज कल्प कहानी है।

मृत्योर्माअमृतंगमय:

मृत्यु मानव मात्र के लिए भयप्रद है, बालक हो अथवा, वृद्ध, स्त्री हो या पुरुष, पशु-पक्षी हो अथवा अन्य जीवधारी सभी इससे बचना चाहते हैं, लेकिन विधि की विडम्बना के आगे कहीं किसी की पार नहीं पड़ती सभी मृत्यु के आगे नत-मस्तक हो युगों-युगों से काल कवलित होते चले आये हैं, आगे भी यह क्रम चलता जा रहा है। यदि किसी ने मृत्यु को जीवन श्रृंगार बनाया है, हंसते हुए गले लगाया है तो ऐसा वह अनूठा व्यक्तित्व गुरु का ही है जिसके आगे मृत्यु अपने आपको ठगा सा महसूस करती है, बौनी हो जाती है, उसके अस्तित्व के सामने, क्योंकि गुरु ने सदा अमरता का पाठ पढ़ा है और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की संजीवनी कला में वह पूर्ण पारंगत है।

गुरु अपने शिष्य को आत्मवत बनाना चाहता है, उसके मृत्यु की ओर बढ़ते हुए कदमों को मोड़ कर उसे अमरता का पाठ पढ़ाता है। वह चाहता है, कि अपने सामने ही वह अपने शिष्य को इस योग्य बना दे, कि वह उसके बाद भी स्वयं पूर्ण तेजस्विता प्राप्त करते हुए, समाज को नयी दिशा दे सके। उसके लक्ष्य और कार्य को आगे गति दे सके शिष्य गुरु के चरणों में बैठ अपने जीवन को संवारता जाता है। गुरु रूपी कामधेनु का ज्ञान रूपी मधुर दुग्धपान करते हुए कल्प वृक्ष सी शीतल छांव रूपी गुरु का वरदानमय आशीर्वाद प्राप्त करते हुए, वह कभी थकता और अघाता नहीं। नित्य नूतन होता हुआ अपने जीवन का पूरा कायाकल्प कर लेता है, और इसे ही गुरु पादाम्बुज कल्प का सही रूप कहा जाता है इसीलिए शिष्य अपने गुरु को हर पल, प्रसन्न रखने का प्रयास करता है क्योंकि उसे मालूम है—

शिवे क्रुद्धे गुरूस्त्राता गुरो क्रुद्धे शिवो न हि।
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन श्रीं गुरुं शरणं व्रजेत् ।।

गुरु प्राणाधार-

गुरु और शिष्य की धड़कने जुदा-जुदा नहीं होती। शिष्य के रोम-रोम में गुरु की छवि समाहित रहती है। आँखों में गुरु तेजस्वी रूप नाचता है। हर पल, हर क्षण, उठते-बैठते, सोते-जागते शिष्य गुरु में खोया रहता है। उसका संसार गुरुमय हो जाता है, उसकी हर क्रिया गुरु को अर्पित होती है। अपना स्वयं का अस्तित्व गलती हुई बर्फ सा गलता जाता है और एक क्षण जीवन में वह आता है कि समस्त क्रियाओं के प्रति उसका कर्त्ता भाव सदा-सदा के लिए तिरोहित हो जाना है। वह गुरु की परछाई सा बन गुरुतुल्य हो जाता है कि और यही क्षण होता है कि गुरु अपने शिष्य को दोनों बाहों में समेट, सीने से लगा सब कुछ समाहित कर देता है। अपने शिष्य में गुरु पाद सेवा और गुरु युगल चरण शिष्य की धरोहर बन साकार हो उठती है। ज्ञान के विराट पुंज में बोध के उन्मुक्त वातायनी क्षणों में जहां व्यापकता ही व्यापकता है। सत्, चित्त, आनन्द का मधुर मिलन शिष्य का व्यापक जीवन बन जाता है और इसीलिए शिष्य गुरु को प्राणाधार मानते हुए अनायास स्वीकार कर लेता है——

गुरो: पाददकं युक्त्वा सो सो क्षयो वट:।
तीर्थराज: प्रयागश्च गुरुमूर्त्ये नमो नम: ।।

कल्प प्रयोग विधि

गुरु पादूका पूजन दिवस 16.12.20 या किसी भी गुरु पुष्य नक्षत्र में प्रात: चार बजे ब्रह्म मुहूर्त में स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त हो कर शुद्ध श्वेत धोती पहन कर सफेद आसन पर उत्तर मुख बैठ कर मन की वाणी और हृदय को पवित्र करने के लिए ॐ प्रणव बीज को तीन बार नाभी से उठाते हुए, लम्बा उच्चारण करें और फिर तीन प्राणायाम सम्पन्न करते हुए अपने सामने प्राणप्रतिष्ठा युक्त हुई, **गुरु चरण पादुका** किसी पात्र में स्वास्तिक बना कर स्थापित कर लें साथ ही **गुरु यंत्र और चित्र** भी सामने रखें और फिर कुंकुम अक्षत पुष्प नेवैद्य एवं अगरबत्ती आदि से पूजन आरती सम्पन्न करें। इसके बाद शुद्ध घी की ज्योति अपने सामने लगायें। शुद्ध दूध, गंगाजल चरणों में चढ़ाते हुए गुरु चिन्तन और गुरु चरणों का ध्यान करें फिर पदमासन अथवा सिद्धासन में बैठ कर अपने शरीर के रोम-रोम में गुरु को समाहित करते हुए उपस्थिति का अहसास करें। मूलाधार से लेकर सहस्रार तक सभी चक्रों में गुरु के ही बिम्ब का ध्यान करें। ज्ञान या तत्त्व मुद्रा में पांच मिनट शान्त चित्त बैठ कर अपने आपको गुरुमय बना लें और फिर नीचे लिखे मंत्र का **स्फटिक माला** से नित्य इक्यावन माला जप 10 दिन तक लगातार करें तो यह गुरु पादाम्बुज कल्प सिद्ध होता है, जिसका फल साधक को जीवन भर स्वत: मिलता रहता है।

मंत्र

।। ॐ परम तत्वाय आत्म चैतन्यै नारायणाय गुरुभ्यो नम: ।।

साधना सामग्री (पारद पादुका + स्फटिक माला)= 570/-

लक्ष्मी कवच

लक्ष्मी के तो विविध स्वरूप है और विविध स्वरूपों में से ही उनके शक्तिमय स्वरूप है

भुवनेश्वरी और कमला

भुवनेश्वरी अपने-आपमें पूर्ण रूप से लक्ष्मी का ही विग्रह मानी गई है जैसा कि उनके नाम से ही प्रकट होता है। जो सम्पूर्ण भुवन की अधीश्वरी हों, वे लक्ष्मी के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकती है? आकस्मिक धन प्राप्ति की बात हो अथवा गृहस्थ जीवन को प्रत्येक रूप से आपूरित करने की, भगवती भुवनेश्वरी ही आधारभूता शक्ति है लक्ष्मी की साक्षात् प्रतीक भी......

कवच केवल एक सुरक्षा आवरण ही नहीं होता।

कवच शरीर के रोम-रोम में शक्ति के समाहितीकरण की प्रक्रिया होती है और यह समाहित होती है बीज मंत्रों के माध्यम से। प्रस्तुत कवच इसी प्रकार भगवती महालक्ष्मी के बीज मंत्रों से युक्त पूर्ण फलदायक और जीवन में निरंतर उन्नति देने वाला कवच है। इस कवच के नियमित पाठ के अभाव में प्रत्येक लक्ष्मी साधना असफल ही है और इसी से योग्य साधक यदि अपने जीवन में समय अभाव के कारण अथवा किसी अन्य बाधा के कारण जब नियमित से लक्ष्मी की साधना नहीं कर पाते तो हीं यंत्र सामने रखकर प्रतिदिन कम से कम इस कवच का एक पाठ अवश्य कर लेते हैं।

त्रैलोक्य मंगल कवच

इस कवच का पाठ दीपावली के दिन या किसी भी बुधवार से प्रारम्भ कर सकते हैं

ह्रीं बीजं शिरः पातु भवनेशी ललाटकम्, ऐं पातु दक्षनेत्रं मे ह्रीं पातु वामलोचनम्।।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी, वामकर्ण सदा पातु ऐं प्राणं पातु मे सदा।।
ह्रीं पातु वदनं देवि ऐं पातु रसनां मम, वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कंठं पातु परात्मिका।।
श्रीं स्कंधौ पातु नियतं ह्रीं भुजो पातु सर्वदा, क्लीं करौ त्रिपुटा पातु त्रिपरैश्वर्यदायनी।।
ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशं सदा अवतु, क्रौं पातु नाभिदोशं मे त्रयक्षरी भुवनेश्वरी।।
सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्ववशंकरी, ह्रीं पातु गुह्य देशं मे नमो भगवती कटिम्।।
माहेश्वरी सदा पातु शंखिनी जानुयुग्मकम्, अन्नपूर्णा सदा पातु स्वाहा पातु पदद्वयम्।।
सप्तदशाक्षरा पायादन्नपूर्णाखिलं वप्रैः तारं माया रमाकामः षोडशार्णा ततः परम्।।
शिरः स्था सर्वदा पातु विशंत्यर्णात्मिकां परा। तारं दुर्ग्रेयुगं रक्षिणीस्वाहेता दशाक्षरा।।
जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुद्रा, मायाबीजादिका चैषां दशार्णा च ततः परा।।
उत्तप्तकांचनाभासा जय दुर्गा वनेऽ वतु, तारं ह्रीं दुं च दुर्गायै वसुवर्णात्मिका परा।।
शंख चक्रधानुर्बाणधरा मां दक्षिणेवतु, महिषामर्दिनी स्वाहा वसुवर्णात्मिका परा।।
नैऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी। माया पद्मावती स्वाहा सप्तपापप्रकीर्तिता
पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदावतु, पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वाहा।।

पाठकगण उपरोक्त कवच का पाठ करने पर स्वयं अनुभव कर सकेंगे कि इसमें कैसी चैतन्यता और प्रभावशाली तत्व समाविष्ट हैं। एक-एक अंग में देवी के एक-एक स्वरूप को धारण करने से शीघ्र की साधक का सारा शरीर निरोग होने के साथ दिव्यता से भरा होने लगता है और साधक नित्य प्रति अपने आपको नूतन पाता हुआ श्रेष्ठता व सफलता की सीढ़ियां चढ़ना आरंभ कर देता है।

भगवती भुवनेश्वरी तो अपने स्वरूप में पूर्ण रूप से अन्नपूर्णा ही है और ऐसा हो ही नहीं सकता कि भगवती भुवनेश्वरी की साधना, आराधना की जाय और गृहस्थ जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह जाए। गृहस्थ के तो जीवन का आधार ही भुवनेश्वरी है। भगवती भुवनेश्वरी ही सही अर्थों में लक्ष्मी का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाली देवी है और भुवनेश्वरी ही इस जगत में करुणा का आधार हैं, अतः ऐसी गुरु स्वरूपा भगवती भुवनेश्वरी की आराधना करने के बाद जीवन में आर्थिक कष्ट रह ही नहीं सकता, यही शास्त्र प्रमाण भी है।

सामग्री-ह्रीं यंत्र-240/-

अलौकिक शक्ति सम्पन्न तिब्बत का रहस्यमय तांत्रिक

पाश्चात्य विचारधारा और पूर्णत: पाश्चात्य ढंग की जीवन-शैली वाले परिवार में जन्म लेने और कम्प्यूटर विज्ञान जैसे आधुनिक विषय में परास्नातक होने पर भी मेरा रूझान यंत्र, मंत्र, योग, अध्यात्म व तंत्रादि में दीवानगी की सीमा तक कैसे पहुंच गया, जब मैं इस विषय में विचार करता हूं, तो मात्र एक ही निष्कर्ष पर पहुंचता हूं, कि यह शायद पूर्वजन्मों कर्मों का फल है। मुझे घुमक्कड़ साधु-सन्तों, तांत्रिकों, सिद्धपुरुषों व उनके पास उपलब्ध अनमोल विद्याओं में बहुत आस्था है और मैं इन दुर्लभ विद्याओं का सम्मान करता हूं। साथ ही बहुत पहले से भोली-भाली जनता का शोषण करने वाले पाखण्डी नकाबपोशों का भंडाफोड़ करना भी मेरा प्रिय शौक रहा है।

मैं अपना सौभाग्य समझता हूं कि मुझे जीवन में अनेक विद्वानों, सिद्धों, साधु-सन्तों, तांत्रिकों व योगियों की संगति का लाभ प्राप्त हुआ और जिसके कारण लुप्त होती जा रही गुप्त व चमत्कारिक साधना-विधियों व मंत्रादि को समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से सामान्यजन तक पहुंचा सका हूं। इस क्रम में श्रेष्ठ पत्रिका 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' का बहुमूल्य योगदान रहा है। असली, सच्ची और वैज्ञानिक सत्यता से युक्त प्रमाणिक विद्याओं की खोजबीन मैंने सदैव सक्रिय रूप से जारी रखी। एक बड़ी संस्था के कम्प्यूटर विभाग में विभागाध्यक्ष के पद पर रहते हुए भी अध्यात्म-अन्वेषण हेतु मैं पहाड़ी वादियों, दूरदराज के घने व सुनसान निकुंजों व बर्फीले प्रदेशों में भटकने का लोभ संवरण कभी नहीं कर सका। वास्तव में यह भटकाव नहीं बल्कि अध्यात्म व तंत्र-मंत्र में कुछ और जााने-सीखने के अमूल्य अवसर सिद्ध हुए हैं। विज्ञ-विद्वानों व चोटी के दिव्य महापुरुषों के दर्शन कहां और कैसे दुर्गम व एकांत स्थानों पर सामान्यत: हो सकते हैं यह तथ्य मुझे अच्छी तरह से ज्ञात होने के कारण मेरे इच्छित स्थान प्राय: वह होते हैं जहां जाने की प्राय: लोग सोच भी नहीं पाते।

अपने इसी व्यवहार के कारण अनेकों बार भारी जोखिम उठाने पड़ते हैं, कभी अक्खड़ साधुओं के क्रोध को झेलना पड़ता है, तो कई बार भूख-प्यास से त्रस्त होने पर भी धैर्यपूर्वक घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

लेकिन यह सब करके भी एक संतुष्टि का अनुभव होता है, प्रतीत होता है, जैसे एक सार्थक कदम पूरा हुआ। इसी क्रम के अंतर्गत विगत दिसम्बर माह में मैंने ऑफिस से लम्बी छुट्टी लेकर नेपाल की सीमा से जुड़े चीन के पहाड़ी क्षेत्र में जाने का निश्चय किया। यह एक बड़े जोखिम का काम था, क्योंकि खतरनाक और संकरे मार्ग पर कभी-कभी दुर्घटना की संभावना रहती है, परन्तु मन के जोश और उमंग को कौन रोक सकता है ?

रात में ही चुपचाप मैंने यात्रा की पूरी तैयारी कर ली। कमर पर लादने वाले बड़े बैग में पूरा सामान, डबल लेयर गर्म ट्रेक सूट व स्लीपिंग बैग तैयार कर लिये थे। सुबह ही काठमाण्डू के पुराने बस पार्क से पहली बस 'बारहबिसे' के लिये पकड़ कर मध्याह्न 12 बजे बारहबिसे पहुंच गया। बारहबिसे से 'तातोपानी' (नेपाल-चीन सीमा के समीप का स्थान) के लिये दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण दिन में मात्र दो मिनी बस ही जाती हैं, इसलिये अपराह्न 3 बजे तक बाध्यतावश प्रतीक्षा करनी पड़ी। बारहबिसे से तीन बजे की बस द्वारा संध्या छ: बजे तातोपानी पहुंच गया। मार्ग में अनगिनत झरनों को पार करते समय बहती जलधाराओं ने अनायास ही मन को मोह लिया था।

तातोपानी नेपाल का एक अत्यंत ठंडा पर्वतीय स्थल है, जहाँ प्रकृति का एक चमत्कार है-गर्म पानी का चश्मा। इस चश्मे के कारण ही स्थान का नाम तातोपानी (गर्म पानी) पड़ा है। गर्म पानी की धारा में नहाकर यात्रा की थकान कम हो गयी थी और मन प्रफुल्लित हो उठा। शायद इसका एक कारण गंतव्य की समीपता भी थी। चारों ओर घने जंगलों से युक्त हिमाच्छादित नेपाल और तिब्बत की पर्वतश्रृंखलाओं को मात्र सुनकोशी नदी यहां विभाजित करती है। इन जंगलों में भालू और चीते सामान्य रूप से पाये जाते हैं, जो कि वातावरण नमीयुक्त होने के कारण चिड़चिड़े स्वभाव के हैं।

तातोपानी से आगे जाने के लिये कोई साधन उपलब्ध न होने के कारण मैं सायं सात बजे पैदल ही चल पड़ा। लगभग 5 किमी. चलने पर भोटेकोशी नदी का वह छोटा सा पुल पड़ता है, जो नेपाल और

चीन को जोड़ता है। इस पुल पर 'मितेरी पुल' (मैत्री पुल) का बोर्ड पढ़कर मैंने संतोष की एक गहरी सांस ली ही थी, कि एक नेपाली पुलिस अधिकारी ने आकर मुझसे उस अंधेरे में वहां आने का कारण पूछा। संध्या के बाद चीन सीमा में प्रवेश वर्जित है। मैंने बताया कि मैं तो एक घुमक्कड़ जिप्सी हूं और अंधेरे में सीमा उल्लंघन का मेरा कोई इरादा नहीं है। मुझे वापस जाने को कहकर पुलिस अधिकारी आश्वस्त होकर चैक पोस्ट में चला गया और मैं भी वापस हो लिया।

'मितेरी पुल' के पास ही एक-दो छोटे-छोटे गेस्ट हाउस हैं, लेकिन अग्रिम आरक्षण न होने के कारण कहीं भी रात गुजारने का स्थान नहीं मिला। विवशता से तातोपानी की ओर वापस चल दिया। रात्रि का समय, सांय-सांय चलती हवा, घना कोहरा और प्रतिपल हिंसक जंगली जानवरों का भय एक अजीब से माहौल को जन्म दे रहे थे। मैंने प्रकृति को बहुत समीप से देखा है, शायद इसीलिये मैं उस भयावह माहौल में भी चलने का दुस्साहस कर बैठा था।

पैर थककर चूर हो रहे थे। लगातार 5 किमी. चढ़ाई चढ़कर आने के पश्चात वापस लौटना और भी कष्टकर था। मैंने बैग से टॉर्च निकाली और घने सफेद कोहरे में टॉर्च की रोशनी के सहारे धीरे-धीरे चल पड़ा। लगभग 3 किमी. चलने के पश्चात अचानक एक मोड़ मुड़ने पर सामने टॉर्च की रोशनी डाली, तो दो बाघों को मार्ग के किनारे खड़े पाया। शायद हमारे बीच 20-25 मीटर का फासला रहा होगा। उनकी आँखें

अंगारों की तरह दहकती प्रतीत हो रही थी। मैंने जड़वत होकर टॉर्च की रोशनी उसी ओर डालते हुए निश्चल रूप से खड़े होकर 'नवार्ण मंत्र- का उपांशु जप प्रारम्भ कर दिया। मैंने नवार्ण मंत्र को सिद्ध किया हुआ है, अतः मन में रंचपात्र भी भय को स्थान नहीं मिला। लगभग 3-4 मिनट के पश्चात दोनों बाघ मार्ग के दूसरी ओर पहाड़ की तलहटी में बहने वाली नदी की ओर चले गये। न जाने क्यों बाघों को अपनी आंखों के सामने जाते देखकर मेरा भी मन आगे जाने को नहीं हुआ, परन्तु उस ठंडी अंधेरी रात में कोई अन्य विकल्प भी नहीं था।

अनमने मन से पीछे की ओर पलटा, कुछ ही दूरी पर पगौड़ा शैली का एक छोटा सा भवन दिखायी दिया, जिसमें जलती लालटेन का प्रकाश सड़क पर भी पड़ रहा था। मुझे आश्चर्य भी हुआ और स्वयं पर क्रोध भी आया कि पता नहीं किन विचारों में मग्न था जो पहले इस ओर ध्यान ही नहीं गया। कुछ भी हो, मैंने राहत की सांस ली और पलटकर पगौड़ा तक पहुंच गया। पगौड़ा काफी पुराना दिखाई देता था जो वास्तव में चाय की दुकान थी। दुकान में एक छोटी अंगीठी पर एल्यूमीनियम की केतली रखी थी और पास ही 3-4 पुराने चाय के कप रखे थे।

मुझे देखते ही दुकानदार जो काफी उम्रदराज दिखायी देता था, नेपाली में बोला-''धैरे थाकेको देखिन्छ, अलिकति चिया खानु हुन्छ कि ?'' (बहुत थके हुए प्रतीत होते हो, थोड़ी चाय पियोगे क्या ?)

वैसी ठंड में भला कौर चाय को मना करता। मेरे हां कहने पर उसने केतली में पहले से खौल रही चाय एक प्याली में मुझे दी। मैंने उसे बाघों के विषय में बताया, तो उसने कहा, इस रास्ते पर अकेले चलना दिन में भी खतरनाक है, मुझे इतनी रात गये अकेले नहीं आना चाहिये था। उसके पूछने पर कि मैं वहां किसलिये आया था, मैंने टालने के लिए कह दिया-''ऐसे ही घूमने के लिये आया हूं।''

मेरी बात सुनकर वह हंसते हुए बोला-'लगता है किसी की खोज में आये हो और वह अभी तक मिला नहीं है।'

मैं उसकी टिप्पणी पर धीरे से मुस्कुरा दिया। चाय खत्म होने पर मेरे मना करने पर भी वह लालटेन लेकर मुझे बस्ती तक पहुंचाने के लिये चल पड़ा।

मैंने पूछा-'क्या अपनी दुकान बंद नहीं करोगे ?'

वह बोला-'यह दुकान तो हमेशा खुली रहती है।'

मुझे कुछ आश्चर्य हुआ। फिर यह सोचते हुए कि इतना वृद्ध व्यक्ति क्या मेरे साथ चल सकेगा, मैं ढलानदार मार्ग पर चल पड़ा। मेरी शंका अधिक देर नहीं

टिक सकी, क्योंकि वृद्ध की गति तो मुझसे कई गुणा अधिक थी। कुछ ही मिनटों में हम बस्ती तक पहुंच गये। हांफते-हांफते मेरी दुर्दशा हो रही थी। बस्ती के समीप पहुंचकर वृद्ध ने मुझसे आज्ञा मांगी। उसके चेहरे पर एक मोहक मुस्कान थी। मुझे 'फेरि भेटौंला' (फिर मुलाकात होगी) कहकर वह वापस मुड़ गया।

उसी क्षण याद आया कि मैं तो अपनी परेशानी में उस सज्जन वृद्ध को चाय के पैसे देना ही भूल गया था। उसे पैसे देने के लिये जेब से पर्स निकालकर 'क्षमा कीजिये' कहकर जैसे ही मैं मुड़ा मेरे आश्चर्य की सीमा न रही मात्र 5-10 सेकण्ड के अंतराल में वृद्ध लालटेन सहित अदृश्य हो चुका था।

जीवन में पहली बार ऐसी घटना से मैं हतप्रभ रह गया। यदि यह घटना मेरे सामने न घटी होती, तो शायद मैं कभी ऐसी घटना पर विश्वास न कर पाता। मन में एक विचित्र हलचल लिये हुए मैं लॉज तक पहुंचा।

कमरा बुक कराने के पश्चात लॉज के मैनेजर को उस घटना के विषय में बताया, तो उसने कहा-'इस बस्ती में तातोपानी से चीन बॉर्डर तक न तो कोई चाय की दुकान है, न ही पगौड़ा शैली का कोई भवन। आपकी भेंट निश्चित रूप से तांत्रिक बाबा 'सेते' से हुई है। वह मूलतः तिब्बती है, परन्तु कभी-कभी नेपाल की पर्वश्रृंखलाओं में भी भ्रमण-विचरण करते हैं।'

मेरी जिज्ञासा सेते तांत्रिक में जाग चुकी थी, परन्तु सत्यता की जांच स्वयं

किये बिना इस सब पर विश्वास कर लेना इतना सहज नहीं था। सत्यता की जांच हेतु उसी समय मैंने कुछ अन्य स्थानीय व्यक्तियों से अलग-अलग बातचीत की, तो सभी ने लॉज मैनेजर के कथन की पुष्टि की। स्थानीय व्यक्तियों के अनुसार सेते एक उच्च श्रेणी के तांत्रिक, योगी व सिद्ध व्यक्ति हैं, कोई मायावी भूत-प्रेत नहीं। अधिकांश समय वह साधनारत रहते हैं और किसी से मिलते-जुलते नहीं हैं। मुसीबत में फंसे, रोग से ग्रस्त और रास्ता भटके हुए व्यक्तियों की सहायता वह अक्सर करते रहते हैं और मेरे साथ घटित घटना स्थानीय व्यक्तियों के लिये विशेष बात नहीं थी। ऐसी घटनायें वर्ष में कई बार विपदाग्रस्त व्यक्तियों के साथ घटित होती रहती हैं।

तांत्रिक सेते से मिलने की मेरी इच्छा प्रबल हो गयी। मेरे पूछने पर कि वह कहां पर साधना करते हैं और उनसे कैसे मिला जा सकता है ?

लोगों ने कहा, कि उनका साधना स्थल किसी को भी ज्ञात नहीं है। उनसे मिलना लगभग असम्भव है, क्योंकि वह मात्र अपनी इच्छा से ही किसी से मिलते हैं। यह सुनकर मुझे कुछ निराशा हुई और झुंझलाहट भी, क्योंकि अज्ञानतावश मैंने एक दिव्य योगी के इतने निकट जाकर भी कुछ प्राप्त करने का एक बड़ा अवसर खो दिया था।

थोड़ा बहुत खाना अनिच्छा से खाकर मैं अपने कमरे में जाकर लेट गया। पहाड़ों की रात भी पहाड़ जैसे होती है। बिस्तर पर लेटे-लेटे सम्पूर्ण घटनाक्रम मेरी स्मृति में फिर से घूमने लगा। अचानक मुझसे विदा लेते समय सेते द्वारा बोला गया वाक्य मेरे मन में कौंध उठा-''फेरि भेटौंला'' (फिर मुलाकात होगी), ''फेरि भेटौंला'', फेरि भेटौं.... ....'' न जाने क्यों मुझे लगा कि मेरी सेते से भेंट दोबारा अवश्य होगी। थकावट अधिक होने के कारण कब नींद आ गयी, पता ही नहीं चला।

सबेरे नित्यक्रिया से निवृत्त होकर मैंने फिर से अपनी यात्रा पैदल शुरू की। वास्तव में मैं स्वयं इस बात की जांच कर लेना चाहता था- कि रात्रि में जहां बैठकर मैंने चाय पी थी, सेते से बातचीत की थी, क्या वहां कोई पगौड़ा है या नहीं ? मेरे जैसे व्यक्ति के लिये जो कि प्रत्येक बात में ''Scientific Exactness'' (वैज्ञानिक तथ्य) खोजता हो, सुनी-सुनायी कहानियों पर विश्वास करना हमेशा कठिन होता है। मैंने दिन की रोशनी में पूरे रास्ते का बारीकी से निरीक्षण किया। उस स्थान को पहचाना जहां बाघों को देखा था। वहां पहाड़ी 'खोले' (नदी) के गीले रेतीले किनारे पर बाघों के पंजों के निशान अभी तक विद्यमान थे, परन्तु पगौड़ा या उसका कोई चिन्ह मैं कहीं नहीं ढूंढ सका। वास्तव में उस स्थान पर अत्यन्त ऊंची पर्वतश्रृंखलाएं थी, जहां भवन तो क्या एक कुर्सी रखने का स्थान भी नहीं था।

मितेरी पुल पार करने के पश्चात चीन के क्षेत्र में एक छोटा सा बाजार पड़ता है। वहां से कुछ युआन (चीनी मुद्रा) विनियम किये। तभी एक ट्रक 'खासा' (चीन का एक नगर) की ओर जाने के लिये मिल गया। इस बाजार से खासा (Khasa) लगभग 34 किमी. दूर है। तिब्बती क्षेत्र होने के कारण यहां के लोगों की भाषा चीनी की अपेक्षा तिब्बती अधिक है। हमारा ट्रक अभी 25-26 किमी. चला था, कि पता चला लैण्ड स्लाइडिंग (चट्टान खिसकना) के कारण मार्ग अवरुद्ध है।

मुझे ऊपर जाने वाला एक पगडण्डीनुमा मार्ग मालूम था, इसलिये मैंने वहां बैठकर घंटों प्रतीक्षा करने की तुलना में उस मार्ग से चढ़ायी चढ़कर पैदल जाना उचित समझा। लगभग एक घंटे तक खड़ी चढ़ायी पर ट्रेकिंग करने के पश्चात् मैं काफी थक गया था, इसलिये कुछ देर विश्राम करने के विचार से एक बड़े पत्थर पर बैठ गया और बैग से बोतल निकालकर थोड़ा पानी पीया। **वास्तव में ट्रेकिंग में इतनी कठिनाई नहीं होती, परन्तु पीठ पर वजन होने के कारण अधिक श्रम लगता है। तभी मैंने उसी पगडंडी पर नीचे की ओर से कुछ विदेशियों को आते देखा। उनके साथ एक स्थानीय मजदूर उनका सामान लादकर चल रहा था। मेरे पास से निकलते समय उस मजदूर को शायद मुझ पर दया आ गयी या उसे अतिरिक्त कमाई का साधन दिखायी दिया, उसने मुझसे पूछा-क्या आपका सामान भी पहुंचा दूं ?**
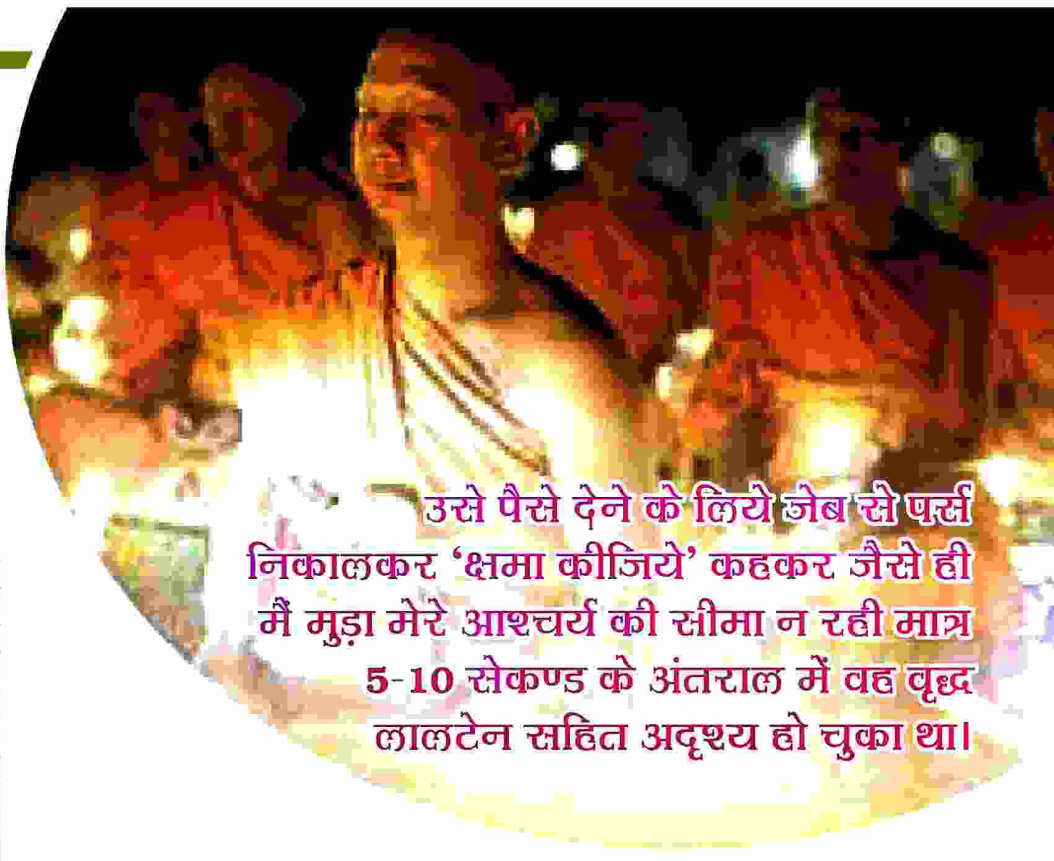
मैंने सोचा चलने में आसानी होगी इसलिये 'हां' कह दिया। खासा पहुंचने पर शहर के बाहरी नाके पर कस्टम अधिकारियों ने मेरा सामान चैक किया। ओ.के. होने के पश्चात् मैंने शहर तक स्वयं सामान उठाकर ले चलने का निश्चय किया और मजदूर को पैसे देने के लिये विदेशियों के पास पहुंच गया। वे सब, कुछ हैरान-परेशान से दिखाई दे रहे थे। मजदूर के विषय में पूछने पर उन्होंने कहा-'He has been transmitted in front of our eyes.' (वह हमारे देखते-देखते अदृश्य हो गया)। यह सुनते ही मुझे जैसे बिजली का करण्ट लग गया। मैं अत्यधिक रोमांचित हो उठा था।

इसके पश्चात् मैंने चीन में लोगों की भीड़ में जगह-जगह सेते को खोजने का प्रयास किया, परन्तु सफलता नहीं मिली। प्रत्येक पल यह सोचते-सोचते कि उस दिव्य पुरुष से अब मुलाकात होगी, अब भेंट होगी, मुझे चीन में रहते हुए बारह दिन बीत चुके थे। मन बहुत असन्तुष्ट व उदास था और खिन्न मन से 13वें दिन निराश होकर मैं वापस चल पड़ा।

वास्तव में मन के किसी कोने में अभी भी आशा की किरण बाकी थी। शायद इसी कारण से मैंने कोई वाहन लेने के बजाय पैदल चलकर उसी रास्ते से वापस जाने का निर्णय लिया, जिस पगडंडी पर मेरी सेते से दूसरी बार भेंट हुई थी। पथरीले मार्ग पर चलते-चलते अनेकों विचार आ-जा रहे थे। मैंने अनेक बार विगत की समस्त घटनाओं का सूक्ष्म-विश्लेषण किया, तो मुझे प्रतीत हुआ, कि मेरी सेते से भेंट होना निश्चित है। मन में एक प्रण, पूर्ण इच्छाशक्ति के साथ किया, कि अब चाहे पूरी आयु यहीं गुजारनी पड़े तब भी मैं सेते से मिले बिना वापस नहीं जाऊंगा।

थोड़ी दूरी पर एक टूटा-फूटा भवन दिखाई दे रहा था। कुछ देर यहीं बैठ जाऊं यह सोचकर मैं वहां चला गया। अन्दर एक जीर्ण-शीर्ण चबूतरे पर कोई व्यक्ति बिस्तर में लिपटा पड़ा था। मैंने सोचा शायद कोई भिखारी होगा। मैं बाहर की ओर बैठ गया और फिर से मनन-चिन्तन प्रारम्भ हो गया।

कुछ समय के बाद वह व्यक्ति चबूतरे से उठकर बाहर की ओर आकर मेरे समीप बैठ गया। यद्यपि वह अति-वृद्ध व्यक्ति जीन्स, जैकेट और स्पोर्ट्स शूज पहने हुए था, परन्तु इस बार पहली ही झलक में मैं 'सेते' को भली-भांति पहचान गया था। उनका बदला हुआ परिवेश मुझे इस बार भ्रमित नहीं कर पाया। मैंने तुरन्त नतमस्तक होकर उनसे प्रार्थना की-'**आप यह लुकाछिपी बंद करें और मुझे वार्तालाप का मात्र एक अवसर प्रदान कर मेरी जिज्ञासा का समाधान करें।**'

साथ ही उनके चेहरे पर एक मंद मुस्कान थिरक उठी और धीमे स्वर में उन्होंने

कहना शुरू किया ''तंत्र, मंत्र, यंत्र, साधना, योगाभ्यास तथा कुण्डलिनी जागरण अति-वैज्ञानिक विधियाँ हैं। इनकी प्रक्रिया जटिल व धीमी है, परन्तु हैं अत्यन्त अद्‌भुत, आलौकिक व आश्चर्यजनक। एक सिद्ध व्यक्ति के लिये असम्भव शब्द का कोई महत्व नहीं रह जाता। सिद्धि शब्द का जितना साधरण उच्चारण है, वास्तव में सिद्धि उतनी सरल नहीं है। समस्त आत्मिक शक्तियों के उत्थान व विकास की चरम सीमा को सिद्धि कहा जा सकता है। अपनी किसी एक आंतरिक शक्ति जैसे उदाहरण के लिये 'इच्छाशक्ति' को ही विकसित और सुदृढ़ करके व्यक्ति अनेकों चमत्कार दिखा सकता है, फिर सिद्ध व्यक्ति की शक्तियों की तो कोई सीमा-रेखा ही निर्धारित नहीं की जा सकती है। सिद्धि प्राप्ति का मार्ग ही साधना है। साधना में साधक की चार स्थितियाँ होती हैं-जाग्रत अवस्था, स्वप्नावस्था, सुषुप्ति अवस्था व तुरीय अवस्था। जाग्रत अवस्था में बाहर संसार होता है व भीतर कुछ नहीं। स्वप्नावस्था में भीतर संसार हो जाता है बाहर कुछ नहीं रहता। सुषुप्ति अवस्था में न भीतर कुछ न बाहर कुछ अर्थात् शून्यावस्था होती है तथा तुरीय अवस्था में भीतर-बाहर हर जगह प्रकाश ही प्रकाश है, प्रत्येक जगह परमात्मा के दर्शन होते हैं।''

जब मैंने उनसे प्रश्न किया कि वह कैसे एक ही क्षण में अदृश्य हो जाते हैं, मंद मुस्कान से उत्तर दिया-''पता नहीं ऐसी उपलब्धि लोगों को अति-विलक्षण क्यों दिखायी देती है। यह कोई नयी विद्या तो नहीं है, हजारों वर्ष पूर्व से ही शास्त्रों में वर्णित है। हां! इस ओर सामान्य व्यक्तियों का ध्यान न जाने के कारण आज के वैज्ञानिक युग में लोग इसे चमत्कार समझते हैं। यदि शास्त्रादि का अध्ययन करें तो पता चलता है-'स्वयं को गुप्त करना या आकाशगमन विद्या साधारण श्रेणी में आती है।''

मैंने आग्रह किया कि कोई शक्तिशाली मंत्रादि जनसामान्य के लाभार्थ मुझे बतायें, तो उन्होंने तिब्बती तंत्र साहित्य में वर्णित एक सिद्ध बीज मंत्र मुझे दिया जो इस प्रकार है-

''ऊँ पा मे ऐ मे हुम''

इस मंत्र का जप कभी भी कहीं भी शुरू किया जा सकता है। अन्य मंत्रों के समान इस मंत्र का जप भी यथासंभव अधिकतम संख्या में करना चाहिये। यह मंत्र कल्याण और मोक्ष दोनों प्रदान करने में सक्षम है। किसी आकस्मिक परेशानी के निराकरण हेतु इसका 101 बार जप करना चमत्कारिक प्रभाव दिखाता है। रोगी व्यक्ति को इस मंत्र से 21 बार उपचारित पानी पिलाने से जादू जैसा प्रभाव होता है। प्रेत बाधा के निराकरण हेतु इस मंत्र द्वारा 21 बार उपचारित कीलें घर की प्रत्येक चौखट पर ठोंक देनी चाहिए। किसी विशेष मनोकामना की पूर्ति हेतु इसका 2100 की संख्या में जप करना चाहिये।

उसी क्षण मुझे प्रतीत हुआ कि सेते शायद मुझसे विदा चाहते हैं।

मैंने पूछा-फिर भेंट कब होगी?

'कभी नहीं' - सपाट स्वर में सेते ने इंकार कर दिया और मुझे निर्देश दिया, कि भविष्य में कभी मैं स्वयं या किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से उनसे मिलने का प्रयास न करूं, क्योंकि इससे उनकी साधना में बाधा पड़ती है।

मैंने तुरन्त कैमरा निकालकर फटाफट उनके 4-5 फोटो ले लिये। मेरी इस हरकत वे वह कुछ आवेशित हो उठे और मुझसे प्रश्न किया-'बिना मेरी सहमति लिये फोटो क्यों खींचे ? जितने फोटो लिये हैं, वह सब व्यर्थ हैं, इनमें से एक भी चित्र नहीं आयेगा।'

मैंने अपनी गलती तुरन्त स्वीकार कर ली और मात्र एक फोटो लेने के लिये अनुमति मांगी। सेते ने मुस्कुराते हुए नमस्कार मुद्रा में हाथ जोड़े और मेरे कैमरा क्लिक करते ही दूसरे क्षण हमेशा की तरह अदृश्य हो गये।

परन्तु इस बार मैं आश्चर्यचकित नहीं हुआ वरन् मेरा सिर श्रद्धा से नतमस्तक हो गया। मैं आश्चर्यचकित उस समय हुआ जब कैमरा रील तैयार होने पर उसमें सेते का मात्र एक ही चित्र आया, जो उन्होंने अपनी इच्छा से लेने दिया था, और वह इस लेख के साथ प्रकाशित है।

('मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' से)
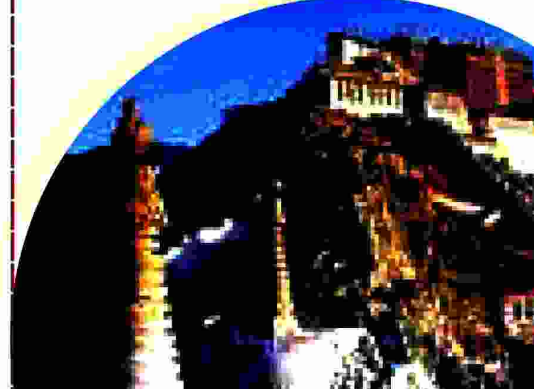
त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

शिष्य का और गुरु का सम्बन्ध जीवन में सबसे श्रेष्ठतम माना गया है। इन सम्बन्धों को संसार की किसी भी तराजू में तोला नहीं जा सकता। 'शंकरभाष्य' ग्रन्थ में जगद्गुरु शंकराचार्य ने शिष्य की पांच कसौटियां रखीं, पांच पहचान बताई, शिष्य पांच लक्षण बताए जो इस प्रकार से हैं–

- शिष्य निरंतर गुरु चिंतन करना अपना परम कर्तव्य समझता है। इससे न केवल उसे आध्यात्मिक बल प्राप्त होता है, मन शुद्ध रहता है अपितु बाहरी दूषित वातावरण भी उसके मन पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल पाता।
- शिष्य कोई अन्य मंत्र जप करने की अपेक्षा गुरु मंत्र को अपने जीवन में प्रधानता देता है क्योंकि इस मंत्र द्वारा सभी सिद्धियों को, चैतन्यता को, दिव्यता को प्राप्त किया जा सकता है।
- गुरु शिष्य से किसी भेंट की अपेक्षा नहीं करता। उसे तो केवल निश्चल प्रेम द्वारा अपना बनाया जा सकता है। एक शिष्य गुरु को धन, यश, प्रतिष्ठा, भेंट आदि द्वारा प्रभावित करने की अपेक्षा श्रद्धासुमन तथा प्रेमाश्रुओं द्वारा गुरु के हृदय में स्थान बनाने का प्रयास करता है।
- शिष्य व्यक्ति तब कहलाता है जब वह गुरु के कार्यों को पूर्णता प्रदान करने में अपना तन-मन लगा देता है। गुरु को वह शब्दों द्वारा प्रसन्न करने की अपेक्षा उनके कार्यों में सहायक बनकर उनके हृदय पटल पर अपना नाम सदा के लिए अंकित कर देता है।
- शिष्य का एक सर्वोच्च गुण है गुरु में श्रद्धा। केवल गुरु मंत्र जप करने से श्रद्धा प्रमाणित नहीं होती। सच्ची श्रद्धा तो वह है कि शिष्य पर कितनी ही विकट समस्याएं क्यों न टूट पड़ें वह निडर रहे और मन में अटल विश्वास रखे कि गुरु जब साथ है तो कुछ उसका अहित नहीं हो सकता। केवल यह कहने से कि मुझे गुरु पर विश्वास है, श्रद्धा व्यक्त नहीं होती। श्रद्धा तो तब व्यक्त होती है जब विषम से विषम स्थिति में भी शिष्य निष्कंप तथा अविचलित बना रह सके।
- शिष्य हर क्षण गुरु को अपने समीप अनुभव करता है चाहे वह शारीरिक रूप से गुरु से मीलों दूर ही क्यों न हो और जब वह ऐसा अनुभव करता है तो फिर जीवन में कोई उसका कुछ अहित ही नहीं कर सकता और यही नहीं वह स्वयं भी कुछ गलत कार्य नहीं कर सकता। क्योंकि तब गुरु स्वयं उसे सही मार्ग पर बराबर अग्रसर करते ही रहते हैं।

शिष्य नाम या यश प्राप्त करने के लिए गुरु का कार्य नहीं करता, उसका नाम हो या नहीं हो, गुरु के हृदय में तो वह शिष्य सबसे प्रिय है जो बिना शोर करे या बिना घमंड के गुरु कार्य में रत रहता है।

- घोड़े को आप लगाम पकड़ कर तालाब के किनारे ले जा सकते हैं या उसको कह सकते हैं, कि यह पानी बहुत स्वच्छ है, यदि तू पीयेगा तो प्यास बुझ जाएगी। पर यदि घोड़ा पानी पिये ही नहीं तो आप क्या कर सकते हैं। इसी प्रकार क्रिया तो आप को ही करनी है, गुरु तो केवल आपको रास्ता दिखा सकता है।
- जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है। परन्तु कुछ महापुरुष, कुछ अद्वितीय पुरुष, कुछ युग पुरुष ऐसे होते हैं जो मृत्यु की पगडंडी पर नहीं चलते अपितु अमृत के सागर पर पांव रखते हुए गतिशील होते हैं। वे युग पुरुष पृथ्वी पर नहीं चलते अपितु वायुमंडल पर अपने चरण-चिह्नों को छोड़कर गतिशील होते हुए भी अगतिशील रहते हैं, क्योंकि सामान्य व्यक्तित्व ऐसे युग-पुरुषों को नहीं समझ पाता और ऐसे ही युग पुरुष अयोनिज कहलाते हैं।
- जहाँ ब्रह्म है वहाँ माया भी है और माया उस व्यक्ति की आँखों पर एक परदा डाले रहती है, उसके मन में संशय-असंशय के भाव जाग्रत करती रहती है, उसके मन में विश्वास-अविश्वास की दीवार खड़ी किए रहती है। वह विश्वास ही नहीं कर पाता कि यह व्यक्ति यह पुरुष, यह गुरु हमारे ही समान हँसता है, मुस्कराता है, रोता है, खाता है, पीता है, विचरण करता है और ऐसी ही क्रियाएँ करता है जैसे हर व्यक्ति करता है, एक साधारण व्यक्ति करता है, और यह एक युग पुरुष हो सकता है।
- और ऐसा युग पुरुष तो सिद्धाश्रम से मृत्युलोक में जाता है, पृथ्वी लोक पर आता है और जितने क्षण, जितना समय व्यतीत करना होता है, उतना समय व्यतीत कर पुन: सिद्धाश्रम में चला जाता है। यही नहीं, अपितु वह निरंतर योग निद्रा के माध्यम से अपने पूरे शरीर को अंगुष्ठवत् बनाकर, सिद्धाश्रम में जाकर पूर्ण व्यक्तित्व बन जाता है, वहाँ योगियों को साधनाओं में सिद्ध करता है, ऋषियों और मुनियों को ज्ञान और चेतना देता है।
- आप ऐसे युग पुरुष, ऐसे गुरु को पहचान कर अपने जीवन के लक्ष्यप्राप्ति हेतु अग्रसर हो, वे गुरु तो पूर्ण अवतार हैं ही, गुरु तो पूर्ण अंशावतार हैं ही। वे तो एक विशेष उद्देश्य को लेकर यदा-कदा पृथ्वी लोक पर आएंगे ही और अपने कार्य को संपन्न कर पुन: किसी अन्य लोक में विचरण करने के लिए प्रस्थान करेंगे ही। मैं आशीर्वाद देता हूँ कि आपके आत्मचक्षु जाग्रत हो, आप गुरु को, ऐसे युग पुरुष को समझ सकें और उनके द्वारा रूपांतरित हो सकें, श्रेष्ठतम बन सकें।

साधक के जीवन में

स्वर्ण वर्षा सी होने लगती है

स्वर्णाकर्षण भैरव प्रयोग

जीवन में कई बार ऐसी स्थिति आ जाती है, कि मनुष्य अपना कार्य करते-करते निराश हो जाता है, उसे जीवन को संचालित करने हेतु जिस चेतना की, ऊर्जा की, तप की आवश्यकता होती है, वह चैतन्य ज्वाला ही मन्द होने लगती है, निराशा में व्यक्ति कुछ भी कर सकता है, यह सही है, कि पुरुषार्थी व्यक्ति को कार्य करते रहना चाहिए, बाधाओं का हंस कर सामना करना चाहिए, किन्तु केवल शास्त्रों में लिखी ये बातें, उपदेशों में दिया गया इस प्रकार का ज्ञान, वास्तविक जीवन में खरा नहीं उतरता।

विश्व की दुर्लभ अद्वितीय अलौकिक भौतिक साधना जिसे एक बार सम्पन्न करके देख तो लें

अरे भाई! जब कुछ विशेष समस्याएं आ जाएंगी तो उसके लिए कुछ विशेष उपाय ही करना पड़ेगा, आखिर समस्याओं से लड़ते-लड़ते तो जीवन नहीं काटा जा सकता, ऊपरी तौर पर कोई कितना ही कहे, लेकिन फल- प्राप्ति की भावना तो उसके मन में रहती ही है, प्रयत्न करने पर सफलता मिलती है, तो उत्साह बढ़ता है, और यह उत्साह श्रेष्ठ व्यक्ति को और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता है, निराशा, असफलता के कारण ही उत्पन्न होती है, और असफलता, निराश व्यक्ति के विकास को रोक देती है, उसकी इन्द्रियां स्वाभाविक रूप से कार्य नहीं कर पाती हैं।

साधनाओं के विवेचन-

साधनाएं भी मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं-सात्विक और तामसिक, सात्विक साधनाओं में शान्त देवताओं से पूर्जा-अर्चना, जप, निवेदन तथा अर्पण किया जाता है, इन साधनाओं में प्रार्थना-भाव, दीन-भाव विशेष रूप से रहता है, इन साधनाओं से अनुकूलता तो प्राप्त होती ही है और साथ ही मानसिक दृष्टि से भी ये साधनाएं शान्ति प्रदान करती हैं, व्यक्ति के जीवन में ब्रह्म-तत्व का विकास करती हैं।

तामसिक साधनाएं वे साधनाएं हैं, जिनमें साधक अपना अधिकार मांगता है, कुछ वश में करने की इच्छा रखता है, उसमें साधक अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए साधना-तत्व को प्रबल बनाता है, जो उसे प्राप्त नहीं है, वह मिलना ही चाहिए और इसके लिए चाहे कुछ भी करना पड़े, तामसिक साधनाएं 'अति' की स्थिति में ही सम्पन्न की जाती है।

जब दरिद्रता जीवन में स्थायी रूप से आकर बैठ ही जाए, जब शत्रु इतने अधिक प्रबल हो जाय कि जीवन दूभर हो जाय, जब रोग और बीमारी इस प्रकार बढ़ने लगे कि व्यक्ति स्वयं किसी न किसी रोग से निरन्तर ग्रस्त रहे, और रोग उसकी कार्य क्षमता पर, उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालने लगे अथवा परिवार में बीमारी किसी न किसी रूप में लगती ही रहे अथवा आकस्मिक दुर्घटनाएं घटित होती रहें, तब इस प्रकार की प्रबल साधनाओं को करने के अलावा कोई अन्य उपाय ही नहीं है, जिस प्रकार आग लगने पर एक-दो बाल्टी पानी डालने से ज्वाला शान्त नहीं होती और उस समय फायर ब्रिगेड को बुलाना ही पड़ता है, इसी प्रकार जीवन में कष्टों की अग्नि प्रज्वलित होने पर तीव्र तामसिक साधनाएं सम्पन्न करना ही एकमात्र उपाय है।

दुःख की अंधियारी काली रात इतनी अधिक लम्बी न हो, कि सुख के सूर्योदय की आशा ही खत्म हो जाय, दुःख जीवन के अंग हो सकते हैं-लेकिन सुखों का सूर्य भी जीवन में जगमगाना ही चाहिए।

प्रबल देव-भैरव

भैरव देव के सम्बन्ध में इतना अधिक साधना साहित्य लिखा गया है, कि सामान्य साधक यह निश्चित नहीं कर सकता कि उसे किस प्रकार साधना करनी चाहिए, भैरव देव का मूल स्वरूप क्या है और उनकी शक्तियां कितनी प्रबल हैं और भैरव की साधना कर किस प्रकार शक्ति प्राप्त करनी चाहिए ?

किसी भी शुभ कार्य में, चाहे वह यज्ञ हो, विवाह हो, वास्तु-स्थापना साधना हो, गृह प्रवेश हो अथवा अन्य कोई मांगलिक कार्य हो, भैरव की स्थापना एवं पूजा अवश्य ही की जाती, है क्योंकि भैरव ऐसे समर्थ रक्षक देव हैं, जो कि सब प्रकार के विघ्नों को, बाधाओं को रोक सकते हैं, और कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाता है, छोटे-छोटे गांवों में भैरव का स्थान, जिसे 'भैरव चबूतरा' कहा जाता है, देखा जा सकता है, अशिक्षित व्यक्ति भी अपने पूर्वजों से प्राप्त मान्यता-धारणा के आधार पर भैरव-पूजा अवश्य करता है, इसके पीछे सिद्ध ठोस आधार है, तभी यह भैरव पूजा परम्परा चली आ रही है, हिन्दू विवाह में विवाह के पश्चात् 'जात्रा' का विधान है, और सर्वप्रथम '**भैरव यात्रा**' ही सम्पन्न की जाती है, भैरव के विभिन्न स्वरूप हैं और अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग स्वरूपों की पूजा सम्पन्न की जाती है।

भैरव व्याख्या

भैरव, शिव के अंश हैं, और उनका स्वरूप चार भुजा, खड्ग, नरमुण्ड, खप्पर और त्रिशूल धारण किए हुए, गले में शिव के समान मुण्ड माला, रुद्राक्ष माला, सर्पो की माला, शरीर पर भस्म, व्याघ्र चर्म धारण किये हुए, मस्तक पर सिन्दूर का त्रिपुण्ड, ऐसा ही प्रबल स्वरूप है, जो कि दुष्ट व्यक्तियों को पीड़ा देने वाला और अपने भक्तों, साधकों के हर प्रकार के संकट दूर कर, उन्हें अपने आश्रय में अभय प्रदान कर, बल, तेज, यश, सौभाग्य प्रदान करने में पूर्ण समर्थ देव हैं, भैरव-शिव समान ऐसे देव हैं, जो कि साधक किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना करे-प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं, भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत, प्रेत, पिशाच के अधिपति हैं। भैरव के विभिन्न चरित्रों, विभिन्न

पूजा विधानों, स्वरूपों के सम्बन्ध में शिव पुराण, लिंग पुराण इत्यादि में विस्तृत रूप से दिया गया है। भैरव का सुप्रसिद्ध मन्दिर एवं सिद्ध पीठ महातीर्थ काशी में स्थित महाकाल भैरव मन्दिर है।

भैरव के विभिन्न स्वरूपों की साधना अलग-अलग प्रकार से सम्पन्न की जाती है। प्रत्येक विशेष साधना का विशेष उद्देश्य, विशेष विधान और विशेष फल होता है, इस लेख में यह सब संभव नहीं है, इसमें भैरव का एक ऐसा साधना प्रयोग दिया जा रहा है, जो कि साधक के जीवन में अक्षय सौभाग्य प्राप्ति हेतु, दरिद्रता पूर्ण रूप से दूर कर, अक्षय निधि प्राप्त करने का प्रयोग है।

स्वर्णाकर्षण भैरव साधना

यह साधना भैरव जयंती, किसी भी रविवार अथवा मंगलवार को सम्पन्न की जाती है, तथा साधना एकान्त स्थान में चाहे वह घर हो, अथवा कोई देव स्थान या उद्यान अथवा श्मशान, मूल रूप से यह साधना प्रातः सूर्यादय से पहले ही आरम्भ कर देनी चाहिए, जिसमें समय पर सम्पन्न हो सके, भैरव साधना में सिन्दूर, लोबान, धूप, काजल का विशेष स्थान है, इसके अलावा कांसी की थाली, '**स्वर्णाकर्षण भैरव गुटिका**', '**108 भैरव शक्ति बीज**', '**रुद्राक्ष माला**', लाल पुष्प आवश्यक है। इसके साथ ही विशेष बात यह है कि साधक, साधना में आवश्यक छोटी से से छोटी सामग्री की व्यवस्था साधना अर्थात् पूजा प्रारम्भ करने से पहले ही कर लें, यह साधना प्रारम्भ करने के पश्चात् जब तक उस दिन का मंत्र जप समाप्त न हो जाए, तब तक आसन से न उठें।

स्नान कर शुद्ध लाल वस्त्र धारण कर, अपने सामने कांसी की थाली में हल्दी डालकर बीचोंबीच तिलों की ढेरी बनाकर उस पर स्वर्णाकर्षण भैरव गुटिका स्थापित करें, दोनों ओर एक-एक खड़ी सुपारी रखें। पूजा स्थान में ही तेल का दीपक, धूप और अगरबत्ती जलाएं, भैरव गुटिका के सामने काजल से एक त्रिशूल बनाकर उस पर दीपक जलाएं और अपने बाएं हाथ में जल लेकर सर्वप्रथम शरीर शुद्धि हेतु दाएं हाथ में थोड़ा जल अपने शरीर पर, थोड़ा पूजा स्थान में चारों ओर और थोड़ा अपने आसन की ओर छिड़कें, तत्पश्चात् दोनों हाथ जोड़ कर स्वर्णाकर्षण भैरव का ध्यान करें-

भैरव ध्यान मंत्र

पारिजातद्रुकान्तारे स्थिते मणिक्यमण्डपे।
सिंहासनगतं ध्यायेद्भैरवं स्वर्णदायिनम्।।
गांगेयपात्रंडमरूं त्रिशूलं वरकरैः सदधतं त्रिनेत्रम्।
देव्यायुतं तप्तसुवर्णवर्णस्वर्णाकृषं भैरवमाश्रयामः।।

अर्थात् ''माणिक्य निर्मित रत्न सिंहासन पर विराजमान, चार हाथों में क्रमशः स्वर्ण पात्र, डमरू, त्रिशूल और अभय मुद्रा धारण किये हुए, तीन नेत्रों वाले, स्वर्ण जैसी कान्ति आभा वाले, स्वर्णाकर्षण भैरव को जो साधक को स्वर्ण, धन, सौभाग्य प्रदान करने में समर्थ हैं, इस साधक का प्रणाम।''

- जीवन में अक्षय सौभाग्य प्राप्ति हेतु,
- दरिद्रता पूर्ण रूप से दूर कर,
- अक्षय निधि प्राप्त करने हेतु

यह एक श्रेष्ठतम प्रयोग है।

सर्वप्रथम भैरव का आह्वान करें-

आह्वान मंत्र

आयाहि भगवन् रुद्रो भैरवः भैरवीपते।
प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं कृपानिधि।।

सर्वप्रथम भैरव ध्यान मंत्र का उच्चारण कर अपने दोनों हाथों में एक लाल पुष्प ले कर भैरव को पुष्पांजली अर्पित करें, इस प्रकार यह पुष्पांजली पांच बार सम्पन्न करनी है, अर्थात् पांच पुष्प भैरव को समर्पित करने हैं।

पुष्पांजली समर्पण के पश्चात् भैरव को तेल से बनी कोई भी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करना चाहिए, और फिर स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र का प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। भैरव, रुद्राक्ष माला धारण करने वाले देव हैं, इस कारण '**रुद्राक्ष माला**' से ही भैरव मंत्र का जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

स्वर्णाकर्षण भैरव मंत्र

ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लूं हां हीं हूं सः वं आपदुद्धारणाय अजामलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्य-विद्वेषणाय ॐ श्रीं महा भैरवाय नमः।।

इस प्रयोग में मंत्र जप के साथ विशेष बात यह है कि प्रत्येक बार मंत्र जप के साथ ही एक भैरव शक्ति बीज, सिन्दूर में डुबो कर सामने भैरव गुटिका स्थित भैरव को अर्पित करें, इस प्रकार एक माला मंत्र जप भैरव शक्ति बीजों के साथ सम्पन्न करना है।

जब यह साधना पूर्ण हो जाए तो अपने संकल्प, मनोरथ, कामना की प्राप्ति के लिए पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए।

कई साधकों को इस प्रयोग में विचित्र अनुभव होते हैं, कई बार साधना के बीच में पूजा-स्थान पर ऐसा अनुभव होता है, कि कोई आकर बैठ गया है अथवा थोड़ी विचित्र आवाजें आती हैं, लेकिन साधक को इससे विचलित नहीं होना चाहिए। ये सब साधना के श्रेष्ठ रूप से पूर्ण होने के संकेत हैं।

साधना की पूर्णता के पश्चात् साधक को उसी स्थान पर बैठ कर, भैरव को अर्पित किया हुआ नैवेद्य ग्रहण करना चाहिए। भैरव का प्रसाद उस स्थान से बाहर ले जाना वर्जित है।

अगले मंगलवार को यह प्रयोग केवल मंत्र जप के रूप में सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रकार तीन बार यह प्रयोग सम्पन्न करने पर अनुकूलता की स्थिति प्राप्त होती है और कई समर्पित साधकों को तो साधना में पूर्णता के मध्य में ही अनायास धन-प्राप्ति होती है, आप के और धन-प्राप्ति के नये साधन प्राप्त होते हैं।

साधना सामग्री-570/-

यन्त्र चिन्तामणि में बताया गया है, कि जब जीवन के पुण्य उदय होते हैं और भविष्य कल्याणकारी होता है, तभी व्यक्ति के मन में यन्त्र प्राप्त करने या यन्त्र उत्कीर्ण करने का विचार आता है, यन्त्र का लेखन प्राचीनकाल से होता आया है और हमारे पूर्वजों ने इस बात को अनुभव किया है, कि यदि सही प्रकार से यन्त्र उत्कीर्ण हो और उसको पूरी तरह से उपयोग में लिया जाय, तो उससे श्रेष्ठ और कोई विधि-विधान नहीं है।

अद्भुत आश्चर्यजनक

पन्द्रहिया यन्त्र

ये यन्त्र दिखने में अत्यन्त सरल और सामान्य प्रतीत होते हैं, परन्तु उनका प्रभाव निश्चित रूप से अत्यधिक व्यापक और महत्वपूर्ण होता है, पन्द्रह का यन्त्र इसी प्रकार के श्रेष्ठ यन्त्रों में से एक है, जिसका उपयोग सैकड़ों वर्षों से भारतीय करते आ रहे हैं, भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी मैंने पन्द्रह के यन्त्र को उत्कीर्ण देखा है और यह अनुभव किया है कि इस यन्त्र का प्रभाव व्यापक, महत्वपूर्ण तथा श्रेष्ठ है।

पन्द्रह का यन्त्र

दरिद्रता नाश, आर्थिक उन्नति और सभी प्रकार की समृद्धि

देने वाला माना जाता है,

इसीलिए दीपावली के अवसर पर घर के मुख्य द्वार पर पन्द्रह का यन्त्र अंकित किया जाता है, व्यापारी लोग अपने बहीखातों पर दीपावली पूजन करते समय बही के प्रथम पृष्ठ पर पन्द्रह का यन्त्र अंकित कर उसे लक्ष्मी का पर्याय मान कर उसकी पूजा करते हैं, घर में किसी प्रकार की समस्या आने पर भी विद्वान लोग पन्द्रह के यन्त्र के उपयोग की सलाह देते हैं, इस दृष्टि से यह यन्त्र अत्यधिक सरल होने के साथ-साथ अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रभाव युक्त है।

यन्त्र को किसी भी सफेद कागज पर या बही पर केसर या कुंकुम से उत्कीर्ण किया जा सकता है, इसके अलावा भी कुछ विशिष्ट प्रयोग मेरे जीवन में अनुभूत हुए हैं उन्हें मैं स्पष्ट कर रहा हूँ—

2	9	4
7	5	3
6	1	8

1. इस यन्त्र को कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की कलम से सफेद कागज पर 1001 बार लिखने से जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।
2. यदि अगर की कलम से यह यन्त्र पृथ्वी पर 1000 बार लिखें तो शत्रु-भय समाप्त हो जाता है तथा बन्धन से मुक्ति प्राप्त होती है।
3. कागज पर यदि पीपल की कलम से 1000 बार उत्कीर्ण कर, लक्ष्मी के सामने रख देने से दरिद्रता का नाश होता है।

   इस प्रकार यन्त्र उत्कीर्ण करने में कुंकुम या केसर का प्रयोग किया जा सकता है।
4. गौमूत्र, कपूर और गोरोचन बराबर मात्रा में मिलाकर उसकी स्याही बनावें और पीपल के जड़ की कलम से एकान्त में बैठ कर भोज पत्र पर यदि यह यन्त्र 1000 बार उत्कीर्ण करें, तो शीघ्र ही उसे मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है।
5. बेल, हरताल और मैनसिल–इन तीनों को बराबर मात्रा में घोल कर स्याही बना दें और बड़ की कलम से कागज पर यह यन्त्र 2100 बार उत्कीर्ण करने से व्यापार में वृद्धि होती है।
6. एक सपाट पत्थर लेकर हल्दी की स्याही से पत्थर पर किसी भी कलम से एक सौ आठ बार यह यन्त्र उत्कीर्ण कर यदि शत्रु के दरवाजे के सामने गाड़ दिया जाय, तो शत्रु के घर में हर समय कलह बनी रहती है और वह निरन्तर दुखी रहता है।
7. कपूर और हल्दी बराबर मात्रा में लेकर किसी शुभ मुहुर्त में उसे भोज पत्र पर अंकित कर चांदी के ताबीज में डाल कर गले में बांध देने से बालकों से सम्बन्धित सभी रोग समाप्त हो जाते हैं और बालक स्वस्थ तथा निरोग बना रहता है।
8. सोमवार के दिन भोज पत्र पर केसर से यह यन्त्र उत्कीर्ण कर चांदी के ताबीज में डाल कर भुजा पर बांध दें तो शिक्षा में सफलता मिलती है और परीक्षा में सफल होता है।
9. जिनको सन्तान प्राप्ति की इच्छा हो, उन्हें चाहिए कि बड़ के पत्तों पर यह यन्त्र 1000 बार कुंकुम से उत्कीर्ण करें और फिर ये 1000 बड़ के पत्ते सन्दूक में रख दें और नित्य रविवार को इसके सामने दीपक लगा कर सन्तान प्राप्ति की इच्छा प्रकट करें, तो शीघ्र ही सन्तान प्राप्ति होती है।
10. यदि व्यक्ति शारीरिक रूप से कमजोर है अथवा किसी प्रकार की बीमारी हो तो उसको चाहिए, कि कुंकुम और हल्दी को मिलाकर उसके लेप से कांसी की थाली में 1008 बार इस यन्त्र को उत्कीर्ण करें तो उसी दिन से उसकी बीमारी समाप्त होने लगती है और शरीर में साहस एवं ताकत का अनुभव होने लगता है।
11. जिनको पेट सम्बन्धी बीमारी हो उन्हें चाहिए कि वे शनिवार को केले के पत्ते पर केसर से 108 बार इस यन्त्र को उत्कीर्ण करें, ऐसा करने पर पेट से सम्बन्धित रोग समाप्त हो जाते हैं।
12. सोने की कलम से, केसर द्वारा कागज पर यह यन्त्र अंकित कर फ्रेम में मढ़वा कर पूजा स्थान में रख दिया जाय तो उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।
13. **इस प्रकार का यन्त्र उत्कीर्ण कर अपने घर के गहनों के सन्दूक में, तिजोरी में या दुकान पर यह यन्त्र रख दिया जाय, तो आगे के पूरे जीवनभर वह निरन्तर उन्नति करता रहता है, और सभी दृष्टियों से सम्पन्नता और पूर्णता प्राप्त करता है।**

विशेष

यन्त्र निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा की प्रक्रिया शुद्ध रूप से ही सम्पन्न की जानी आवश्यक है, पत्रिका सदस्यों हेतु कार्यालय में पन्द्रहिया यन्त्रों का निर्माण एवं प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न किया गया है, जो पाठक यह यन्त्र प्राप्त करना चाहते हैं वे कार्यालय को पत्र भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तुतः यह यन्त्र अत्यधिक महत्वपूर्ण श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है तथा सैकड़ों-हजारों लोगों ने इसके प्रयोग से लाभ उठाया है।

इस प्रकार का यंत्र ताम्र पत्र पर एवं अंगूठी के रूप में उपलब्ध है, जिसे स्थापित करना एवं धारण करना ही अपने आप में समस्त लाभ प्रदान करता है।

साधना सामग्री- 240/-

हनुमान चालीसा

मैंने अनुष्ठान के माध्यम से शत्रुओं पर विजय, मुकदमे में सफलता और दरिद्रता पर विजय जैसे कठिन कार्य सम्पन्न किए हैं, अकारण मृत्यु निवारण, रोग मुक्ति और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए तो यह अचूक उपाय है। साधक 13.11.20 को या किसी भी मंगलवार की रात्रि को यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, यह प्रयोग पुरुष या स्त्री कोई भी अपने घर में या हनुमानजी के मंदिर में कर सकते है।

यदि साधक नित्य 21 बार हनुमान चालीसा का पाठ 11 दिनों तक करता है तो उसके मनोवांछित सभी कार्य निर्विघ्नतापूर्वक, सफल होते हैं।

दोहा : श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरणौं रघुवर विमल जसु, जो दायक फल चारि।।
बुद्धि-हीन तनु जानि के, सुमिरौं पवन कुमार। बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहि, हरहु कलेश विकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन वरन विराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केशा।।
हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बंदन।।
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लषन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुवीर हरषि उर लाये।।
रघुपति किन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भारतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
यम कुबेर दिगपाल जहां ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
युग सहस्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर कल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही। जलधि लाँघि गये अजरच नाही।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुलारे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमन बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन फल पावै।।
चारों युग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जन्म जन्म के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुवर पुर जाई। जहां जन्म हरि भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटे मिटै सब पीरा। जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाई। कृपा करहु गुरुदेव की नाई।।
जो सत बार पाठ कर जोई। छुटई बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढे हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मह डेरा।।

दोहा : पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लषन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

जड़ी बूटियों के द्वारा

आधुनिक बालाओं के लिए

ये सभी सौन्दर्य प्रसाधन तो आपके घर में हैं, आपकी रसोई में हैं, बाजारू सौन्दर्य प्रसाधन से बचिये, वे आपकी त्वचा के लिए खतरनाक हो सकते हैं...

सौन्दर्य वृद्धि के महत्वपूर्ण नुस्खे...

भारतीय सुन्दरियाँ अपने श्रृंगार और सौंदर्य की देखभाल तब से करती आ रही है,

जब न तो जगह-जगह ब्यूटी पार्लर थे और न ही ट्यूबों और शीशियों में बन्द अप्राकृतिक प्रसाधन सामग्री।

भारतवर्ष के प्राचीन ग्रन्थों और पत्थर की मूर्तियों, मुद्राओं में भी सौंदर्य चित्रण का वर्णन है।

परन्तु इन ट्यूबों और शीशियों में प्राप्त सौंदर्य प्रसाधन सामग्री अस्थायी और नकली हैं, ये कुछ समय तक तो झूठी चमक दिखा सकती है, परन्तु वास्तविक सौंदर्य तो ये ट्यूबें उजागर नहीं कर सकती, इसकी अपेक्षा यदि आधुनिकाएँ भारतीय जड़ी बूटियों का प्रयोग करें, तो वे वास्तविक सौन्दर्य को प्राप्त कर सकेंगी, जो कि अमिट, स्थायी, प्राकृतिक और मनोमुग्धकारी होगा।

सौन्दर्य प्रसाधन तो आपके घर में है, आपकी रसोई में है, बाजारू सामग्री से आप अपनी त्वचा के साथ खिलवाड़ क्यों कर रही हैं। इस सम्बन्ध में मेरे अनुभव, प्रमाणों पर आधारित है, आप स्वयं केवल पन्द्रह दिनों के लिए इन पंक्तियों पर ध्यान देकर इसका उपयोग कीजिये और दर्पण में अपने चेहरे और शरीर सौष्ठव को स्वयं आंक लीजिये, तभी आपको मेरी बात पर भरोसा आयेगा।

त्वचा का रंग निखारने के लिए

बराबर मात्रा में हल्दी और बेसन मिलाकर थोड़ा सा दूध और बादाम का तेल मिलायें। सबको एक रस कर देना चाहिए, यह उबटन हजारों शीशियों और ट्यूबों से बेहतर है, इससे आप अपने चेहरे की और हाथ पैरों की मालिश कीजिये लगभग नित्य पन्द्रह मिनट तक ऐसा कीजिये और बाद में गुनगुने पानी से चेहरे और हाथ पैरों को धो लीजिये, पन्द्रह दिन के भीतर-भीतर आपकी त्वचा का रंग निखर आयेगा, आँखों के नीचे का स्याहपन, हल्की झुर्रियाँ, चमड़ी का सूखापन मिटकर एक नवीन चमक आ जायेगी, साथ ही साथ आपका सांवला रंग भी गोरे रंग में परिवर्तित होने लगेगा, यदि आपका रंग गोरा है तो यह उबटन उसे और ज्यादा सुन्दर गुलाब की तरह महका कर रख देगा।

चमड़ी का रंग साफ करने के लिए

हमारे शरीर की चमड़ी में लाखों छोटे-छोटे छिद्र और रोम हैं, इन छेदों में धूल, गन्दगी और मैल भर जाता है, जो साबुन से भी साफ नहीं होता, इससे चमड़ी सांवली सी दिखाई देने लगती है, इसके लिए आप स्नान करने से पूर्व दूध में पूरा नींबू निचोड़ कर उसे फेंटकर पूरे शरीर पर मलिये, यह उबटन छिद्रों के अन्दर छिपे हुए मैल को बाहर निकाल लायेगा, उबटन मलने के कुछ समय बाद खुरदरे तौलिये से शरीर को रगड़ कर पोंछिये और फिर गर्म पानी से शरीर को धो डालिये, इसके बाद पुन: तौलिये से शरीर को रगड़ कर अच्छी तरह से पोंछिए जिससे चमड़ी पर हल्का गुलाबीपन लगने लगे। आप इस प्रयोग को केवल दस दिन कीजिये और देख लीजिये कि आप गुलाब पुष्प की तरह निर्मल और खिली हुई महसूस होंगी।

त्वचा में कसावट लाने के लिए

ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, त्यों-त्यों त्वचा फैलती है और उसकी कसावट में कमी आ जाती है, यदि समय रहते उपाय नहीं किये गये तो आगे जाकर चमड़ी लटकने लग जाती है, इसका श्रेष्ठतम प्रसाधन है—बादाम के पाउडर में चमेली के फूलों को घोंटकर वह शरीर पर मला जाय तो कुछ ही दिनों में लटकती हुई त्वचा में कसावट आ जाती है और पूरा शरीर सुन्दर बन जाता है, यह एक उत्तम प्रयोग है।

त्वचा को मुलायम करने के लिए

अत्यधिक गर्मी या सर्दी में रहने से चमड़ी सख्त और निर्जीव सी हो जाती है, ऐसी चमड़ी धीरे-धीरे काली पड़ती जाती है, इसके लिए रात को पानी की बाल्टी में 200 ग्राम गुलाब की ताजी पंखुड़ियाँ भिगो देनी चाहिए, सुबह उठकर पंखुड़ियाँ हटाकर उस पानी से मल कर शरीर को धोया जाय तो त्वचा नरम तथा मुलायम हो जाती है और उसका रंग निखर आता है।

चेहरे के दाग, मुंहासे व झांइयां मिटाने के लिए

लाल टमाटर के रस में नींबू निचोड़ कर थोड़ी सी मुलतानी मिट्टी मिला दें, फिर इस घोल से चेहरे को मलें, इसमें घोल को नीचे से ऊपर की ओर मलना चाहिए, लेप लगाने के बाद पन्द्रह मिनट तक इस लेप को चेहरे पर रहने दें और फिर गुनगुने पानी से धो लें, ऐसा करने पर चेहरे पर दिखाई देने वाले समस्त विकार दूर हो जाते हैं और चेहरा खिल उठता है।

बालों को झड़ने से रोकने के लिए

सिर के बाल सौन्दर्य वृद्धि में विशेष रूप से सहायक हैं, लम्बे, काले, घने और चमकदार बाल किसी के भी सौन्दर्य को खिला सकते हैं, बालों को लम्बे करने और झड़ने से रोकने के लिये मुलतानी मिट्टी को पानी में भिगोकर एक घण्टे तक रख देना चाहिए, फिर उसमें मूंगफली का तेल मिलाकर एक रस कर बालों में लगाना चाहिए, यह ध्यान रहे कि यह लेप बालों में और बालों की जड़ में पूरी तरह से लग जाना चाहिए, इसे कुछ समय तक इसी प्रकार रहने दें फिर गुनगुने पानी से बालों को धो लें, कुछ ही दिनों में बालों का झड़ना बन्द हो जायगा और बाल काले, लम्बे, घने और चमकदार बन जायेंगे।

धूप में झुलसी त्वचा को गोरी करने के लिए

धूप से वापिस घर आते ही चेहरे को धोकर उस पर दूध में खीरे का रस मिलाकर मल दिया जाय और कुछ समय तक ऐसा ही रहने दें, फिर धो लें तो धूप से झुलसी हुई त्वचा साफ हो जाती है और चमड़ी का रंग निखर आता है।

हाथ पैरों की चमड़ी को फटने से रोकने के लिए

सर्दी में काम करने से हाथ पैरों की चमड़ी फट जाती है, जो कि असुन्दर दिखाई देती है, इसके लिए पहले हाथ पैरों को गुनगुने पानी से साफ कर उस पर बादाम के तेल में नींबू का रस मिलाकर लगाने से फटी हुई त्वचा ठीक हो जाती है और चमड़ी के जोड़ का पता भी नहीं चलता।

होंठ फटने पर

दो बूंद सरसों का तेल लेकर नित्य प्रात: नाभि में मलें। कुछ ही दिनों में आप देखेंगी कि आप के होंठ फटने बन्द होकर साफ सुथरे हो गये हैं और चेहरे पर चमक आने लगी है।

इसके अलावा सौन्दर्य वृद्धि एवं स्थायी सौन्दर्य बनाये रखने के लिए पांच तत्त्वों की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए और इन नियमों का पालन करना चाहिए,

1. कम भोजन करें, जिससे पेट साफ रहे, यदि सम्भव हो तो शाम को सोते समय हरड़, बहेड़ा और आंवले का मिला हुआ चूर्ण एक चम्मच गुनगुने पानी के साथ ले लें, इससे कब्ज नहीं रहेगा और सौन्दर्य टिका रहेगा,
2. नित्य हल्का व्यायाम कीजिये, जिसमें मुख्य रूप से प्राणायाम, हलासन, चक्रासन, धनुरासन, भुजंगासन और नौकासन आवश्यक है।
3. दिनभर में कम से कम तीन लीटर पानी पीना स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य की दृष्टि से उत्तम है। नित्य 1 कच्चा आंवला खाना स्वास्थ्य एवं आँखों की रोशनी के लिए लाभदायक है। चाहें तो आंवले का मुरब्बा भी बना सकती हैं। इससे शरीर में ताकत बनी रहती है,
4. अपने सौन्दर्य के प्रति जागरुक बनी रहिये और उसकी पूरी साज संभाल रखिये।

चाय-काफी से परहेज कीजिए, नींबू-पानी की शिकंजी पीजिए।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

मौन

एक प्रसिद्ध संत थे। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी कि वह प्रश्नों के सटीक उत्तर देते हैं। एक बार एक जिज्ञासु उनके पास आया और अपने मन में उठने वाले बहुत से प्रश्नों के उत्तर संत से मांगने लगा। संत समझ गये कि इसके पास प्रश्नों का भण्डार है। संत ने कहा मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों के उत्तर दूंगा लेकिन तुम्हें इसकी कीमत चुकानी होगी। वह व्यक्ति तैयार हो गया क्योंकि अभी तक उसे कोई ऐसा नहीं मिला था, जिसने उसे उत्तर देने के लिए आश्वस्त किया हो। तब उन्होंने कहा कि तुम्हें एक वर्ष तक मेरे पास रहना होगा वह भी मौन। इसके बाद तुम्हारे सारे प्रश्नों के उत्तर दूंगा। इस दौरान तुम कोई शिकायत नहीं करोगे, चुपचाप सौंपा गया कार्य करते रहोगे, परेशानी होने पर भी कुछ नहीं बोलोगे। वह जिज्ञासु राजी हो गया। वह एक वर्ष तक उस संत के पास प्रतिकूल परिस्थितियाँ आने पर भी मौन रहा और अपना कार्य पूर्ण मनोयोग से करता रहा। इस अवधि में उसका मन शांत होता गया, विचारों का आवेग मंद पड़ गया और उसके भीतर शांति का प्रवाह होने लगा।

एक वर्ष पूर्ण होने पर उन संत ने उसे बुलाया और प्रश्न पूछने को कहा, तो वह चरणों में प्रणाम कर बोला, आपकी कृपा से मैं यह जान गया हूँ कि मन के मौन में ही सारे प्रश्नों के उत्तर छिपे हैं। अब मुझे कुछ नहीं पूछना। मैंने इस दौरान आपके अनुग्रह से सारे उत्तर पा लिए हैं।

सार तत्व यह है कि हमारे मन में सभी जिज्ञासाओं के समाधान मौजूद हैं किन्तु उन विचारों को जानने के लिए मौन रहना आवश्यक है। शांतचित्तता के अभाव में व्यक्ति बेचैन रहता है और उस उद्विग्नता में उसे उत्तर सुनाई ही नहीं पड़ते और वह उत्तर पाने हेतु बाहर भटकता रहता है।

सद्गुरुदेव ने हमेशा अपने प्रवचन में कहा कि, जिस दिन तुम शांत होकर बैठने की कला सीख जाओगे तो तुम्हारे प्रश्न स्वत: समाप्त हो जायेगे। क्योंकि तब तुम मेरी आवाज सुन सकोगे। इसीलिए उन्होंने हमें कहा कि, प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में 4 से 6 के बीच बैठकर जो प्रश्न करोगे तो तुम्हें उत्तर मिलेगा क्योंकि मैं तो उत्तर देता ही हूँ, तुम सुन नहीं पाते क्योंकि जब तक मन शांत नहीं होगा, तुम प्रश्नों का समाधान नहीं पा सकोगे।

आज मैं सोचता हूँ कि सद्गुरुदेव ने उस समय हमें अपने सानिध्य में ऐसी ही परिस्थितियों में रहने का सौभाग्य प्रदान किया, जहाँ प्रात: से रात्रि तक सिर्फ कार्य के सिवा और कुछ भी सोचने की फुर्सत नहीं होती थी, अन्दर कोई विचार आते ही नहीं थे और हम सब आनंद और मस्ती में डूबे हुये, चिंतामुक्त, शांतभाव से अपने कार्यों में डूबे रहते थे। अन्दर की शांति साधक को मौन प्रदान करती है।

जब साधक हर परिस्थितियों में शांत रहने की कला सीख जाता है तब सद्गुरुदेव की कृपा स्वत: प्राप्त होने लगती है।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष–माह का प्रथम सप्ताह सुखप्रद है। जमीन के कार्य में लाभ होगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुचि बढ़ेगी। सरकारी कार्यों को पूरा कर सकेंगे। भाइयों के परस्पर सहयोग से सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा, कर्मचारी वर्ग की पदोन्नति की संभावना है। किसी पराये के भरोसे कार्य न छोड़ें। कोर्ट केस का निर्णय आपके अनुकूल होगा। सेहत अच्छी रहेगी प्रातः भ्रमण का कार्यक्रम बनायें। माह का मध्य उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। जुए एवं सट्टे आदि में पैसे न लगायें। प्यार में सफलता मिलेगी। नवीन व्यक्ति से सम्पर्क बढेगा जीवनसाथी से मधुर व्यवहार रहेगा। अन्त की तारीखें अनुकूल न होने से परेशानी उठानी पड़ेगी। किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें, बगैर पढ़े कहीं पर हस्ताक्षर न करें। भाग्य बाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 19, 20, 21, 29

वृष–माह का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। अचानक कोई परेशानी आ सकती है। अपने ही नुकसान पहुंचा सकते हैं। गलत सोहबत के दोस्तों से दूर रहें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। बेरोजगारी से परेशान रहेंगे। जमीन-जायदाद में धोखा मिल सकता है। रुपये उधार न देवें। राह भटक सकते हैं। मेहनत पर पूरा ध्यान दें। मनोवांछित कार्य सम्पन्न होने से प्रसन्नता होगी। सुबह का भ्रमण एवं योगाभ्यास से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जीवनसाथी का साथ आत्मविश्वास बढ़ायेगा। प्रोपर्टी के कार्य में सफलता की सम्भावनाएं कम हैं। अन्तिम तारीखें चिंताएं पैदा करेंगी, दूसरों की परेशानियां स्वयं गले लगाने से परेशान रहेंगे। अन्तिम तारीख अनुकूल है, परिवार के साथ बैठकर आय स्रोत बढ़ाने की प्लानिंग करेंगे। आप ऐश्वर्य महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-4, 5, 6, 13, 14, 15, 22, 23, 24

मिथुन–माह के प्रारम्भ की तारीख उन्नतिकारक है। व्यापार में उन्नति एवं बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा। परिवार में प्रेम रहेगा। फिर अचानक कोई परेशानी आने से कार्य बनते-बनते रुक जायेंगे। शत्रु टांग अड़ायेंगे। सावधान रहें। पति-पत्नी में प्रेम की भावना रहेगी। कृषक अच्छी फसल से प्रसन्न होंगे। दूसरे सप्ताह में किसी से वाद-विवाद हो सकता है, किसी अन्य की गलती आप पर आ सकती है। शेयर मार्केट के कार्य में उतार-चढ़ाव रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। परिवार में मतभेद हो सकता है। आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो सकती हे। वाणी में मिठास से कार्य बनेंगे। आपके सोचे कार्य संतान कर दिखायेगी। आपके यहां कार्य करने वाला कोई धोखा दे सकता है। असंयमित न हों। दाम्पत्व जीवन में तनाव की स्थिति आ सकती है। आप सर्वबाधा निवारण दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 15, 16, 17, 24, 25, 26

कर्क–माह का प्रारम्भ अनुकूल परिणामों से होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। किसी भी अनजान व्यक्ति से उलझें नहीं, आवेश में न आवें। कोई झूठा आरोप लग सकता है। विद्यार्थी वर्ग अपने रिजल्ट से प्रसन्न होगा। राजनीति में सम्मान मिलेगा। सरकारी कार्यों की उलझनें दूर होंगी। किसी के साथ कहासुनी में अपमानित होना पड़ सकता है। धन फालतू के कार्यों में खर्च होगा। मानसिक परेशानी भी हो समती है। दूसरे की समस्याओं में मध्यस्थता का कार्य करेंगे। आखिरी सप्ताह में स्वास्थ्य खराब हो सकता है, बिना वजह किसी वाद-विवाद में न पड़ें। अपने ही दुःख-दर्द देंगे, वाणी पर संयम रखें। यात्रा के दौरान किसी व्यक्ति से मुलाकात होने से आपकी दिनचर्या बदलेगी। आय के अन्य स्रोत खुलेंगे। नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-1, 9, 10, 11, 17, 18, 19, 27, 28

सिंह–माह का प्रारम्भ संतोषजनक है। आप दूसरों के लिए मददगार साबित होंगे। अविवाहितों का सगाई का रिश्ता आ सकता है। रिश्तेदारों की परेशानी को लेकर स्वयं परेशान रहेंगे। शत्रुओं से सावधान रहें। व्यापार में धोखा मिल सकता है। किसी को रुपया उधार न देवें, जीवनसाथी एवं परिवार का सहयोग मिलेगा। कोई टैक्स सम्बन्धी परेशानी आ सकती है। दूसरों की भलाई उल्टा अपने लिए ही नुकसानदायक हो सकती है। अपनी समस्याओं के समाधान हेतु किसी अन्य पर निर्भर न रहें। तीसरा सप्ताह आर्थिक रूप सेअच्छा है। ऋण की वसूली होगी, परिवार का सहयोग रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्ति अच्छी जगह ट्रांसफर न होने से परेशान रहेगा। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखें। नये वाहन की खरीदारी हो सकती है। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 13, 20, 21, 29, 30

कन्या–माह का प्रारम्भ कष्टकारक है। सतर्क रहें किसी के बहकावें में आकर कहीं हस्ताक्षर न करें। मित्रों का सहयोग नहीं मिलेगा।

आलस्य से दूर रहें अन्यथा हानि होगी। परिवार में अशांति का महौल रहेगा। कड़ी मेहनत आवश्यक है, अधूरे कार्य पूरे होंगे। चित्त में प्रसन्नता रहेगी, मानसिक परेशानी दूर होगी। गलत कार्यों से दूर रहे, माह के मध्य में सोच-विचार कर निर्णय लें। नौकरीपेशा लोगों की उच्चाधिकारियों से अनबन रहेगी। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। उधार दिये पैसे वसूल नहीं होंगे। कर्मचारी वर्ग के प्रमोशन के अवसर हैं। माह के अंत में वाद-विवाद से दूर रहें। अनावश्यक दौड़-धूप रहेगी। इस माह आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-8, 9, 10, 17, 18, 25, 26, 27

तुला–माह के प्रारम्भ के दिन लाभकारी हैं। व्यापार का विस्तार हो सकता है। परिवार में भी खुशहाली रहेगी फिर फालतु के झंझटों में उलझेंगे। काम बीच में अटकेंगे। इस समय यात्रा न करें। किसी भी प्रकार के लॉटरी आदि में पैसे न लगायें। आत्मविश्वास डगमगायेगा। माह मध्य में कोई कॉन्ट्रैक्ट मिल सकता है, व्यवसाय में उन्नति होगी। शत्रु वर्ग शांत रहेंगे। अधिक उत्साह में न आयें। जोखिम वाले कार्यों से बचकर रहें। सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। माह के आखिरी दिनों में, कोई सपना पूरा होगा। जीवनसाथी से मधुर व्यवहार रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। कोई इल्जाम बेवजह आप पर आ सकता है। आप भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-7, 8, 9, 15, 16, 17, 24, 25

वृश्चिक–प्रथम सप्ताह संतोषप्रद रहेगा। पति-पत्नी के मध्य गलतफहमियाँ दूर हो जायेगी। घर में खुशी रहेगी, नया वाहन खरीद सकते हैं। यात्रा से बचें, जमीन का लेन-देन न करें। दोस्त एवं सम्बन्धियों के साथ समय व्यतीत होगा। माह के मध्य में कारोबार में नुकसान उठाना पड़ सकता है। आलस्य से दूर रहें। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में लगेगा। व्यापारिक यात्रा अब कर सकते हैं। आर्थिक परेशानियां दूर होंगी। अन्तिम सप्ताह में फैक्टी में समस्या आने से कार्य रुकेंगे, नुकसान होगा, विरोधी लोगों से सावधान रहें। इस समय संभल कर कार्य करें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। माह की अन्तिम तारीखें कामयाबी दिलायेंगी। समस्यायें हल होंगी, समय अच्छा गुजरेगा। इस माह आप भुवनेश्वरी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 9, 10, 11, 17, 18, 19, 21, 27, 28, 29

धनु–प्रथम सप्ताह सुखप्रद रहेगा। उत्साहजनक रूप से कार्य करेंगे, कामयाबी हासिल करेंगे। कोई महत्वपूर्ण समाचार खुशी देगा। अविवाहितों का विवाह सम्भव है। बिना वजह किसी के बीच न पड़ें। दूसरे सप्ताह में परेशानी आ सकती है। अनावश्यक खर्च से परेशान रहेंगे। शत्रु वर्ग से सावधान रहें। लालच एवं खुदगर्जी पूर्ण कार्यों से बचें। भरोसेमंद लोग ही धोखा दे सकते हैं। मुकदमे का निर्णय अनुकूल रहेगा। किसी के सामने झुकेंगे नहीं। माह के मध्य में सावधान रहें। वाहन सम्भल कर चलायें। वैवाहिक जीवन में परेशानियां रहेंगी। कोई अपना बीमार हो सकता है। जीवन साथी एवं संतान का वांछित सहयोग मिलेगा। आखिरी सप्ताह में भी सावधान रहने की जरूरत है, अचानक कोई जिम्मेदारी आ सकती है, रिश्तेदारों से खटपट हो सकती है। आप बगलामुखी सायुज्य महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 13, 19, 20, 21, 29, 30

मकर–माह की शुरूआत में काम-धंधे में हानि हो सकती है। परिवार में उदासी का वातावरण रहेगा, परिस्थितियों में सुधार होगा। सफलता

सर्वार्थ सिद्धि योग	-	नवम्बर 2, 4, 5, 6, 8, 12, 14 16, 20, 26, 27, 30
रवियोग	-	नवम्बर 7, 17, 19, 20, 24, 25, 28
रवि पुष्य योग	-	नवम्बर 8 (प्रातः 6.56 से 8.45)

मिलेगी। आर्थिक वृद्धि होगी, जमीन खरीद के कार्य में लाभ के अवसर हैं। सावधान रहें, शत्रु हावी होंगे, गलत सोहबत के दोस्तों से दूर रहें, नशीले पदार्थों से दूर रहें। अधिकारी वर्ग सन्तुष्ट रहेगा। वाहन धीमी गति से चलायें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। बहकावे में आकर परेशानी में पड़ सकते हैं। व्यापारिक यात्रा लाभप्रद होगी। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। विरोधियों को परास्त करने में सफल होंगे। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेगा। दूसरों की भलाई के चक्कर में अपना अहित कर लेंगे, राह भटक सकती है। आप मातंगी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-4, 5, 6, 13, 14, 22, 23, 24

कुम्भ–माह का प्रारम्भ खुशनुमा रहेगा, समस्यायें सुलझेंगी। आगे बढ़ने के लिए अच्छा समय है। दूसरों की समस्याओं में पड़ने से मन अशांत रहेगा, स्वास्थ्य भी खराब हो सकता है। सरकार की ओर से सम्मान मिल सकता है। नये रिश्ते बनेंगे विवाह भी सम्भव है। अनावश्यक खर्चों की अधिकता रहेगी। दूसरों की समस्या में न उलझें। कोई छुपा राज खुल सकता है। यात्रा लाभकारी होगी। आकस्मिक धनप्राप्ति हो सकती है। कानून में फंसकर मान-मर्यादा को ठेस लग सकती है। शत्रु परेशान करेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक हो जायेगी। अटके हुए पैसे वसूल होंगे। साहस एवं मनोबल बढ़ेगा। आखिरी तारीखों में अड़चन आ सकती है। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य अटकेंगे। आप बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 13, 19, 20, 21, 30

मीन–माह का प्रारम्भ अच्छा है। मित्रों के सहयोग से कारोबार में उन्नति होगी, रुकावटें कम होंगी। गलतियों को दोहराये नहीं। व्यापार की योजना भविष्य में लाभ देगी। शत्रु को जवाब देने में सक्षम होंगे। रुके काम पूरे होंगे। अचानक किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आर्थिक स्थिति पर भी असर पड़ेगा, सावधानी रखें एवं सोच-विचार कर कार्य करें। माह के मध्य में परिवार में सहयोग रहेगा। व्यापारिक यात्रा हो सकती हे। मित्रों का सहयोग मिलेगा, जिसका भला करेंगे वही हावी होगा। आखिरी सप्ताह में सावधान रहें, कोई नई खरीदारी न करें। कदम सोच-समझकर उठायें, बदनामी हो सकती है। कोर्ट-कचहरी में परिणाम अनुकूल होंगे। नौकरीपेशा लोगों का प्रमोशन हो सकता है। नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ-1, 9, 10, 11, 17, 18, 27, 28, 29

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

01.11.20	रविवार	कार्तिक मास प्रारम्भ
04.11.20	बुधवार	करवा चौथ
13.11.20	शुक्रवार	धन त्रयोदशी/धन्वन्तरी जयंती
14.11.20	शनिवार	रूप चतुर्दशी
14.11.20	शनिवार	दीपावली पर्व
16.11.20	सोमवार	भाई दूज/यम द्वितीया
19.11.20	गुरुवार	ज्ञान जयंती
20.11.20	शुक्रवार	सूर्य षष्ठी
23.11.20	सोमवार	अक्षय नवमी
25.11.20	बुधवार	हरि प्रबोधिनी एकादशी
30.11.20	सोमवार	कार्तिक पूर्णिमा

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (नवम्बर 1,8,15,22,29)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (नवम्बर 2,9,16,23,30)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (नवम्बर 3,10,17,24)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (नवम्बर 4,11,18,25)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरुवार (नवम्बर 5,12,19,26)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (नवम्बर 6,13,20,27)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (नवम्बर 7,14,21,28)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सङ्क ल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

नवम्बर 2020

11. सुबह गायत्री मंत्र का 11 बार उच्चारण करके घर से जाएं।
12. भगवान श्रीकृष्ण को एक पीला पुष्प चढ़ायें।
13. आज धन त्र्योदशी पर पत्रिका में दी गई साधना करें।
14. आज प्रातः स्नानकर गुरु मंत्र की 8 माला जप करें एवं महालक्ष्मी के सामने घी का दीपक जलायें।
15. भगवान नारायण को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण करें।
16. आज महामृत्युंजय मंत्र का 5 बार उच्चारण करके जाएं।
17. हनुमान चालीसा का एक पाठ करके जाएं।
18. तुलसी के पौधे में जल समर्पित कर प्रदक्षिणा करें।
19. आज पूरे परिवार के साथ बैठकर 5 मिनट निम्न मंत्र का जप करें-

    ।। ॐ ऐं ॐ ।।
20. आज सूर्य षष्ठी है, भगवान सूर्य को अर्घ्य दें एवं अर्घ्य स्थान की पांच परिक्रमा करें।
21. आज गुरु मंत्र जप के बाद सामर्थ्यानुसार गुरु सेवा कार्य का संकल्प लें।
22. आज अक्टूबर पत्रिका में प्रकाशित दुर्गा स्तोत्र का पाठ करके जाएं।
23. गुरु गीता के श्लोक 1 से 10 तक का पाठ करके जाएं।
24. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
25. पान के पत्ते पर कोई मिठाई रखकर भगवती पार्वती को अर्पित करें।
26. आज केले के या पीपल के वृक्ष में जल अर्पित करें।
27. तुलसी के पौधे के पास घी का दीपक जलायें।
28. मन ही मन भगवान गणपति का ध्यान करके बाहर जाएं।
29. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-

    ।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।
30. आज कार्तिक पूर्णिमा है, पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2020

1. बजरंग बाहु (न्यौछावर 90/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होंगी।
2. आज प्रातः उठते ही उत्तर दिशा को प्रणाम कर दिन का प्रारम्भ करें।
3. पारद मुद्रिका (न्यौछावर 210/-) धारण करें, रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे।
4. आज कोई अप्सरा साधना सम्पन्न कर सकते हैं।
5. आज शनि मुद्रिका (न्यौछावर 150/-) धारण करें।
6. प्रातः स्नान कर गुरु गुटिका (न्यौछावर 150/-) धारण करें।
7. आज भैरव जयंती है, पत्रिका में प्रकाशित विशिष्ट साधना करें।
8. किसी हनुमान मन्दिर में बेसन के लड्डुओं का भोग लगाकर बच्चों में बांट दे।
9. पांच बत्ती का दीपक पूजा स्थान में जलायें।
10. आज गुरु समर्पण स्तुति करके बाहर जायें।

निम्न साधना से सभी

आवासीय बाधाओं से

मुक्ति मिल सकती है।

गृहलक्ष्मी तो आपके साथ है

लेकिन आपका स्वयं का घर भी तो हो !!!

गृहस्थ जीवन का आधार है

गृहलक्ष्मी

श्रेष्ठ गृह और उसी से बनती है

श्रेष्ठ गृहस्थी !!!

वसुधा लक्ष्मी साधना

संसार में सबसे कठिन धर्म गृहस्थ धर्म निभाना है, गृहस्थ धर्म अनेक व्यवस्थाओं, बंधनों में जकड़ा हुआ अवश्य रहता हैं, लेकिन इसके साथ ही परमात्मा और प्रकृति की निरन्तर रचना अभिवृद्धि गृहस्थ के माध्यम से ही संभव है। गृहस्थ के जीवन में पग-पग पर समस्याएं अवश्य आती है। उसके जीवन का प्रत्येक दिन कुरुक्षेत्र के समान होता हैं। प्रत्येक गृहस्थ अपने जीवन में तीन इच्छाएं अवश्य रखता है। प्रथम श्रेष्ठ पत्नी हो जिसे गृहलक्ष्मी कहा जाता है, दूसरी इच्छा यह रहती है कि उसका स्वयं का अपना घर हो, और तीसरी इच्छा श्रेष्ठ संतान हो। मनुष्य अपने स्वअर्जित धन से भूमि खरीदता है और उस पर अपना स्वयं का भवन, मकान बनाता है। तो उसके मन में प्रसन्नता सहस्त्र गुणा हो जाती हैं। लोकोक्ति में कहा भी गया है कि किराये के महल से खुद की झोपड़ी अच्छी होती है।

मनुष्य के जीवन में जमीन, घर उसके कर्म और भाग्य दोनों पर निर्भर अवश्य करते हैं। आइए ज्योतिषीय दृष्टि से विचार करते है कि ग्रहों की स्थिति ग्रहदशा किस प्रकार की होती है तब जीवन में भूमि क्रय के योग बनते है और कब जीवन में भवन निर्माण के योग बनते है।

ज्योतिषीय दृष्टि से भूमि क्रय करने के योग

1. द्वितीयेश बुध उच्च का होकर पंचमभाव में स्वयं सूर्य के साथ स्थित हो तथा भाग्यभाव का स्वामी शनि दशम भाव में स्थित हो तो इन्हीं ग्रहों की महादशा अंतरदशा में भूमि क्रय होगा।
2. तुला लग्न में शनि और केतु स्थित हो तथा मंगल उच्च का होकर चतुर्थ भाव में और बृहस्पति के साथ चन्द्रमा गजकेशरी योग बनाता हो तो शनि अथवा बृहस्पति और मंगल के संयोग के समय भूमिक्रय संभव है।
3. उच्च का राहु यदि कुंडली में हो और द्वितीयेश, चतुर्थेश, भाग्येश प्रबल हो तो भूमि का क्रय संभव है।
4. उच्च का शुक्र और स्वयं राशि का शनि हो, द्वितीय भाव बलवान हो तो खेती अथवा बाग-बगीचे की भूमि खरीदना संभव होता है।
5. द्वितीय भाव में मेष का सूर्य और सूर्य से बारहवें तथा दूसरे भाव में चन्द्रमा, राहू और केतु के अतिरिक्त कोई ग्रह हो तो भूमिक्रय संभव होता है।
6. चतुर्थ भाव में बृहस्पति उच्च का होकर दशमभाव में और चन्द्रमा उच्च का होकर द्वितीय भाव में तथा सूर्य आयभाव में बुध के साथ हो तो श्रेष्ठ भूमि का स्वामित्व प्रदान करता है।
7. जन्म पत्रिका में उभयचरी योग गजकेसरी योग के साथ हो दो ग्रह उच्च के अथवा स्वयं राशि के हो तो जातक भूमि खरीदने में अथवा उत्तराधिकार में प्राप्त करने में सफल होता है।
8. लग्न में बुध और मंगल हो और उस पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तथा द्वितीयेश की पूर्ण दृष्टि भी ऐसे मंगल पर पड़ रही हो तो भूमि खरीदना संभव होता है।
9. द्वितीय भाव में उच्च का बृहस्पति चन्द्रमा के साथ और भाग्य भाव में अपनी ही राशि का शनि केतु के साथ हो, लग्न में बुध आदित्य योग हो तो भूमि खरीदना संभव हो पाता है।

भवन निर्माण करने के योग

1. द्वितीय भाव में स्व: राशि अथवा उच्च का चन्द्रमा स्थित हो उस पर बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो, चतुर्थ भाव का स्वामी भी उच्च का होकर अथवा स्व:राशि का होकर भाग्येश, लग्नेश और पंचमेश बलवान हो तभी भवन निर्माण संभव हो पाता है।
2. भवन निर्माण करने के लिए जन्म चक्र में केमद्रुम योग नहीं होना चाहिए अन्यथा मकान बनाकर के भी गंवाना अथवा बेचना पड़ जाता है।
3. जिसकी कुंडली में शनि के द्वारा चन्द्रमा, अनफा-सुनफा योग बनता है और उसके साथ ही दुर्धरा योग भी हो और शुक्र प्रबलकारक ग्रह हो तभी मकान निर्माण संभव होता है।
4. लग्नाधिपति, धनेश, आयेश, चतुर्थेश और भाग्येश के अनुकूलतम सहयोग और प्रबल कारकत्व में भवन निर्माण संभव होता है।
5. चन्द्रमा से तीसरे स्थान पर मंगल हो, मंगल से सातवें भाव में शनि हो, शनि से सातवे भाव में शुक्र हो और शुक्र से सातवें भाव में चन्द्रमा युक्त बृहस्पति हो अथवा चन्द्रमा से दृष्ट बृहस्पति हो साथ ही महादशा भी अनुकूल हो तो व्यक्ति श्रेष्ठतम भवन निर्माण करता है। भारत के श्रेष्ठतम महलों और मंदिरों आदि का निर्माण ऐसे ही समय में किया गया है।
6. यदि सूर्य से दूसरे भाव में बुध हो, बुध से 11वें भाव में चन्द्रमा और चन्द्रमा से पांचवे या नवे भाव में बृहस्पति हो ऐसे समय में खरीदा गया अथवा बनाया गया मकान इतना शुभ होता है कि भवन स्वामी उसके बाद मकान पर मकान बनाता चला जाता है और उसे पीछे मुड़कर कभी नहीं देखना पड़ता।
7. केन्द्र या त्रिकोण में चार ग्रह यदि उच्च के हो तथा केमद्रुम योग न हो तो भवन निर्माण संभव है।
8. दूसरे भाव का स्वामी बृहस्पति उच्च का होकर नवमभाव में स्थित हो तथा दशम स्थान का स्वामी बुध के साथ स्थित हो तो श्रेष्ठ भवन निर्माण होता है।
9. पंचम और नवम भाव के स्वामी केन्द्र में हों और उन पर बुध, चन्द्र, बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही हो और कालसर्प योग न हो तो श्रेष्ठ भवन निर्माण होता है।
10. द्वितीय स्थान में उच्च का शुक्र हो और पंचम स्थान में उच्च का राहु, भाग्य भाव में उच्च का शनि हो तो श्रेष्ठतम भवन का निर्माण संभव होता है।

ज्योतिष और भूलक्ष्मी

वृहद पाराशर संहिता जो कि ज्योतिष ज्ञान के संबंध में आधारभूत ग्रंथ है उस ग्रंथ में भवन और भूमि के संबंध में कई विशेष बातें कही गई है।

1. जातक की जन्मपत्रिका में लग्नेश, द्वितीय, चतुर्थेश, भाग्येश ग्रह बलवान हो तो व्यक्ति भूमि और भवन अधिपति होता है।
2. धनभाव अर्थात द्वितीय भाव का स्वामी ग्रह कारक ग्रह होकर यदि उच्च भाव का अथवा स्वराशि का स्थित हो तो व्यक्ति अपने जीवन में श्रेष्ठ भवन का स्वामी बनता है।
3. लग्नेश और भाग्येश का आपसी संबंध है और दोनों मित्र ग्रह हो तो भवन निर्माण की स्थिति बनती है।
4. सारांश के रूप में कहना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में स्वयं का भवन निर्माण अथवा बना बनाया भवन क्रय हेतु निरन्तर प्रयत्नशील अवश्य रहे।
5. जो व्यक्ति नया भवन बनाते हैं उन्हें वास्तु शास्त्र के अनुसार निर्माण करना चाहिए जो व्यक्ति बना बनाया भवन खरीदते है उन्हें गृहप्रवेश के समय वास्तु देव का विशेष पूजन नवग्रह पूजन, गुरु पूजन कुल देवता पूजन अवश्य ही सम्पन्न कराना चाहिए।

इस हेतु आप निम्न साधना सम्पन्न करें

वसुधा लक्ष्मी सिद्धि

25.11.20 यो किसी भी बुधवार को प्रात: अपनी दैनिक साधना पूर्ण कर पीले रंग के सूती आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठें, अपने सामने एक थाली पर कुंकुम से स्वास्तिक बनाएं स्वस्तिक में चार सुपारी स्थापित करें मध्य में अक्षत की ढेरी बनाकर उसमें पुष्प रखें पुष्प के ऊपर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त भूमि सिद्धि भवन सिद्धि प्राणश्चेतना मंत्रों से अनुप्राणित वसुधा लक्ष्मी यंत्र स्थापित करें।

सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर लक्ष्मी का ध्यान करें

यावच्चद्रश्च सूर्य्यश्च यावद् देवा वसुन्धरा। तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव।।1।।
यावद् ब्रह्मादयो देवामनुभुंज चतुर्दश। तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव।।2।।
यावत् तारागणाकाशे यावद् इन्द्रादयोऽमरा:। तावन्मम गृहे देवि अचला सुस्थिरा भव।।3।।

विनियोग

ॐ अस्य श्री पृथ्वी मंत्रस्य वाराह ऋषि: निवृच्छंद: वसुधा देवता,
सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोग:।

इसके पश्चात अपनी मनोकामना दोनों हाथ जोड़कर सद्गुरु के समक्ष व्यक्त करें। बायें हाथ में स्वस्तिक पर रखी चारों सुपारी मुट्ठी में रखकर दाहिने हाथ से 'वसुधा सौभाग्य नीली हकीक माला' से निम्न मंत्र की चार माला मंत्र जप करें।

।। ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे धरे स्वाहा ।।

साधना के समय इस बात का ध्यान रखें कि बायें हाथ में चारों सुपारी कसकर पकड़ी हुई रहे मंत्र जप के पश्चात् माला को यंत्र के सामने रख दें। चारों सुपारी को बायें हाथ से दाहिने हाथ में लेकर मुट्ठी बांध कर अपने सिर पर चार बार घुमाएं और किसी चौराहें पर जाकर चारों दिशाओं में ये चारों सुपारी फेंक दें।

इस प्रकार यह साधना चार बुधवार सम्पन्न करनी है हर बार नया स्वस्तिक बनाकर नई सुपारी प्रयोग में लानी है चार बुधवार बाद ये साधना सम्पन्न कर लक्ष्मी आरती अवश्य सम्पन्न करें और यंत्र एवं माला वरुण देवता अर्थात जल में समर्पित कर दें। यह एक अत्यंत सिद्धिदायक श्रेष्ठ प्रयोग है जिससे भूमि एवं भवन संबंधी मनोवांछित कार्यों में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

साधना सामग्री- 450/-

सोमवती अमावस्या-14.12.20
स्वप्नेश्वरी साधना
भूत
भविष्य
वर्तमान
ज्ञात हो सकता है
स्वप्नेश्वरी साधना से
मनुष्य जीवन विभिन्न प्रकार के नियमों से बंधा रहता है, ये बन्धन-जो कि
सामाजिक बन्धन, नैतिक बन्धन, कर्तव्य बन्धन
इत्यादि होते हैं,
उनके फलस्वरूप व्यक्ति जिन इच्छाओं को पूर्ण करना चाहता है, वास्तविक जीवन में पूर्ण नहीं हो पाती हैं
और उसकी ये इच्छाएं स्वप्न-अवस्था में पूर्ण होती हैं, जैसे एक निर्धन व्यक्ति स्वप्न में अपने आपको
अत्यधिक धनी अथवा लॉटरी का मालिक इत्यादि देखता है अथवा पढ़ाई में अत्यन्त आलसी,
कमजोर छात्र अपने को उच्च श्रेणी में पास हुआ देखता है।

दूसरे प्रकार के स्वप्न अद्‌भुत एवं अपूर्ण होते हैं, जो वास्तविक जीवन में सम्भव नहीं होते हैं, जैसे अपने-आप को उड़ता हुआ देखना, अद्‌भुत प्रकार के पशु-पक्षी देखना या ऐसी घटनाएं जो कि सामान्य रूप से सम्भव नहीं हैं।

स्वप्नों का विवेचन

स्वप्नों के सम्बन्ध में जो अब तक का वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है, उससे यह स्पष्ट हो चुका है, कि जहाँ कुछ स्वप्न कल्पनाजन्य रहते हैं, वहीं कई स्वप्नों का वास्तविक जीवन से गहरा सम्बन्ध रहता है, स्वप्न में जो वस्तु इत्यादि दिखती है, उसका मनुष्य के जीवन से विशेष सम्बन्ध रहता है, ये सभी वस्तुएँ आने वाले जीवन की कुछ विशेष घटनाओं को स्पष्ट करती हैं।

स्वप्न एक प्रकार से भविष्य सूचक होते हैं और जो व्यक्ति स्वप्न सम्बन्धी साधना को सिद्ध कर लेता है, उसे ऐसा ज्ञान हो जाता है, जिसके माध्यम से वह अपने अलावा दूसरों की समस्या भी हल कर सकता है, जाग्रत अवस्था में जो परिणाम वह नहीं बता पाता है, इस साधना को सम्पन्न करने के पश्चात उसे वह ज्ञान प्राप्त हो जाता है, जिसके माध्यम से वह भविष्य सम्बन्धी घटनाएं स्पष्ट देख सकता है।

कई योग्य साधकों को मैंने यह साधना सम्पन्न कराई है और इसका परिणाम अत्यन्त श्रेष्ठ रहा है, जो साधक ऊंचे स्तर की साधना नहीं कर पाते हैं, उन्हें स्वप्नेश्वरी साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे कि वे जीवन में स्वयं का तथा दूसरों का कल्याण कर सकें।

साधना-विधि

यह साधना 14.12.20 या किसी भी सोमवार को प्रारम्भ की जा सकती है, पांच दिन की इस साधना में नित्य प्रति 101 माला जप आवश्यक है और यह जप साधना केवल 'हकीक माला' से ही सम्पन्न करना चाहिए, प्रथम दिन प्रात: प्रारम्भ कर मन्त्र-जप आधा दिन को (अर्थात् 101 मालाओं में से भी आधी मालायें दिन को) तथा शेष आधा मन्त्र जप रात को जप कर सकते हैं।

इस साधना के लिए मन्त्र-सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'स्वप्नेश्वरी यन्त्र और स्वप्नेश्वरी देवी-चित्र' आवश्यक है, यन्त्र ताम्र पत्र पर भी हो सकता है अथवा ताबीज रूप में भी, स्वप्नेश्वरी देवी के चित्र को, जो कि मन्त्र सिद्ध हो, फ्रेम करवा कर मढ़वा लेना चाहिए तथा पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए, इसके अतिरिक्त साधना प्रारम्भ करने से पूर्व चावल कुंकुम, केसर, जल का लोटा, दीपक, अगरबत्ती, कच्चा दूध, पीला रेशमी वस्त्र, नैवेद्य-प्रसाद आदि की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

सोमवार को प्रात: साधक अथवा साधिका स्नान कर शुद्ध धोती इत्यादि पहिन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठें, सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त स्वप्नेश्वरी देवी यन्त्र तथा स्वप्नेश्वरी देवी चित्र स्थापित करें, इसके बाद एक अलग पात्र में स्वप्नेश्वरी देवी यन्त्र को पहले जल से धो कर चित्र के पास स्थापित कर दें तथा कुंकुम केसर आदि से तिलक करें, सामने अगरबत्ती तथा धूप एवं दीपक जला कर दूध का प्रसाद अर्पित करें और पूर्ण हृदय से ध्यान करें।

ध्यान

स्वप्नेश्वरी नमस्तुभ्यं फलाय वरदाय च।
मम सिद्धिं सिद्धिं वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शय:।।

फिर नीचे लिखे मन्त्र की 101 मालाएं नित्य जपें।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वप्नेश्वरी ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं ॐ।।

इस प्रकार पांच दिन तक नित्य 101 माला मन्त्र जप करना है और इन पांचों दिनों तक साधक को जमीन पर शयन करना आवश्यक है।

इसके पश्चात छठे दिन साधक पांच कुंवारी कन्याओं को भोजन करा कर अपनी साधना को पूर्ण माने और इस यन्त्र को धारण कर लें।

साधना का विशेष प्रयोग

यह जांच करना अत्यन्त आवश्यक है, कि इस साधना में सफलता प्राप्त हुई है अथवा नहीं, साधक उस विशेष रात्रि को अपनी बांह में यह विशेष स्वप्नेश्वरी यन्त्र बांध कर सोये तथा सोने से पहले अपने सिरहाने कागज पर अपनी समस्या पूर्ण रूप से लिखकर रख दे और सोने से पूर्व दिया गया स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान अवश्य करे, रात्रि में सिद्ध साधक को स्वप्नेश्वरी देवी स्वप्न में आ कर इस समस्या का समाधान अवश्य बता देती है, जिससे कि साधक को यह ज्ञान हो जाता है, कि उसे किस प्रकार से अपनी समस्या को सुलझाना है।

इसके अतिरिक्त इस प्रयोग को, यदि कोई कार्य प्रारम्भ करने जा रहे हों—चाहे वह साझेदारी का व्यापार हो अथवा लेन-देन हो अथवा भविष्य से सम्बन्धित कोई भी प्रश्न हो, उस प्रश्न को स्पष्ट रूप से लिख कर सिरहाने रख देना चाहिए तथा ऊपर दी गई विधि से स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान करना चाहिए, स्वप्न में साधक को स्पष्ट रूप से दिशा निर्देश प्राप्त होते हैं, कि उसे इस सम्बन्ध में क्या करना चाहिए। स्वप्नों का संसार अत्यन्त विस्तृत एवं विचित्र है, स्वप्न स्पष्ट रूप से भविष्य दृष्टा है, जिनके माध्यम से आने वाली घटनाओं का पूर्व संकेत प्राप्त होता है, कौन से स्वप्न किस कार्य को स्पष्ट करते हैं, यह बहुत गहन विस्तृत विषय है।

वस्तुत: स्वप्नेश्वरी साधना अत्यन्त सरल है, और साधना में रुचि रखने वाले प्रत्येक साधक को यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

—साधना सामग्री- 450/-

सिद्ध मुहूर्त

सोमवती अमावस्या

पर सम्पन्न करें

आकस्मिक धन आगमन

प्रयोग

व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक आवश्यकता धन की होती है, क्योंकि धन की वजह से ही व्यक्ति अपनी समस्त इच्छाओं को तृप्त कर सकता है। धन हो तो व्यक्ति का मान-सम्मान, आदर होता है, पर उसके अभाव में कई मुश्किलें सामने आ जाती हैं।

लोग धन के लिए परिश्रम करते हैं, परन्तु मात्र शारीरिक परिश्रम से ही धन प्राप्त होता, तो सारे मजदूर तो कभी के लखपति हो गए होते....

व्यक्ति के जीवन में स्थिति ऐसी होनी चाहिए, कि खर्च के बावजूद भी कहीं न कहीं से धन का आगमन जीवन में होता ही रहे। इसके लिए निम्न प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है-

- यह प्रयोग सायं 7 बजे प्रारम्भ करना चाहिए।
- इसके लिए स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठें और अपने सामने 'धनेश यंत्र' स्थापित कर उसका अक्षत चढ़ा कर पूजन करें।
- फिर उसके सामने निम्न मंत्र का 45 मिनट तक जप करें-

।। ॐ ह्रीं आकस्मिक धन प्राप्तये ह्रीं ॐ।।

- मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र पर एक 'लक्ष्मी फल' अर्पित कर प्रयोग को पूर्णता प्रदान करें।
- अगले दिन यंत्र और गुटिका को किसी नदी या जलाशय में अर्पित कर दें।
- ऐसा करने से प्रयोग सम्पन्न होता है और 21 दिनों के अंदर-अंदर साधक को लाभ अनुभव होने लगते हैं।

न्यौछावर-300

नवग्रह साधना

जिससे आप अपने ग्रहों को अनुकूल कर सकते हैं
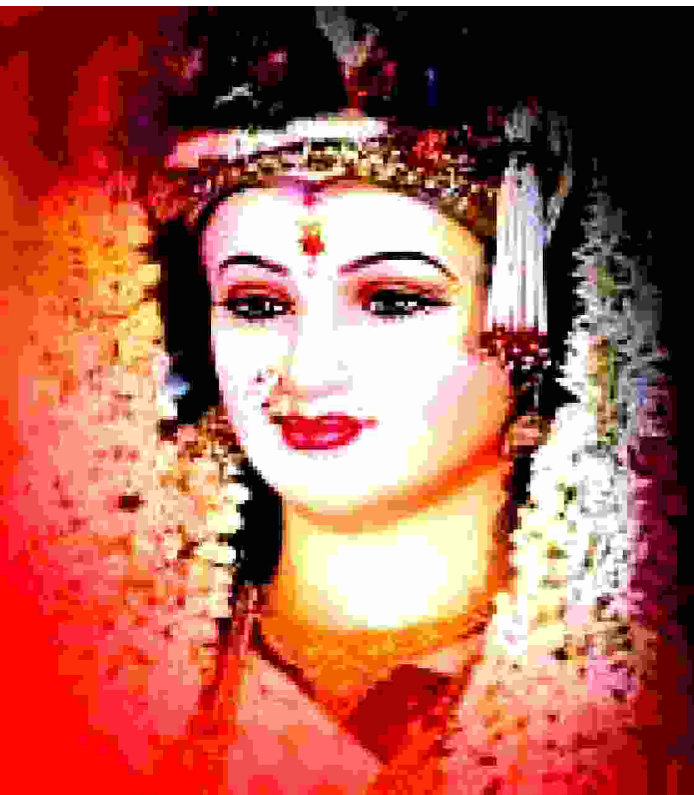
यह तो सभी को मालूम है कि आकाश मण्डल में प्रमुख नौ ग्रह हैं और उन नौ ग्रहों का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है। इन्हीं नौ ग्रहों की शक्तियाँ हमारे जीवन को संचालित भी करती है। अतः यदि हम एक साथ ही इन नौ ग्रहों की उपासना कर लें तो हमारे जीवन में इनकी अनुकूलता हमें प्राप्त हो सकती है। अब आप स्वयं सोचिए कि इन ग्रहों में से आप के जीवन में किस ग्रह के गुणों की चेतना की आवश्यकता नहीं है, मेरे अध्ययन के अनुसार तो प्रत्येक ग्रह की चेतना और उसका प्रभाव हमारे शरीर में व्याप्त होना चाहिए और इसके लिए आवश्यक है कि हम इन सभी ग्रहों के बीच सामंजस्य बिठा सकें, जिससे जीवन के सभी पक्षों का विकास हमारे जीवन में हो सके।

आप किसी ज्योतिषी के पास जाते हैं और वह आपकी जन्म-कुण्डली देख कर कहता है कि आप माणिक्य धारण करो। कोई ज्योतिषी कहता है आप पुखराज धारण करो और कोई कहता है कि उन्नति के लिये शुक्र ग्रह का रत्न हीरा धारण करो। अब आपके लिए रत्न अलग बताता है, पत्नी के लिए रत्न अलग बताता है, संतान के लिए रत्न अलग बताता है। आप भ्रमित हो जाते हैं कि आप क्या करें, जितने ज्योतिषियों के पास जाते हैं उतनी ही अलग-अलग राय मिलती है और सबसे बड़ी बात यह है कि गलती से आप रत्न खरीद कर ले आये तो ज्योतिषी कह देता है कि यह रत्न तो साफ नहीं है, शुद्ध नहीं है। आप रत्नों के पारखी नहीं और आपकी परेशानी और अधिक बढ़ जाती है।

• करें तो क्या करें ?

आपको जीवन में रत्न चाहिए, आपको अपने जीवन में प्रत्येक ग्रह के गुण चाहिए। आपको अपने जीवन में पत्नी और परिवार की अनुकूलता भी चाहिए। सबके लिए रत्न खरीदना संभव नहीं। इसके लिए सबसे श्रेष्ठ उपाय है कि आप '**मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त नवरत्न मुद्रिका**' धारण करें। जिसमें सारे रत्न, माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, गोमेद, लहसूनिया, पुखराज, हीरा और नीलम सब जड़े हुए हो। जब सब ग्रहों के रत्न से युक्त मुद्रिका होगी तो आकाशमण्डल स्थित ग्रह और आपके शरीर स्थित ग्रह अपने आप एक सामंजस्य स्थापित कर लेंगे।

आप अपने परिवार के मुखिया हैं, कमाने वाले हैं, घर के इंचार्ज हैं, आपसे आपके घर–परिवार को जाना जाता है न कि आपकी पत्नी या आपके बच्चे से आपको जाना जाता है। इसलिए यह नवरत्न मुद्रिका आपको धारण करनी आवश्यक है। यह आवश्यक नहीं कि आप स्वयं भी धारण करें और पत्नी को भी धारण करायें, बच्चों को भी धारण करायें।

गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि 'एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाये' और 'जो तु सीचें मूल को तो फल काय न होय' अर्थात् एक को साधने से ही सब साधन सिद्ध हो जाते हैं और मूल अर्थात् जड़ को यदि हम पानी, खाद देते हैं तो वृक्ष के फल लगते ही हैं। पत्तों को जल देने से वृक्ष पर फल नहीं लग सकते। हजार जगह भटकने से मन को शांति नहीं मिल सकती। हजार गुरु बनाने से शिष्यता नहीं आ सकती। हजार व्यक्तियों का कहना मानकर आप अपना कोई निर्णय नहीं ले सकते हैं। इससे तो आपका स्वयं का व्यक्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार बार–बार रत्न बदलने से दस–दस अंगूठियाँ पहनने से ग्रह दोष शांत नहीं हो सकता, ग्रहों के गुण तेजस्विता नहीं आ सकती। इसके लिये केवल एक ही उपाय है कि आप मंत्र–सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न मुद्रिका धारण करें।

आवश्यकता इस बात की है कि यह नवरत्न मुद्रिका प्रत्येक ग्रह के मंत्रों से अभिमंत्रित हो, शिव अभिषेक युक्त हो तथा शुद्ध मुहूर्त में निर्माण कर, शुद्ध मुहूर्त में ही धारण की जाए।

नवरत्न मुद्रिका एक मुद्रिका नहीं है, यह तो आपकी जन्म कुण्डली है, आपका जीवन चक्र है। जिसको धारण करने से ही ग्रहों की गति और उनका प्रभाव आपके अनुकूल हो जाता है और मेरा निश्चित विश्वास है कि आपको पहले दिन से ही अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन अनुभव होने लगता है क्योंकि नवरत्न मुद्रिका धारण करें और उसका प्रभाव नहीं हो ऐसा हो ही नहीं सकता।

अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन में नवरत्न मुद्रिका कब धारण करते हैं। मैंने तो आपके लिये कुछ नवरत्न मुद्रिकाएं मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त की हैं। इससे अधिक मैं आपको क्या सलाह दे सकता हूँ।

धारण विधान

इस विधान को किसी गुरुवार या रविवार को सम्पन्न करें। इसके लिए '**नवग्रह मुद्रिका**' को धारण करने से पूर्व इसका पूजन अनिवार्य है। इसमें सभी ग्रहों के मन्त्रों से यह मन्त्र सिद्ध होती है और पूरे जीवनभर के लिए उपयोगी होती है, ग्रह दोष निवारण हेतु इस पर एक विशेष अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, जिससे इस मुद्रिका में स्थित प्रत्येक ग्रह अपने पूर्ण प्रभाव के साथ प्राण-प्रतिष्ठित रहते हैं।

अपने पूजा स्थान में किसी पात्र में इस दुर्लभ मुद्रिका को स्थापित कर जल से स्नान करा कर पोंछ कर कुंकुम, केसर से तिलक करें, सम्भव हो तो पुष्प चढ़ायें और सामने अगरबत्ती प्रज्वलित करें, इसके बाद निम्न ग्रह कवच स्तोत्र का मात्र पांच बार पाठ करें।

ऐसा करने पर वह दिन तो मंगलमय होता ही है, सभी प्रकार के ग्रह दोष समाप्त हो कर जीवन में निरन्तर उन्नति के द्वार खुलते रहते हैं

कवच के इस पाठ से शत्रु समाप्त होते हैं, रोग दूर हो जाते हैं और व्यापार, धन आदि में निरन्तर वृद्धि होती रहती है, इसके अलावा आकस्मिक संकट से तो निश्चय ही मुक्ति मिलती है।

विनियोग

ॐ अस्य जगन्मंगल-कारक ग्रह कवचस्य श्री भैरव ऋषि:।
अनुष्टुप्छन्द:। श्री सूर्यादि ग्रहा देवता।
सर्व कामार्थ संसिद्धये जपे विनियोग:।।

पार्वत्युवाच

श्री शान! सर्व शास्त्रज्ञ देवताधीश्वर प्रभो।
अक्षय कवचं दिव्यं ग्रहादि-देवतं विभो।
पुरा संसूचितं गुह्यं सुभवताक्षय-कारकम्।
कृपामयि तवास्ते चेत् कथय श्री महेश्वर।

शिव उवाच

श्रृणु देवी प्रियतमे! कवचं देव दुर्लभम्।
यद्घृत्वा देवता: सर्वे अमरा: स्युर्वराननें।
तव प्रीति-वशात्वच्चि न देयं यस्य कस्यचित्।।

मूल ग्रह कवच स्तोत्र

ॐ ह्रां ह्रीं स: मे शिर: पातु श्री सूर्य ग्रहपति:।
ॐ धौं सौं औं मे मुखं पातु श्री चन्द्रो ग्रह राजक:।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां स: करो पातु ग्रह-सेनापति: कुज:।
पायादथ ॐ ह्रौं ह्रां स: पादोज्ञो नृपबालक:।
ॐ त्रौं त्रौं त्रौं स: कटिं पातु मायादमर पूजित:।
ॐ ह्रौं ह्रीं सौ: दैत्य पूज्यो हृदयं परिरक्षतु।
ॐ शौं शौं स: पातु नाभिं मे ग्रह-प्रेष्यं शनैश्चर:।
ॐ छौं छां छौं स: कण्ठदेशं श्री राहुदेव मर्दक।
ॐ फौं फां फौं स: शिखी पातु सर्वांगमभितोऽवतु।
ग्रहाश्चैते भोग-देहा नित्यास्तु स्फुटित ग्रहा:।
एतदशांश-सम्भूता: पान्तु नित्यं तु दुर्जनात्।
अक्षयं कवचं पुण्यं सूर्यादि ग्रह-देवतम् पठेद्
वा पाठयेद् वापि धारयेद् यो जन: शुचि।
स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभां त्रिदशेस्तुयाम्।
तव स्नेह-वशादुक्तं जगन्मंगल कारकम् ग्रह-
यन्त्रान्वितं कृत्वाभीष्टमक्षायमाप्नुयात्।।

पाठ समाप्त होने पर वहीं पूजा स्थान में उस मुद्रिका को धारण कर लें। ग्रहों की गति और जीवन की गति में अद्भुत साम्य है, पल-पल के जीवन पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है और नव ग्रह कवच स्तोत्र सभी ग्रहों की बाधाएं दूर करने का सरलतम उपाय है। सम्भव हो तो प्रतिदिन या प्रत्येक रविवार को एक पाठ कर लें।

नवग्रह कवच यंत्र- 900/-

खजूर

खजूर सिन्ध में और दक्षिण पंजाब में ज्यादा पैदा होता है। पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ्रिका, स्पेन, इटली, ग्रीक और इसके आसपास के स्थानों में उत्पन्न होता है।

खजूर का वृक्ष बहुत ऊँचा और भूरापन लिये होता है, जिसके पत्ते खजूरी के पत्ते से थोड़े छोटे होते हैं। खजूर पकने पर कुछ लाल या हल्के बादामी रंग का हो जाता है और मीठा रहता है। इसका बीज लम्बा और गोलीय आकार में होता है जिसके मध्य में एक लाईन सी होती है।

भाषा भेद से नाम–हि-खजि, खजूर, खारक, सं.-मुदारिका, दीप्य, म.-खजूर, गु.-खारेक, खजूर, ब.-खजूर, ते.-खर्जरम, उर्दू-खुरमा, पं.-खाजि, खजूर।

गुण, दोष और प्रभाव–आयुर्वेदिक मत से इसका फल मीठा और शीतल रहता है। यह पौष्टिक, मोटापा बढाने वाला और कामोद्दीपक के साथ विषहर भी होता है। यह कुष्ठ, प्यास, श्वास, वायु नलियों का प्रदाह, थकान, क्षय, उदर रोग, ज्वर, वमन, मतिष्क विकार और अचेतन अवस्था में लाभकारी होता है। यह वायु नलियों के प्रदाह में और वात में उपयोगी एवं पितकारक होती है।

उपयोग–

- सूखी खाँसी और दमा में खजूर लाभ प्रदान करती है। यह सूजन भी दूर करती है।
- बच्चों में–कमजोर बच्चों को खजूर और शहद मिलाकर खिलाना बहुत लाभकारी होता है। जिन बच्चों में रात को बिस्तर गीला करने की आदत होती है, उन बच्चों को दूध के साथ खजूर खाने के लिए दें। इसके अलावा बच्चों की दस्त की समस्या में भी खजूर लाभकारी होता है। बच्चों के दांत निकलते समय उन्हें बार-बार दस्त की समस्या हो जाती है। ऐसे में खजूर के साथ शहद को मिलाकर एक-एक चम्मच दिन में 2-3 बार चटाने से लाभ होता है।
- कब्ज की समस्या में–खजूर में प्रोटीन, फाइबर और पोषण बहुत अधिक मात्रा में होता है। जिससे कब्ज की समस्या दूर हो जाती है। जिन लोगों को कब्ज की परेशानी रहती है, उनके लिए खजूर बहुत लाभकारी है। इसका सेवन करने के लिए रात को सोने से पहले कुछ खजूर पानी भिगो दें और सुबह उसे खा लें।
- दांतों में–खजूर में मौजूद कैल्शियम दांतों की कमजोरी को दूर करता है। इसके अलावा खजूर में पाया जाने वाला फ्लोरिन नामक मिनरल दांतों की दर्द की समस्या को दूर करने में सहायता करता है। दांतों में दर्द और सड़न दूर करने के लिए दूध के साथ खजूर खाएं।
- सर्दियों में अति उत्तम खजूर –सर्दियों में सेहत बनाने के लिए खजूर से बेहतर और कुछ भी नहीं है। इसको खाने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है। जिससे आप सर्दियों में होने वाली सर्दी-जुकाम जैसी समस्याओं से बचे रहते हैं। इसके अलावा यह श्वास रोग में भी बहुत फायदा करती है। अगर आपको जुकाम की समस्या लगातार बनी रहती है तो एक गिलास दूध में 5-6 खजूर डालें, इसी में पांच दाने काली मिर्च, एक इलायची और एक चम्मच शुद्ध देशी घी डालकर अच्छी तरह उबाल लें। इसे रात में सोने से पहले पीने से सर्दी-

जुकाम में आराम मिलता है। श्वास रोग में सोंठ के चूर्ण में खजूर मिलाकर पानी के साथ लेना हितकर होता है।

- ❒ ब्लड प्रेशर–खजूर के सेवन से कुछ ही दिनों में निम्न ब्लड प्रेशर की समस्या से छुटकारा मिल जाता है। निम्न ब्लडप्रेशर की समस्या होने पर 3-4 खजूर गर्म पानी में धोकर गुठली निकाल दें और इसे गाय के दूध के साथ उबाल लें। इस उबले हुए दूध को सुबह-शाम पीएं, फायदा होगा।
- ❒ ऑस्टियोपोरोसिस या हड्डियों में दर्द की समस्या कैल्शियम की कमी के कारण होती है और यह समस्या आमतौर पर महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद होती है। अगर आप भी इस समस्या से पीड़ित हैं तो आपके लिए खजूर बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है क्योंकि खजूर कैल्शियम से भरपूर होता है। नियमित रूप से कुछ खजूर खाने से आपकी कैल्शियम की कमी पूरी हो जाती है।
- ❒ मधुमेह में–मधुमेह और ऐसे रोग जिनमें मीठे पदार्थ खाना हानिकारक होता है और रोगी मीठा खाने की इच्छा व्यक्त करता है। वहाँ खजूर का सेवन कर सकते हैं। खजूर मीठा होता है।

वात नाशक तेल

शीतकाल में वात कूपित होने पर शरीर में कहीं भी दर्द हो सकता है क्योंकि अधिकतर शरीर में दर्द होने का कारण वात का प्रकोप ही होता है। वातजन्य दर्द को दूर करने के लिए एक उत्तम प्रयोग प्रस्तुत है।

सरसों का तेल 250 मि.ली. और लहसुन की छिली हुई कलियां 250 ग्राम। तेल को खूब अच्छा गर्म करें। जब तेल कड़कड़ाने लगे तब इसमें लहसुन की कलियां डाल दें और आँच कम करके यानी मन्दी आँच पर तब तक पकाएं जब तक लहसुन की कलियाँ काली न पड़ जाएं। इसके बाद इसे उतार कर ठण्डा कर लें और निचोड़ छान कर कत्थई रंग की शीशी में भर कर रखें। इस शीशी को 7 दिन तक दिन भर धूप में रखें और रात को कमरे में रखें। इस बात का ध्यान रखें कि इस शीशी को पृथ्वी का स्पर्श न होने दें और 7 दिन तक दिन में और रात में लकड़ी के पटिये पर ही रखें। जब शीशी को स्पर्श करें तब नंगे पांव न रहें बल्कि जूता या चप्पल पहने रहें ताकि शीशी को आर्थिंग न मिले। 7 दिन बाद इस तेल को दर्द वाले अंग पर लगाकर, हल्की-हल्की मालिश करें, जोर न लगाएं। यह प्रयोग लाभ न होने तक करते रहें। यदि कान में दर्द हो तो 2-2 बूंद तेल कान में टपकाने से आराम मिलता है।

- ❒ दमा, खाँसी, क्षय रोग–सूखी खाँसी में खजूर लाभ करती है। यह सूजन दूर करती है साथ-साथ खजूर क्षय-रोगियों के लिए लाभदायक है।
- ❒ गर्भावस्था में–गर्भावस्था में अक्सर खून की कमी हो जाती है। इस कमी को पूरा करने में खजूर आपकी मदद कर सकता है। खजूर को खाने से हिमोग्लोबिन बढ जाता है। गर्भवती और उसके शिशु के लिए आयरन, कैल्शियम, मैग्निशियम, फास्फोरस और सिलीनियम से भरा खजूर खाना बहुत जरूरी है। इसके अलावा खजूर गर्भवती महिलाओं में दूध की मात्रा में वृद्धि करता है और अधिक ऊर्जा प्रदान करता है।
- ❒ 6 खजूर 500 ग्राम दूध में उबालकर सर्दियों में सेवन करें। यह बहुत ताकत प्रदान करती है।
- ❒ रक्त की कमी में–जिन लोगों में रक्त की कमी के कारण हृदय की धड़कन और एकाग्रता की कमी होती है, उन लोगों के लिए खजूर बहुत लाभकारी है। इसके सेवन से रक्त बढता है और मस्तिष्क और हृदय की मसल्स को ताकत मिलती है। रक्त की कमी होने पर रात को खजूर भिगोकर सुबह दूध के साथ खाएं।
- ❒ आंतों को बल–खजूर के सेवन से आंतों को बल और शरीर को स्फूर्ति मिलती है। खजूर आंतों के हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करता है। इसके अलावा खजूर के विशिष्ट तत्व ऐसे जीवाणुओं को जन्म देते हैं जो आंतों को विशेष शक्तिशाली तथा अधिक सक्रिय बनाते हैं। यदि आपको आंत विकार है तो आपको खजूर खाना चाहिए क्योंकि इसमें कैल्शियम, विटामिन बी-एस, फाइबर, विटामिन बी-3, पौटेशियम और कॉपर होता है जो कि इस समस्या को दूर करता है।

(विशेष–प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह ले लें।)

सूर्य षष्ठी दिवस

चक्षुष्मति विद्या साधना

व्यक्ति के चेहरे पर विधाता ने कदाचित् सर्वाधिक सुंदर वस्तु उसकी दो आँखें बनाई हैं।

दृष्टि अपने आप में जीवन का पर्याय है इसी से हमारे ऋषियों ने दृष्टि को जीवन एवं अंधता को मृत्यु की संज्ञा दी है।

दृष्टि दोष के पीछे मुख्य रूप से कारण, व्यक्ति का सूर्य ग्रह या उसके शरीर में सूर्य तत्त्व निर्बल होना होता है। इस सम्पूर्ण सृष्टि में ही सूर्य तत्त्व ही है जो गतिशीलता का आधार है इसी कारणवश सूर्योपासना द्वारा व्यक्ति का मंत्रात्मक उपचार किया जाये तो अधिक फलप्रद होता है।

जब व्यक्ति का नेत्र-रोग सभी उपचारों के बाद भी न दूर हो तब उसे निश्चित मानना चाहिए कि उसका रोग पूर्वजन्म कृत दोष के कारण है एवं इस मंत्रात्मक पद्धति से नेत्र दोषों का भी परिहार संभव होता है।

साधना समय

सूर्य षष्ठी 20.11.20 से या किसी भी रविवार से इस स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ करना चाहिए। इससे पूर्व संक्षिप्त रूप से सूर्य पूजन अवश्य करना चाहिए कि जिसमें गुरुध्यान, पूजन कर सूर्य देवता से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उसके नेत्र संबंधी सभी कष्टों का निवारण कर उसे तेजस्विता दें। आगे दिये गये मंत्र का जप करने के पूर्व गले में 'चक्षुष्मती यंत्र' धारण कर एक कांसे की थाली में जल रखें तथा सूर्य की ओर मुंह किये रहें तथा इस प्रयोग में स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र ही धारण करें। सूर्योदय का काल ऐसा काल होता है। जब व्यक्ति सूर्य की तेजस्विता को ग्रहण कर सकता है।

चक्षुष्मती विद्या

ॐ चक्षुष्मती तेजः स्थिरोभव। माम् पाहि पाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमय मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय यथाऽहमंधो न स्यां कल्पय कल्पय, कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि यानि पूर्व जन्मोपार्जितानिचक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ॐ नमो भगवते श्री सूर्योयक्षितेजसे नमः। ॐ खेचराय नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ असतो मा सद्गमय। ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय। ॐ मृत्योर्मामृतं गमय। उष्णो भगवानछुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरः प्रतिरूपः।

अर्थात्–हे चक्षु के अभिमानी सूर्य देव। आप चक्षु के तेज के रूप में स्थिर हो जाएं। मेरी रक्षा करें, रक्षा करें। मेरी आँख के रोगों का शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना स्वर्ण जैसा तेज दिखला दें, दिखला दें जिससे अंधा न होऊं, कृपया वैसा ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन शक्ति का अवरोध करने वाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़ से उखाड़ दें। 'ॐ सच्चिदानंद स्वरूप' नेत्रों को तेज प्रदान करने वाले दिव्य स्वरूप भगवान भास्कर को नमस्कार। ॐ करुणा कर अमृत स्वरूप को नमस्कार। ॐ भगवान सूर्य को नमस्कार। ॐ नेत्रों के प्रकाश भगवान सूर्य देव को नमस्कार। ॐ आकाश विहारी को नमस्कार। परम श्रेष्ठ स्वरूप को नमस्कार। ॐ सबमें क्रिया शक्ति उत्पन्न करने वाले रजोगुण रूप भगवान सूर्य को नमस्कार। हे भगवान, आप मुझको असत् से सत् की ओर ले चलिए, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलिए, मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिए। ऊष्ण स्वरूप भगवान सूर्य शुचि रूप हैं। हंस स्वरूप भगवान सूर्य सुचि तथा अप्रतिरूप हैं। उनके तेजोमय स्वरूप की समता करने वाला कोई भी नहीं है।

यह प्रयोग प्रारम्भ करके नित्य 31 पाठ करें और चौथे रविवार को 51 पाठ करने के बाद किसी ब्राह्मण को भोजन करायें। इसके बाद फिर नित्य 1 पाठ करते रहें। जो भी साधक इस चक्षुष्मति विद्या का नित्य पाठ करता है उसे नेत्र संबंधी कोई रोग नहीं होता। उसके कुल में कोई अंधा नहीं होता।

यदि कोई गंभीर रोगी स्वयं पाठ करने में अक्षम हो तो उसके नाम का संकल्प कर कोई ब्राह्मण भी उसका पाठ कर सकता है। संस्कृत उच्चारण में कठिनाई अनुभव करने वाले पाठक हिन्दी अनुवाद का उच्चारण कर समान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। एक उल्लेखनीय बात यह है कि साधक अथवा रोगी रविवार के दिन बिना नमक का भोजन एक समय ही करें। पाठ समाप्त होने के बाद साधक कांसे की थाली में रखे जल को अपने दोनों नेत्रों को अधखुला रखकर उनमें छिड़कें और पांच मिनट तक आँखें बंद कर बैठा रहे तदुपरान्त ही दैनिक कार्य आरंभ करें। स्त्रियाँ रजस्वला काल में इसका पाठ न करें। पूर्ण शुद्धि छठे दिन से होती है।

साधना सामग्री- 300/-

योगासन कीजिए

सर्वांगासन

दुनिया में सब चीजें आदमी को मिलती हैं, विद्या मिलती है, धन मिलता है, स्वास्थ्य मिलता है, किन्तु जब तक उसका मन शांत न हो, जब तक उसके हृदय में आनन्द न हो, तब तक दुनिया की कोई भी चीज उसको आनन्द देने वाली नहीं हो सकती। सबसे आवश्यक चीज है - मन की एकाग्रता और मन की शांति और इस विद्या को कहते हैं–योग :

जैसा कि नाम से ही प्रतीत हो रहा है इस आसन के द्वारा शरीर के समस्त अंगों एवं अवयवों को लाभ प्राप्त होता है। हठयोग में नाना प्रकार के आसनों का वर्णन है एवं एक सामान्य गृहस्थ के लिए सभी आसनों का प्रतिदिन अभ्यास करना संभव नहीं है। अत: कुछ आसन इस प्रकार से विकसित किये गये कि उनमें अधिकांशत: आसनों का सम्मिश्रण हो जाये एवं उन आसनों को साध लेने से शरीर को वो सब लाभ एवं शक्ति प्राप्त हो जाए जो अन्य आसनों से प्राप्त होती है। सर्वांगासन उन कुछ गिने-चुने आसनों की श्रेणी में आता है जिसके द्वारा प्राय: शरीर के सभी अंगों का व्यायाम हो जाता है।

सर्वांगासन एक ऐसा आसन है जिसके द्वारा शरीर में मौजूद विभिन्न अंत:स्त्रावी ग्रंथियों को क्रियाशील बनाया जा सकता है। सारांश में प्रत्येक साधक को इस आसन का अभ्यास करना चाहिए।

विधि : सर्वप्रथम पीठ के बल जमीन पर दोनों टांगों को सटाते हुए सीधे लेट जाइये, फिर कमर तक के हिस्से को ऊपर उठायें। इसके पश्चात् दोनों हाथों को नितम्बों के पास सहारा देते हुए कंधे से नीचे के समस्त शरीर को भूमि के लम्बवत स्थापित कीजिए और फिर पूरी तरह श्वास छोड़ते हुए पाँवों को घुटनों से सीधा कीजिए एवं समस्त शरीर को ऊपर की तरफ उठाते हुए बिल्कुल एकदम सीध में स्थापित कर दीजिए।

इस स्थिति में केवल सिर और गर्दन का पिछला हिस्सा, कंधे, कोहनियाँ एवं बाहों का पिछला हिस्सा ही भूमि पर टिका हुआ है। सर्वांगासन की इस स्थिति में दोनों हाथ रीढ़ की हड्डी के बगल में ही रखने चाहिए एवं श्वास-प्रश्वास सामान्य तरीके से चलने दें।

लाभ - इससे मस्तिष्क और याद्दाश्त को बल मिलता है, चेहरा तेजस्वी होता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। पौरुष ग्रंथि और थायराइड ग्रंथि पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्वप्नदोष, धातु स्राव, शीघ्र पतन आदि यौन विकार रोग दूर रहते हैं। मन्दाग्नि, अजीर्ण, कब्ज, बवासीर के रोगियों को लाभ होता है। सिर के बाद घने व काले बने रहते हैं। महिलाओं के मासिक धर्म संबंधी व्याधियाँ दूर होती हैं। गर्भवती महिलाएं यह आसन न करें। सिरदर्द, नेत्र रोग, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग वाले यह आसन किसी योगाचार्य की सलाह और अनुमति लेकर ही करें।
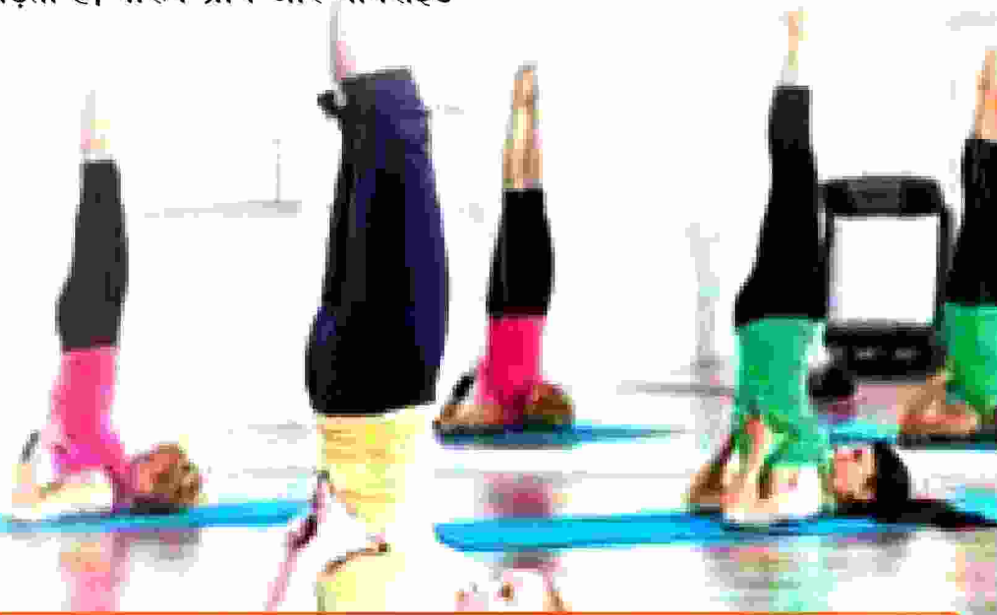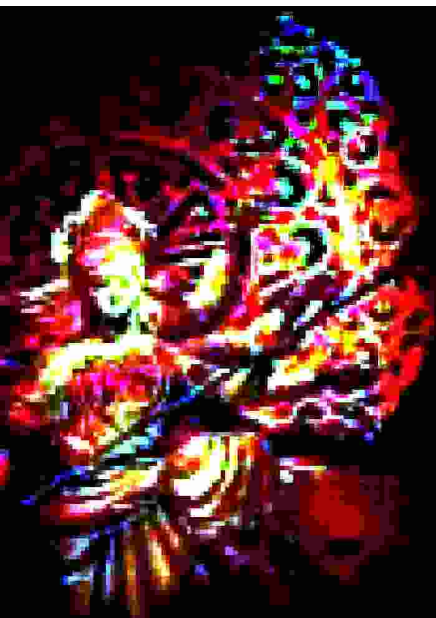
ABHIST SIDHI DIVAS 11.12.2020

OR

Any Monday

Wish Away All You Can !

Manokamna Poorti Banneshi Sadhana

It is said in the ancient scriptures— *Ichhaa Viheen Pashu*

A human without any wishes is like an animal. Only animals don't wish.

But it can be very painful and unfulfilling if a wish remains unrealised. The wish keeps hanuting one's mind all through life. That is why our Rishis and Yogis devised powerful Sadhanas that could help one realise one's wishes.

Of course the wish should be good. It should not aim at harming anyone. I this is so it can be easily realised through the following Sadhana. Otherwise one should not even hope of attaining divine help. The gods, goddesses and their powers cannot ever be used for destructive purposes. Always remember that!

The Goddess Banneshi is a kind deity who fulfills all the right wishes of her Sadhaks. The wish could be for wealth, success in one's business, success in romance or relating to any other aspect of life. If one tries this ritual with full faith and devotion then sure enough one's wish is realised very soon. The divine energy generated in teh Sadhak as result of the Sadhana and as a result of the blessings of the benign Goddess help him overcome hurdles that lie in teh path leading to the fulfilment of his desire.

This amazing Sadhana can be started on any Monday and should be done early in the morning in Brahm Muhurat (4 am to 6 am). Have a bath and wear pure white clothes and sit facing the South on a red mat. Cover a wooden seat with a red cloth and on it in a copper plate place a *Banneshi Yantra*. Also place a picture of Sadgurudev. Offer vermilion, rice grains, flower petals on the picture and the Yantra. The light a ghee lamp.

Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra.

Before the Yantra make three mounds of rice grains and place a *Rudraksh (total three)* on each of them.

Take water in the right palm and then speak out thus — I (speak your name) am performing this Sadhana for the fulfilment of these three wishes (speak out the three wishes for the fulfillment of which your are performing the Sadhana). May Goddess Banneshi and Sadgurudev Nikhil bestow success upon me.

Then let the water flow to the floor. Also write your three wishes on a piece of paper and place it under the picture of Sadgurudev.

Thereafter meditating on the divine form of Goddess Banneshi chant the following Mantra.

Udhyatbhaas-vatsannnibhaa Raktavastraa
Naanaa-ratnaalankrit-aangi Vahanti.
Hasteih Paashan Chaankusham Chaapbaannou
Baanneshi Nah Kaampoortim Vidhattaam.

Next with a *red Hakeek rosary* chant just three rounds of the following Mantra.

Draam Dreem Kleem Bloom Saha.

Do this daily for seven days. After the completion of the Sadhana on the eighth day tie all the articles in a red cloth and drop all articles in a river or pond.

The Mantra of Sadhana appears strange but it is very powerful and dynamic and never fails to produce the desired result if tried with full faith and devotion.

Sadhana Articles - 450/-

Any Monday

Catch Signals of Soul

Realisation of the soul or linking oneself to it is the greatest achievement of human life. There are so many Sadhanas and rituals and meditations for this purpose for the simple reason that once a person is able to reach to his soul then his life could change for the better.

Just imagine you could know what is about to happen in the future or that there is some danger lurking around some corner. If one could know all this and much more then life could become so easy and fruitful. Then one could make amazing and very quick progress, for one would then be able to avoid dangers, problems and unfavourable circumstances and make the best use of the good opportunities.

This is not mere fantasy. Rather it could turn out to be real if somehow one could make a contact with the soul that resides within. If this were to happen one could unfold the secrets of the future beforehand. One could avoid future accidents and mishaps by taking the appropriate precautions. One could know if some new acquaintance is reliable or not. One could easily realise whether the new friend is there just for his selfishness or he is true. One could foresee whether a business or job would be to one's benefit or not.

Thus one could receive thousands of signals related to the future regarding a variety of issues. The lord has made this world very mysterious. But what we do not know is that to every secret there is a key. And we also do know that the key lies in one's soul.

But without the energy of Sadhana the voice of the soul gets stifled. Then the mind starts to play tricks and one tends to ignore the signals of the soul. The false dazzle of the outer world so blinds the mind that it is unable to see the signals of the soul that it constantly keeps receiving.

You too could activate the voice of the soul. You too could link yourself to the soul. You too can seek true guidance from the soul. And through the signals thus received you could change your luck for the better and attain to totality.

This Sadhana should be tried on a Monday early in the morning. Have a bath and wear fresh white clothes. Cover a wooden seat with white cloth. Sit on a white mat facing North. On white flowers place a Aatma Cheitanya Yantra.

On all four corners of the Yantra place a betel nut each smeared with vermilion. Make a circle on the Yantra with turmeric powder and then offer vermilion and rice grains on the Yantra.

Then join both palms and chant following prayer meditating on the divine form of the Guru.

Guru Brahma Guru Vishnu Guru Devo Maheshwarah Guruh
Saakshaat par-Brahm Tasmei Shree Gurave Namaha.

Then with a Praannash-chetana rosary chant eleven rounds of the following Mantra.

Om Ayeim Gloum Ayeim Tthah Tthah Hum Phat

Do this for eleven days. If you have some question in mind ask it and within the Sadhana period you shall have the answer. The answer can come as an intuition, dream or any other medium. One should try with full faith and without doubts. After Sadhana drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana articles - 450/--
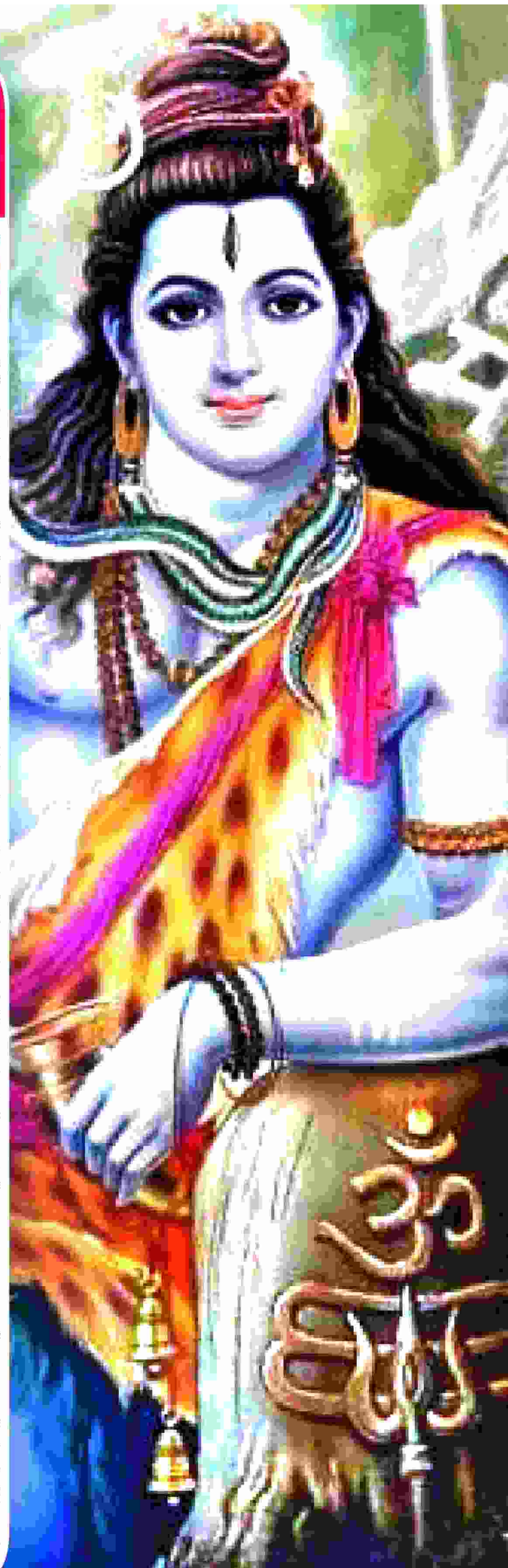
शक्तिपात युक्त दीक्षा

श्री विद्या दीक्षा

हमारे ऋषि मुनियों ने लक्ष्मी को प्राप्त करने और अपने घर में चिर स्थायियत्व देने के लिए कई साधनाएं स्पष्ट की एवं सभी प्रकार से श्री यंत्र को श्रेष्ठ माना। उन्होंने कहा कि तीनों लोकों में लक्ष्मी को पूर्ण रूप से स्थायित्व देने के लिए श्री यंत्र के समान यंत्र नहीं है। यह ईश्वर का साकार रूप है। और श्री विद्या दीक्षा का अर्थ है कि साधक के शरीर को ही श्री यंत्र बना दिया जाए यही है श्री विद्या दीक्षा का सार। 'श्री' का अर्थ है - जीवन की पूर्णता, यश, वैभव, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य और यही सब हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। दरिद्रता युक्त जीवन को 'श्री' नहीं कहते। वह जीवन जिसकी गतिविधियों के संचालक हम स्वयं हो, हमारा नियंत्रण हो सके वह है श्री युक्त जीवन और यह प्राप्त हो सकता है जब साधक अपने गुरु से श्री विद्या दीक्षा प्राप्त करे।

योजना केवल 14.11.20 और 30.11.20 दो दिवसों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 66 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।
परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/- → शिव यंत्र व माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/- → लक्ष्मी यंत्र व माला 405 + 45 (डाक खर्च) = 450

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

प्रकृति रचित सिद्धि फल

- सिद्धि फल एक ऐसी अनूठी रचना है जो स्वयं प्रकृति के द्वारा ही रचित है और अपने गुणों के कारण वनस्पति होते हुए भी सिद्धि फल के नाम से पहचानी गई। साधक हो या गृहस्थ, तांत्रिक हो या योगी सभी इसके अचूक लाभ प्राप्त करके इसे साधना की आवश्यक सामग्री मानने को विवश हुए ही हैं।
- जीवन में तीन प्रकार के दोष माने गए हैं जो साधक की सफलता में बाधा बनते हैं-वाक् दोष, नेत्र दोष, चिन्तन दोष। इन दोषों को समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक साधना से पूर्व तीन सिद्धि फल स्थापित कर 'वं' बीज मंत्र की तीन माला मंत्र जप सम्पन्न कर लें तथा साधना की समाप्ति पर उन्हें विसर्जित कर दें।
- किसी भी साधना में यदि यंत्र या देवता की मूर्ति के समक्ष, 'लं, हं, रं, यं एवं वं' बीज मंत्र का उच्चारण कर पांच सिद्धि फल चढ़ा दिया जाय तो यह पूर्ण पंचोपचार पूजन माना गया है। यदि सामान्य पंचोपचार पूजन के साथ-साथ पांच सिद्धि फल चढ़ाए जाएं श्रेष्ठतम माना गया है।
- दो सिद्धि फलों को लेकर इन्हें एक सफेद रेशम की थैली में गूंथ कर रखना इच्छित व्यक्ति से प्रेम में सफलता का पूर्ण परिचायक है, फिर यह भी आवश्यक नहीं कि व्यक्ति दूसरे पक्ष के लिए कोई वशीकरण प्रयोग सम्पन्न करें। इस प्रयोग को विवाहित स्त्री, पुरुष भी अपना सकते हैं और अपने जीवन को निरन्तर मधुर बनाए रख सकते हैं।
- व्यापारिक वर्ग अपने व्यापार स्थल पर जहां लघु नारियल, कुबेर यंत्र अथवा लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति का स्थापन करते हैं वहीं ऐसे पूजन अथवा यंत्र के चारों ओर आठ सिद्धि फलों की स्थापना अष्ट लक्ष्मी की प्रतीक मानी गई है।
- गुरु साधना में सिद्धि फल की उपस्थिति एक प्रकार से अनिवार्य मानी गई है। साधना से पूर्व पांच चावल की ढेरियों पर पांच सिद्धि फलों की स्थापना गुरु-परम्परा की उपस्थिति की प्रतीक मानी गई है।
- तांत्रोक्त गुरु पूजन में एक सिद्धि फल प्रत्येक बार गुरु यंत्र, चित्र पर अर्पित करना वरदायक माना गया है।
- जिसके घर में सिद्धिफल स्थापित होता है उसके मन में मलिनता व वैमनस्य भी समाप्त होती ही है।
- जिस प्रकार तांत्रोक्त नारियल की उपस्थिति घर के दूषित प्रभावों को समाप्त करने में सक्षम है वहीं सिद्धि फलों की उपस्थिति लक्ष्मी की प्रतीक है। साधक के घर में कुल जितने दरवाजे हों उतने सिद्धि फलों को प्राप्त कर घर के मुख्य दरवाजे पर तांत्रोक्त नारियल के साथ स्थापित करने से लक्ष्मी का चिरवास होता है।
- जहां मन में खिन्नता रहती हो या मानसिक उलझन के कारण चित्त में शांति न रहती हो तो एक सिद्धि फल को कपड़े में गूंथ कर गले में धरण कर लेना चाहिए।
- सिद्धि फल प्रकृति का इसी कारणवश वरदान कहा गया है, जिसके औषधीय गुणें की चर्चा हम भविष्य में करेंगे। इनका किसी भी प्रकार से घर में स्थापन सौभाग्यदासयक ही होता है।

प्रति सिद्ध फल 31/-

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368
Printing Date : 15-16 October, 2020
Posting Date : 21-22 October, 2020
Posting Office At Jodhpur RMS
RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021
माह : नवम्बर एवं दिसम्बर में दीक्षा के
लिए निर्धारित विशेष दिवस
पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर
साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित
दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
21-22 नवम्बर
19-20 दिसम्बर
स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
07-08 नवम्बर
12-13 दिसम्बर
प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002